विचार दृष्टि

लौह पुरुष सरदार पटेल की 133 वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

वर्ष 11 | जनवरी-मार्च, 2009 | अंक-38

राष्ट्रीय विचार मंच
2ND ANNUAL CONFERENCE OF
RASHTRIYA VICHAR MANCH
AND VICHAR DRISTI
6th SESSION
31TH OCTOBER
12.00 PM to 1.30 PM
VENUE:- RAJENDRA BHAWAN

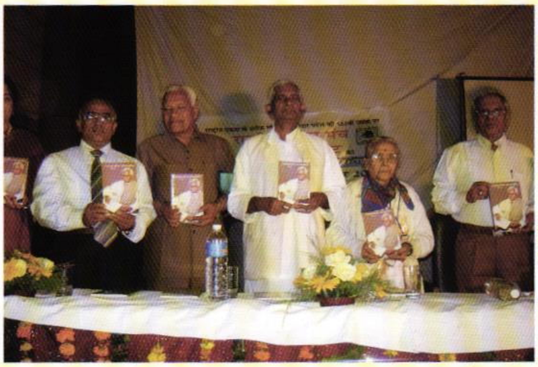

विचार दृष्टि

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी

वर्ष - 11 जनवरी-मार्च, 2009 अंक - 38

संपादकीय सलाहकार : नंद लाल

संपादक-प्रकाशक : सिद्धेश्वर 9873434086

उप संपादक : डॉ॰ शाहिद जमील 9430559161

सहा॰ संपादक : उपेंद्र नाथ 9868105864

सहा॰ संपादक : उदय कुमार 'राज़' 9313045675

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन 9811281443

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू0-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली- 92

☎ : (011) 22530652/ 22059410.

फैक्स : (011) 22530652 E-mail : vichardrishtisj@gmail.com drshahidjamil@rediffmail.com

पटना कार्यालय

○'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना- 800001 ☎ : 0612-2510519

○ आवास सं॰- सी॰/६, पथ सं- 5, आर॰ ब्लॉक, पटना- 800001 ☎ : 0612-2226905

ब्यूरो प्रमुख

कोलकाता : जितेन्द्र धीर ☎ : 24692624
चेन्नई : डॉ॰ मधु धवन ☎ : 26262778
मुंबई : राजम नटराजम पिल्लै ☎ : 09820229565
तिरूवनंतपुरम : डॉ॰ पी॰ लता ☎ : 2332468
हैदराबाद : डॉ॰ ऋषभदेव शर्मा 23391190
जयपुर : डॉ॰ नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ☎ : 2225676
अहमदाबाद : रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र'
देहरादून : बडोनी

प्रतिनिधि

दिल्ली : प्रो॰ पी॰ के॰ झा 'प्रेम'
एन॰ सी॰ आर॰ : प्रो॰ मनोज कुमार, संजीव कुमार
हैदराबाद : चंद्रमौलेश्वर प्रसाद
जयपुर : कृष्णवीर द्रोण
हिसार : डॉ॰ नामनिवास 'मानव'
देहरादून : डॉ॰ राज नारायण राय
उत्तरी बिहार : नरेन्द्र मिश्र
वित्तीय प्रबंधक : अरविंद कुमार उर्फ पप्पू

शब्द संयोजन : गंगा यमुना प्रकाशन, पटना-1
आवरण : डॉ॰ शाहिद जमील
मुद्रक : प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड एक्स- 47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य

एक प्रति	:	25 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
द्विवार्षिक	:	200 रुपये
आजीवन सदस्य	:	1000 रुपये
विदेश में एक प्रति	:	US $ 05
वार्षिक	:	US $ 20
आजीवन		US $ 250

एक नज़र में रचना और रचनाकार

कसौटी

पाठकीय पन्ना ... 02

संपादकीय

आतंकवाद के मूकदर्शक ... 05
सिद्धेश्वर

विचार-प्रवाह

राष्ट्रीय एकता का प्रश्न ... 08
कुमार रवीन्द्र

साहित्य

कहानी

छोटकी भौजी ... 11
कृष्ण कुमार राय

दस्तो बाजू ... 16
डॉ॰ शाहिद जमील

अपने आप से ... 21
बंसी खूबचंदाणी (विक्रम सहानी)

काव्य-कुंज ... 23
अजमल सुलतानपुरी, शमीम क़ासमी, सत्यपाल सिंह चौहान, इफ़्तख़ार राग़िब, डॉ॰ राम निवास 'मानव', मो॰ सुलेमान, यामुन प्र॰ यादव

अलेख

संस्कृत साहितत्य अभिव्यक्ति है हमारी सांस्कृतिक चेतना की
सिद्धेश्वर ... 25

हिंदी नाटको में पुरूष द्वारा आरोपित नारी मनोविज्ञान
डॉ परमलाल गुप्ता ... 27

समीक्षा

पत्रकारिता पर उच्च कोटि के आलेखों से भरपूर है विशेषांक
उर्मिला कौल ... 29

साहित्य

भाषा वैज्ञानिक से 'अचानक की एक मुलाकात'
चंद्र मौलेश्वर प्रसाद ... 31

'अतीत' को झाँकने का प्रयास
प्रो0 दीनानाथ 'शरण' ... 33

संस्मरण

जिन्होंने राजनीति में शुचिता और पारदर्शिता लाने की कोशिश की
सिद्धेश्वर ... 34

आत्मानुशासन के लिए नैतिक शिक्षा की निवार्यता
आचार्य रामविलास मेहता ... 36

स्टिंग ऑपरेशन के सामाजिक सरोकार
रधुवीर सिंह पालावत ... 37

गतिविधियाँ

लौह पुरूष सरदार पटेल की 133 वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न
डॉ0 शाहिद जमील ... 38

सदियों से संस्कृत पर टिकी देश की एकता आज उपेक्षित
प्रो0 अरूण कुमार ... 47

राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार के तत्वधान में आयोजित लोकार्पण-सह विचार गोष्ठी संपन्न ... 49

शौक-सभा का आयोजन ... 50

राष्ट्र

चंद्रयान ने बढ़ाया देशाभिमान
सिद्धेश्वर ... 51

सम्मान

बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार 'पॉलीटिशियन ऑफ द ईयर' से सम्मानित ... 52

बिहार से अब निरापद शामें सुहानी और रातें सयानी ... 53

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ॰ श्यामसिंह 'शशि' ❑ डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर ❑ प्रो॰ धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❑ डॉ0 बालशौरि रेड्डी ❑ डॉ0 अहिल्या मिश्र ❑ बी0एस0 शांताबाई ❑ डॉ0 देवेन्द्र आय

पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं
रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

प्रिय पाठक एवं लेखक,

'पाठकीय प्रतिक्रिया' वास्तव में पत्रिका परिवार के लिए एक दर्पण-सा होता है। यही कारण है कि हमें प्रकाशित रचनाओं और समग्र रूप में प्रस्तुति पक्ष पर आपके बेबाक विचारों / उचित प्रस्तावों का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। प्राप्त पाठकीय प्रतिक्रिया एवं प्रस्तावों को हम न केवल प्रकाशित करते, बल्कि उनपर विचार भी करते हैं। 'संपादकीय कोप' का कोई ख़तरा नहीं है। नए स्तंभों की शुरुआत और समय-समय पर संशोधन-परिवर्तन इसका प्रमाण है। दूसरे दशक के सफ़र में पत्रिका और अधिक स्तरीय, पठनीय, संग्रहणीय, सुंदर एवं आकर्षक हो इसमें पाठकों और लेखकों का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है।

प्राप्त पाठकीय प्रतिक्रियाओं से हम केवल उन्हीं प्रतिक्रियाओं आदि को शामिल कर पाते हैं, जिनमें वस्तुनिष्ठ, कृतियों से संदर्भित संक्षिप्त समीक्षा / टिप्पणी या मार्गदर्शक बिंदु होते हैं। भ्रामक प्रशंसा और ईर्ष्या-दर्शी विचारों के प्रेषण से डाक-ख़र्च ज़ाया होता है।

○ उप संपादक

ज्ञानवर्द्धक एवं चिंतनपरक

अंक 37 में ज्ञानवर्द्धक एवं चिंतनपरक लेख स्पृहणीय हैं। राष्ट्र एवं संस्कृति की ध्वजधारी कलमों को नमन। बिहार की विकास यात्रा लेख के अंतर्गत विविध क्षेत्रों की प्रगति पर प्रकाश डाला गया है। बिजली की बेहतर स्थिति पर भी।

मेरी दृष्टि में पटना बिहार नहीं है। सही सर्वेक्षण के लिए कस्बाई शहरों के अँधेरा का आकलन भी अनिवार्य है। जुलूसों-धरनां का भी महत्त्व नहीं रहा। कुछ दिन हुई रैली में तख़्तियाँ थीं– बिजली नहीं तो विभाग बंद करो। बिजली नहीं तो बिल नहीं। बिजली दो, पैसा लो। बिजली विभाग वैसा का वैसा।

क्षमा चाहती हूँ, अपना तल्ख़ अनुभव पत्रकारों और पाठकों तक पहुँचाना चाहती हूँ- जनता की आवाज़ की महत्त्वहीनता की पीड़ा–

72-73 में बिजली पकना शुरू हुई। Tripping कहा जाने लगा। फिर शुरू हुई load shedding यानी अँधेरा बढ़ा। उन दिनों दैनिकों में छपा था पुराने जेनरेटर जर्जर हो चुके हैं। नया जेनरेटर 5 करोड़ में आता है। ठीक उसी समय दैनिकों में करोड़ों के घोटाले उछल रहे थे। मैंने अँग्रेज़ी के अग्रणी दैनिक को लिखा– How is it? A country on state in fested with xames of crores of rupees, can not afford new generater? हाशिये पर लाल सियाही में टिप्पणी लिखा मेरा पत्र लौट आया था– we cannot publish such letters. एडिटर की कायरता।

डॉ० शाहिद जमील ने मुझसे भेंट-वार्ता के क्रम में सच कहा था कि पत्रिका जारी रह इसकी चिंता प्रकाशक-संपादक के साथ-साथ लेखक और पाठक को भी होनी चाहिए। आजीवन सदस्यता शुल्क की राशि संलग्न है।

◆ उर्मिला कौल

गीता भवन, हरिजी का हाता आरा, बिहार

पठनीय एवं संरक्षणीय

'विचार दृष्टि' का 37 वाँ अंक मिला। यह अंक अनेक विविधायामी आलेखों को अपने विराट् कलेवर में आत्मसात् कर नितांत पठनीय एवं संरक्षणीय बन गया है। इसका दूसरा, किंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष इसके यशस्वी संपादक सिद्धेश्वर जी की संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष-पद पर नियुक्ति की आह्लादकारी सूचना है, जिसके नियोक्ता मा० मुख्य मंत्री, नीतीश कुमार जी कोटिश: बधाई के पात्र हैं, क्योंकि प्रभ विष्णु व्यक्तित्व से संपन्न प्रख्यात पत्रकार, प्रखर समीक्षक, उत्कृष्ट लेखक एवं लोकप्रिय कवि सिद्धेश्वर बाबू इस गरिमामय पद के लिए सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति हैं। सिद्धेश्वर बाबू को भी एतदर्थ हमारी अनंत मंगल कामनाएँ।

◆ पं० जनार्दन प्रसाद द्विवेदी

परा ज्योतिष केंद्र, 'प्रज्ञा-निकेतन
जय प्रकाश नगर, पटना-1

३७ वाँ अंक अद्भुत बन पड़ा है

आपके द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच का दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन गरिमापूर्ण एवं पूरी तरह सफल रहा, इसके

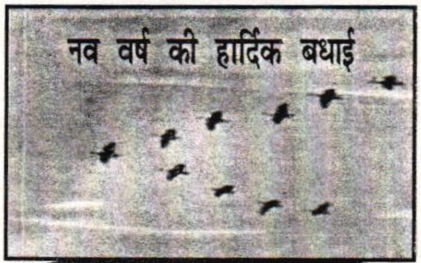

प्रिय लेखकों से विशेष अनुरोध

- रचना की छाया / कार्बन प्रति या अस्पष्ट हस्तलिखित प्रति प्रेषित न करें।
- रचना के मौलिक एवं अप्रकाशित/ प्रकाशित होने की सूचना अंकित करें।
- रचना के अंत में पत्राचार का पूरा पता दूरभाष सहित अंकित करें।
- रचना के साथ पासपोर्ट आकार का फ़ोटो एवं जीवन-वृत्त संलग्न करें।
- समीक्षा हेतु पुस्तक / पत्रिका की दो प्रतियाँ भेजें अन्यथा केवल प्राप्ति सूचना ही प्रकाशित की जाएगी।
- अन्य भाषाओं की कालजयी / उत्कृष्ट रचनाओं का हिंदी अनुवाद प्रकाशनार्थ भेजें।
- रचना के प्रकाशन से संबंधित जानकारी हेतु जवाबी पत्र अवश्य संलग्न करें।
- श्रेष्ठकर होगा सी०डी०/ ई० मेल द्वारा रचनाओं का प्रेषण। हम उन्हें प्रकाशन में प्राथमिकता देते हं।
- हम युवा एवं नये रचनाकारों को भी प्रोत्साहित करते हैं।

Email : id

vichardrishtisj@gmail.com
drshahidjamil@rediffmail.com

○ संपादक

लिए मेरा हार्दिक साधुवाद स्वीकारें। पत्रकारिता के उत्तरदायित्व-बोध का इसमें सटीक आकलन हुआ है। उसी से संलग्न है आपके विविध संपादकीयों का पुस्तकाकार संकलन। दोनों मिलकर आज की समग्र चिंताओं की जो व्याख्या करते हैं, उससे युवा पीढ़ी के चिंतन को नई दिशा एवं बल मिले, यही प्रभु से प्रार्थना है स्वीकारें इन दोनों के लोक-विस्तार हेतु।

◆ **कुमार रवीन्द्र**
'क्षिजित', 310 अर्बन एस्टेट-2
हिसार-125005, हरियाणा

एक दशक की सफल यात्रा पर बधाई

आपके अथक परिश्रम का ही फल है कि 'विचार दृष्टि' ने भारत के जीवन-मूल्यों को पाठकों तक पहुँचाने का स्तुतीय कार्य किया है। यह पत्रिका विचार-प्रधान पत्रिका बनकर लोगों को राष्ट्रीय विचारों/समस्यायों पर मंथन करने की ओर प्रेरित करती रही है। आपने पथ प्रदर्शक के रूप में जिस लौह-पुरुष को चुना है, वैसे सरदार की आज देश को बहुत आवश्यकता है।

बिहार सरकार ने आप जैसे साहित्यकार और राष्ट्रभक्त को 'बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड' का अध्यक्ष पद देकर उस संस्था को गौरवान्वित किया है। आपके मार्गदर्शन में यह शिक्षा बोर्ड विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन करेगा, जो देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में एक अहम भूमिका निभाएगा। आशा है देश के भविष्य को भारतीय संस्कृति से जोड़ने का आपका अभियान दिनोंदिन सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता रहेगा।

एक बार पुन: बधाई।

◆ **चंद्र मौलेश्वर प्रसाद**
1-8-28, यशवंत भवन, अलवाल,
सिकंदराबाद 500 010 (आं०प्र०)

यथा नाम तथा गुण

राष्ट्रचेता अंक एक प्रकार से विलक्षणता के गुण से जाना जाएगा। इस अंक को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो यह सामाजिक जागृति एवं क्रांति को दिशा देने वाला है। ऐसी सामाजिक जागृति एवं क्रांति जिसमें एकता, अखंडता, सौहार्द्रता का मणिकांचन योग हो।

सिद्धेश्वर जी ने अपने संपादकीय में देश भक्ति की तपन में चरित्र को बल देते हुए, 'स्वत्वबोध' को परिभाषित करते हुए राष्ट्र निर्माण के लिए मनुष्य के चरित्र को बल दिया है। साथ ही स्वाभिमान के साथ देशाभिमान को प्रमुख माना है। इस अंक में जिन आलेखों का समावेश है; सभी मननशील एवं चिंतनशील हैं और नए सोच को दिशा देते हैं। 'संतुष्टि और सक्षमता का विकास' नामक आलेख में इस बात की पुष्टि हुई है कि क्षमता के विकास में प्रतियोगिता एक सहायक प्रक्रिया है। 'मीडिया अपनी अहमियत खो रहा है'- भारतीय लोकतंत्र के तीसरे स्तंभ की स्थितियों को देख एक सुवात्मक, सुधारात्मक दिशा दी है। भारतीयों की सार्वभौमिक अखंडता, परिकल्पना एवं विचार नामक आलेख में इस बात से आगाह किया है कि बाह्य भाषा का हस्तक्षेप ही राष्ट्र की उन्नति के लिए घातक है। संपूर्ण भारत की भाषा चयन करने के ध्येय से कुछ प्रस्तावों को रेखांकित कर कुछ मुद्दों पर भी अपने मत दिए हैं। 'भारतीय संस्कृति में हिंदू, मुस्लिम रिश्ते'' नामक आलेख इतिहास के पृष्ठ को खोलता है जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों के बीच प्रेम रहा है, भाईचारा का रिश्ता रहा है। वर्तमान दौर में जो अभाव दिख रहा है उस पर खेद व्यक्त किया है, समझ का फेर ही प्रमुख कारण है। अमर्त्य सेन का आर्थिक स्वरूप पूँजीवाद अथवा समाजवादी नामक आलेख अर्थव्यवस्था से संबंधित है- इस निष्कर्ष पर पहुँचाया है कि उसे गाँधीवादी अथवा मानवतावादी होना चाहिए। महँगाई के कौन ज़िम्मेदार प्रश्न को उठाने वाला आलेख ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचाता है जहाँ कठोर क़दम उठाने की आवश्यकता है। 'महान् विभूतियोंवाला महान देश' नामक आलेख भी सुझावात्मक दृष्टि देने में सहायक है। 'मोगरी एक गुमनाम शहीद' में बड़ा ही मार्मिक चित्रण है। विडंबना देखिए जिसका नाम इतिहास के पन्नों में गुम हो गया- बुंदले हरबोल क्यों वंचित रह गए? एक प्रश्न है?'' राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता में भारतीय भाषाओं की भूमिका नामक आलेख भारतेंदु हरिश्चंद्र जी की काव्योक्ति को तरोताज़ा करता है। 'हमेशा ख़राब नहीं होते दांमत्व जीवन में तकरार' आलेख मनोविज्ञान को छूता है- इंसान के लिए इशारा काफ़ी है कहकर बात को संभाला है। भाषा विषयक आलेख भी विविध विचारों से अवगत कराते हैं। 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' नामक आलेख ऐसे प्रश्नों को झकझोरते हैं, ऐसे बिंदुओं को सम्मुख रखे गए हैं, सम्यक संकेत समझकर विचार करना ही श्रेयस्कर है। समाज के प्रहरी मीडिया जगत को गंगा बनकर अवतरित होना होगा तभी पीड़ा का निवारण होगा, कष्ट से मुक्ति होगी। इस प्रकार पत्रकारिता से संबंधित आलेख भी पत्रकारिता जगत् के लिए उल्लेखनीय विचार हैं: जो बोधगम्य हैं। अनुकरणीय हैं। इस प्रकार सभी आलेख सोद्देश्यपूर्ण हैं। संपादक / संपादकगण व अन्य जुड़े महानुभावगण भी साधुवाद के पात्र हैं। पत्रिका इपने नामकरण को परिलक्षित करती है।

◆ **डॉ० सुषमा शर्मा**
उपाध्यक्ष, रा० विचार मंच, राजस्थान
इकाई, जयपुर

ऐतिहासिक दस्तावेज़

30-31 अक्टूबर, 08 का दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन बड़ा सफल रहा। देश-भर के विद्वानों के बीच महत्त्वपूर्ण सामयिक विषयों पर चर्चा इस अधिवेशन की विशिष्ट उपलब्धि रही। 'विचार दृष्टि' के विशेषांक को तो पत्रकारिता पर केंद्रीत कहा जा सकता है।

◆ **डॉ० रामनिवास 'मानव'**
अनुकृति, 706, सैक्टर-13,
हिसार-125005 (हरि०)

नये पद के लिए बधाई

'माननीय' बननें के बाद भी आपको मेरी सुधि रही, इसे मैं आपका बड़प्पन मानता हूँ और अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। आशा है भविष्य में भी मुझे आपका स्नेह और सद्भाव इसी प्रकार मिलता रहेगा। 86 वर्ष की अवस्था में अब कलम की रफ्तार थोडी धीमी ज़रूर पड़ गई है, किंतु कुछ न कुछ लिखना-पढ़ना अब भी जारी है। मैं यथाशक्ति 'विचार-दृष्टि' के लिये सामग्री भेजते रहने का प्रयास करूँगा।

◆ **कृष्ण कुमार राय**
c/o प्रदीप कुमार राय, प्राच्य प्रकाशन,
पोस्ट बाक्स नंबर- 2037, सी०-
21/3, (होटल हिन्दुस्तान इंटरनेशनल
कम्पाउन्ड), मलदहिया, वाराणसी-2

अत्यंत सराहनीय कार्य

माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आप जैसे साहित्यमनीषी, श्रमप्रिय, विवेकशील और कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति को बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड का अध्यक्ष पद देकर अत्यंत सराहनीय कार्य किया है। इसके लिए संस्कृत एवं हिंदी साहित्य के विद्वत्समाज सदा ऋणी रहेगा। अक्टू-दिसंबर, 2008 का अंक मिला।

मोहक विशिष्ट, पठनीय, संग्रहणीय आलेखों और रचनाओं का अपूर्व संग्रह है।

◆ **डॉ॰ राज नारायण राय**

227 पंडितवाड़ी, फ़ेज़- 2,
पो॰- प्रेमनगर, देहरादून- 248007

तहे दिल से शुक्रिया

'विचार दृष्टि' के अंक 37 के साथ डॉ॰ शाहिद जमील का पत्र भी मिला, जिसके लिए मैं आप साहबान का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। बंसी खूबचंदानी की सिंधी कहानी 'पंहिजो पाणसां' का हिंदी अनुवाद 'अपने आपसे' प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ।

◆ **विक्रम सहानी**

51, स्टार एपार्टमेंट्स, नालंदा
कॉम्पलेक्स के सामने, वस्त्रापुर,
अहमदाबाद - 380015

पठनीय, संग्रहणीय एवं विचारणीय

'विचार-दृष्टि' (अक्टूबर-दिसम्बर, 08) का पत्रकारिता पर आधारित विशेषांक। आपका 'सम्पादकीय' इस सचाई को सूचित कर रहा है कि 'विचार-दृष्टि' नाम्नी राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करते हुए हिन्दी भाषा तथा साहित्य की अभिवृद्धि में 'अपरिहार्य' अवदान कर रही है। डॉक्टर शाहिद जमील ने अपने लेखन के माध्यम से 'विचार-दृष्टि और इसके संपादक' की सबलताओं को बखूबी रेखांकित किया है। शिव कुमार सिंह का लेखन उपयोगी सामग्री दे रहा है। डॉ॰ (श्रीमती) एस॰ तंकमणि अम्मा ने डॉ॰ एन॰ चन्द्रशेखरन नायर (दक्षिण भारतीय यशस्वी हिन्दी साहित्यकार) का अच्छा परिचय दिया है। बनारस चौधरी 'वीरेश' कृत 'नारी : भारतीय मनीषियों की दृष्टि में' नाम्नी रचना लेशक की अध्ययनशीलता का प्रमाण है। श्री सिद्धेश्वर कृत 'हिन्दी का साहित्यिक समाज और पत्र-पत्रिकाएँ', 'बिहार में विकास की गाड़ी पटरी पर' तथा 'दांपत्य के रिश्तों में तेजी से विघटन' आदि रचनाएँ प्रभाव छोड़ रही हैं। 'साहित्यिक पत्रकारिता : उत्थान या पतन?' (उर्मिला कौल), 'विचार दृष्टि : मेरी दृष्टि में' (अंजलि), 'हिन्दी पत्रकारिता : तब और अब' (डॉ॰ रेखा मिश्र), 'हिन्दी-पत्रकारिता : बदलता स्वरूप (सविता चड्ढ़ा) तथा 'डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र-चिंतन' एवं 'अधिकांश समस्याओं की जड़ है हमारी कुत्सित मनोवृत्ति' (नन्दलाल) शीर्षक रचनाएँ इस अंक के आकर्षण हैं। समग्रत:, यह विशेषांक पठनीय, संग्रहणीय एवं विचारणीय बन पड़ा है। 'विचार-दृष्टि' के परिवार के लिए नव वर्ष की मंगल कामनाएँ।

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केंद्रीय क़ानून १९५६ नियम ८) के अनुसार विचार दृष्टि से संबंधित विवरण

प्रपत्र -४

प्रकाशक का नाम : सिद्धेश्वर
प्रकाशन का स्थान : दिल्ली
प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
मुद्रक का नाम : सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 'दृष्टि', यू॰ 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली- 110092
प्रकाशक का नाम : सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता: 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
मालिक का नाम व पता : सिद्धेश्वर 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

(सिद्धेश्वर)प्रकाशक
तिथि : 01 जनवरी, 2009

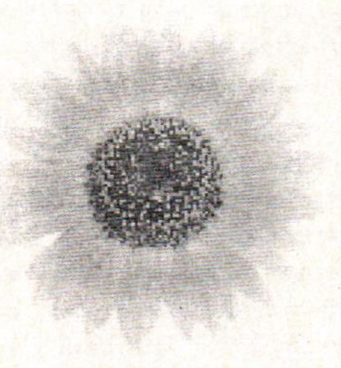

ज़रा इनकी भी सुनें

आज से पाँच वर्ष या नौ वर्ष बाद जब लोग राष्ट्रपति के रूप में मेरी सफलता को आकेंगे, तो इस बात को कसौटी बनाया जाएगा कि क्या मैं अर्थव्यवस्था को पटरी पर ला सका।

✯ अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा

श्रीलंका को तमिलनाडु के नागरिकों और लिट्टे के बीच अंतर समझना चाहिए।

✯ विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी

पाकिस्तान प्रतिबंधित संगठनों को अलग-अलग नाम से अपने यहाँ से आतंकी गतिविधियाँ चलाने की इजाज़त दे रहा है।

✯ विदेश राज्य मंत्री आंन्द शर्मा

मुख्य चुनाव आयुक्त एक कलर्क को तो हट नहीं सकते, चुनाव आयुक्त को हटाने चलें हैं। सीमाओं को लाँघने से ही गरिमा गिरती है।

✯ डॉ॰ जीवीजी कृष्णमूर्ति
पूर्व चुनाव आयुक्त

लालकृष्ण आडवाणी हमारे नेता और एन॰डी॰ए॰ की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार हैं। हम एन॰डी॰ए॰ में भाजपा के साथ रहेंगे लेकिन एन॰डी॰ए॰ में राम मंदिर के लिए कोई जगह नहीं।

✯ बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार

पाकिस्तान की जनता अम्न चाहती है, पर वहाँ की हुकूमत इसके ख़िलाफ़ है। ठीक इसी तरह भाजपा भी आतंकवाद का इस्तेमाल सत्ता के लिए कर रही है।

✯ केंद्रीय गृह राज्य मंत्री
डॉ॰ शकील अहमद

किसी के भूखे नहीं रहने के क़ानून के बावजूद कोसी के लोग बाढ़ के बाद अब भूखे मरने की स्थिति में आ गए हैं।

✯ सुश्री मेधा पाटेकर प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता

किसी भी क़ीमत पर हम काँग्रेस के नेतृत्ववाली सरकार का समर्थन नहीं करेंगे।

✯ माकपा महासचिव
प्रकाश करात

आतंकवाद के मूकदर्शक कबतक बने रहेंगे हम

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 26 नवंबर, 2008 की रात आतंकवादियों ने जिस प्रकार खुली चुनौती देते हुए तबाही का मंज़र पेश किया और खुफ़िया तंत्र आतंकवादी विरोधी दस्ते आदि सभी मशीनरी पूरी तरह नाकाम साबित हुईं उससे यह स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद से निपटने के लिए हमें युद्ध स्तर पर काम करना होगा। आतंकवादी जिस तरह समुद्र में तटरक्षकों और स्थानीय सुरक्षाबलों की नज़रों से बचते हुए मुंबई के ताज, ओबेराय जैसे पाँच सितारा होटलों और छत्रपति शिवाजी टर्मिनल में प्रवेश करने में कामयाब हुए इसने गृह मंत्रालय और खुफ़िया तंत्र के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिया है। आतंकवाद का ऐसा स्वरूप भारत ने पहले कभी नहीं देखा था। आतंकियों द्वारा होटलों में देशी और विदेशी मेहमानों को भी बंधक बनाने के पीछे उनका मक़सद विदेशों का ध्यान आकृष्ट करना था और उनका इरादा भारत की अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय साख एवं प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाना था।

इन हमलों की ज़िम्मेदारी जिस संगठन ने ली है उसने मीडिया को हिंदी में ई-मेल भेजकर अपना नाम 'डेक्कन मुजाहिदीन' बताया है जिसका नाम अबतक सुना नहीं गया था। इंडियन मुजाहिदीन ने भारत के कई शहरों में हमले किए और लगभग 130 लोगों को मौत के घाट उतारा। जेहादी आतंकवाद का यह दौर पहले उत्तर प्रदेश में दिखाई दिया था। वहाँ से जयपुर पहुँचा। जयपुर से बैंगलुरु गया। बैंगलुरु से इसने अहमदाबाद और सूरत का रुख़ किया। उसके बाद इसकी मंज़िल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली थी। दिल्ली से असम पहुँचा और अब इसने मुंबई में दस्तक दे दी है। मुंबई में जो आतंकवादी पकड़े गए उनमें से तीन आई० टी० विशेषज्ञ थे। बहुराष्ट्रीय कंपनियों में बड़े पदों पर काम कर रहे थे। यह पूरे ख़तरों का नया पहल है। कभी न सोने वाली व तेज रफ्तार से भागती देश की आर्थिक राजधानी मुंबई की रफ्तार जैसे थम सी गई। अबतक के सबसे भीषण हमले का शिकार हुई मुंबई में दो सौ से अधिक लोग मारे गए हज़ारों घायल हुए।

आतंकवादियों ने समुद्री रास्ते को चुना और नाव से शहर में आए और फिर पूरे महानगर में फैलकर कार्रवाई को अंजाम दिया। भारत के पास इस बात के पुख़्ता सबूत हैं कि पाकिस्तान की ख़ुफ़िया एजेंसी आई०एस०आई० ने मुंबई हमले की योजना बनाई और मुंबई हमले में आतंकी जीवित दबोचा गया। आतंकी अजमल अमीर क़साब ने पूछताछ में स्वीकार किया है कि उसे पिछले डेढ़ सालों तक पाकिस्तान के चार कैंपों में आतंक का प्रशिक्षण दिया गया था जिसमें उसकी मुलाक़ात लश्कर-ए-तैयबा के नेता मोहम्मद हफ़ीज़ सईद से हुई थी। यह बात अब साफ़ हो गई है कि मुंबई हमलों के लिए ज़िम्मेवार आतंकवादियों के प्रशिक्षण से लेकर नरसंहार को अंजाम देने तक की पूरी योजना को न केवल इस्लामाबाद की जमीन पर तैयार किया गया, बल्कि इसमें पाक ख़ुफ़िया एजेंसी आई०एस०आई की भी भूमिका थी। यही नहीं प्रशिक्षकों के नाम भी भारत ने ढूँढ़ निकाले हैं। मुंबई के होटलों में क़रीब साठ घंटों तक खून की होली खेलने वाले आतंकवादियों के प्रशिक्षण में पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों के नाम का भी खुलासा भारत कर सकता है।

स्वप्न नगरी किस तरह से आतंकवादियों के निशाने पर रही, इसका अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि 1933 से अब तक मुंबई पर छह बड़े हमले हो चुके हैं और पिछले छह माह में विभिन्न शहरों में 64 हमलों में 257 नागरिक मारे जा चुके हैं तक़रीबन एक हज़ार घायल हुए। आर्थिक राजधानी को निशाना बनाने आए सभी दस आतंकी अपने साथ एक-एक बम लेकर आए थे, जिनमें आठ किलो आर०डी०एक्स० था। इन विस्फोटकों को शहर के अलग-अलग स्थानों पर लगाया गया था। निःसंदेह मुंबई में दहला देने वाले सिलसिलेवार हमलों ने अपने पीछे एक रक्तरंजित लकीर खींच दी है। इस हमले को उस भारतीय राष्ट्र-राज्य के लिए चेतावनी की अंतिम घंटी के रूप में लिया जाना चाहिए, जो अब तक आतंकवाद से निपटने के मामले में बहुत अधिक नरम साबित होता रहा है। आंतरिक सुरक्षा पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। सामान्य धारणा यह है कि अति विशिष्ट जनों की सुरक्षा की तो लगातार समीक्षा की जाती है और उसमें सुधार किए जाते हैं, मगर सामान्य जन की सुरक्षा की अनदेखी की जा रही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पिछले एक दशक के दौरान आतंकवाद को लेकर भारत की घरेलू प्रतिबद्धताएँ गड्ड-मड्ड हो गई हैं। इनके सिलसिले में हिंदू-मुस्लिम विभाजन को भी बढ़ाने का काम किया जाता रहा है। अक्सर ऐसा काम राजनीतिक कारणों से किया जाता है जिसका नतीजा है कि देश के राजनीतिक तथा कानूनी तंत्र में विश्वास का स्तर गिरता जा रहा है।

आतंकवादी की इस ताज़ा और अभूतपूर्व घटना ने भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। वैश्विक स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक अविश्वास का माहौल बनना स्वाभाविक-सा है। इससे पूरी दुनिया में यह संदेश जा रहा है कि भारत एक असुरक्षित देश है, जो आतंकवाद से निपटने में असमर्थ व अशक्त है और जहाँ सुरक्षा व्यवस्था कड़ी नहीं है। और तो और आतंकी समुद्र के रास्ते से आए और सुरक्षाबलों को कानोंकान ख़बर तक न लगी। स्पष्ट है कि नेवी और तटरक्षक बल अपने कर्त्तव्य को अंजाम देने में असफल रहे। दरअसल, आतंकवादी हमारी व्यवस्था व प्रणाली की शिथिलता का लाभ उठाते हैं। हमारी खुफ़िया तंत्र की कमज़ोरी उनकी मददगार है।

हमारी लचर प्रणाली में अबतक एक भी आतंकवादी को सज़ा नहीं दी गई है। ज़्यादातर मामलों में या तो वे छूट जाते हैं या फिर मानवाधिकार के नाम पर उनपर सख़्ती नहीं की जाती। जिहादियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई में गठबंधन सरकार के घटक दलों की राजनीति भी बाधा खड़ी करती है, क्योंकि उन्हें वोट की चिंता है। इस खामी का लाभ मौत के सौदागर उठाते आए हैं। आतंकवादियों ने इसका लाभ उठाते हुए धन और जन दोनों की क्षति पहुँचाई है। दुर्भाग्य से हमारे पास ऐसा कोई कड़ा क़ानून नहीं है जिनके सहारे आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई की जा सके। आतंक के ख़िलाफ़ लड़ाई में नागरिकों की भागीदारी भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। आखिर देश के नागरिक कबतक इन आतंकी हमलों के मूकदर्शक बने रहेंगे? आतंकवाद से निपटने के लिए हमारे देश में समाज के हर वर्ग, हर धर्म के लोगों को अपने स्तर पर योगदान देना होगा, क्योंकि आतंक के शिकार हिंदू-मुस्लिम सभी हैं।

इस दृष्टि से आतंकवाद को खत्म करने में मुसलमान भाई महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वे मस्जिदों, मदरसों में स्थानीय लोगों को ही रखें और उनके द्वारा संचालित होटलों व सरायों में रहने वाले संदिग्ध लोगों की सूचना तत्काल पुलिस को दें। दूसरी बात यह है कि मुसलमान के अतिरिक्त हिंदू, सिख तथा ईसाई वर्ग के जो लोग आतंकियों को पनाह देते हैं अथवा धन के लोभ में देश के साथ खिलवाड़ करते हैं उन्हें भी चिंहित कर सजा दी जाए। होटल ताज, ओबेराय, शिवाजी टर्मिनल तथा नरीमन हाउस पर जब आतंकवादियों द्वारा कहर ढाया जा रहा था, तो उत्तर भारतीयों के ख़िलाफ़ ज़हर उगलने वाले राज ठाकरे और उनके चाचा अपनी मांद में ही दुबके रहे। कहाँ गए थे महाराष्ट्र नव निर्माण सेना के जवान? मुंबई की घटना के बाद तो इन नेताओं ने चुप्पी साधकर खुद को हास्यास्पद बना दिया।

सच मानिए मुंबई की ख़ौफ़नाक और दर्दनाक हमला के बाद पूरा राष्ट्र शोक और शर्मिंदगी ने धीरे-धीरे केंद्र की इस संप्रग सरकार के ख़िलाफ़ अभूतपूर्व नाराजगी का रूप ले ली है जिसने राष्ट्रीय सुरक्षा की जानबूकर और आपराधिक अनदेखी की। आमजन के आक्रोश की आँच कोले पाने में असमर्थ सप्रंग सरकार ने आनन-फानन में पहले तो केंद्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटिल को हटाकर उस पद पर पी० चिदंबरम को बैठाया और बाद में फिर उसके महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख तथा गृहमंत्री पाटिल की जगह क्रमश: अशोक चव्हाण तथा छगन जबल की नियुक्ति की गई। पर मु ऐसा लगता है कि केवल मंत्रियों के अदल-बदल से ही आतंकियों को काबू में नहीं लाया जा सकता, बल्कि आतंक से निपटने के लिए कड़े कानून लागू करने होंगे। पोटा कानून आतंकी गतिविधियों से निपटने में काफ़ी कारगर था, मगर सरकार ने पोटा कानून को निरस्त कर दिया और गुजरात एवं राजस्थान सरकार द्वारा बनाए गए आतंकवाद विरोधी कानूनों को हरी डी नहीं दी। ऐसा लगता है कि जेहादी आतंकवाद पर नरम रुख़ अपनाकर वह मुसलमानों के वोट पक्के कर सकती है, मगर आतंकवाद जैसी भयंकर समस्या के बढ़ते चले जाने के लिए मूल रूप से ज़िम्मेदार लोगों को दंडित नहीं कर सकती है। ऐसा होता, तो अफ़ज़ल को फाँसी पर लटकाए जाने में सरकार अपना पैर पीछे नहीं खींचती। उसे संसद पर हमले में शामिल होने के दोष में फांसी की सज़ा सुनाई जा चुकी है। सरकार को शायद ऐसा लगता है कि अगर अफ़ज़ल को फाँसी दी गई, तो वह मुस्लिम वोटों से हाथ धो बैठेगी।

ऐसी विषम एवं भयावह स्थिति में आतंकवाद के विरूद्ध राष्ट्रीय एकता की अपरिहार्यता महसूस की जा रही है और राजनीतिक दलों की संकुचित सोच और सरकार के स्तर पर ठोस संकल्प की आवश्यकता है। इसके लिए समाज के सजग एवं जागरूक नागरिकों को आगे आना होगा और राष्ट्रचेतना का अलख जगाना होगा। राष्ट्रीय एकता कायम रहे इसका दायित्व न केवल केंद्र व राज्य सरकारों का है, बल्कि देशवासियों को भी आतंकवाद को नेस्तनाबूद करने के लिए एक होना होगा और दलीय हित की चिंता किए बगैर राजनीतिक एकजुटता कायम कर आतंकवाद से निपटने के लिए एकमात्र लक्ष्य बनाना होगा। हम देशवासियों की भी भागीदारी उतनी ही ज़रूरी है जितनी सरकार की सक्रियता। यही वह वक्त है जब सरकार को जनता का समर्थन प्राप्त कर ठोस और कड़े कदम उठाने होंगे। इस पर भी खोज होनी चाहिए कि इस देश में आतंकवादियों को प्रश्रय क्यों और कौन देता है। स्थानीय सहयोग के बिना आतंकवादी ने कैसे समुद्री रास्ते से मुंबई के पाँच सितारा होटलों में घुसकर अपने मंसूबों को अमली जामा पहनाया, यह सोचने का विषय है। भारत की जनता को यह जानने का भी मौलिक अधिकार है कि आतंकवाद पर केंद्र की नीति क्या है? आज ज़रूरत इस बात की है कि आतंकवाद से लड़ने के लिए जरूरी तकनीक और खुफ़िया तंत्र को मज़बूत करने के लिए अन्य विकसित देशों से प्रेरणा ली जाए।

हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि हमारे राजनीतिक नेतृत्व ने कभी मन, वचन और कर्म से आतंकवाद से मिलजुलकर लड़ने की इच्छाशक्ति नहीं प्रदर्शित की। सच तो यह है कि आतंकवाद के बहाने एक-दूसरे दल को नीचा दिखाने की जैसी कोशिश हुई उसकी मिसाल मिलना कठिन है। यही कारण है कि आतंकवादी लगातार मज़बूत बनकर उभर रहे हैं और अब तो आतंकवाद के मसले पर, पानी सिर के ऊपर जा चुका है। हमारा तो मानना है कि सरकार को आतंकवाद रोकने का ज़िम्मा फ़ौज के हवाले कर देना चाहिए। विश्व के अधिकतर देशों में यही व्यवस्था लागू है, यहाँ तक कि हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी। आज जहाँ विश्व के दूसरे देश आतंकवाद से सख़्ती से निपटते हैं, वहीं भारत आतंकवाद की जड़ों को ढूँढ़ने में ही मशगूल है जबकि ज़रूरत इस बात की है कि इस मसले पर संकीर्ण राजनीतिक हितों से ऊपर उठकर समाधान तलाशा जाए, क्योंकि इस बात को अब और नज़रअंदाज़ करना देश के लिए ख़तरनाक होगा। इसलिए समय का तक़ाज़ा है कि पूरा राष्ट्र एकजुट होकर आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़े।

राष्ट्रीय अधिवेशन

राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभाई पटेल की 133 वीं जयंती के उपलक्ष्य में तथा राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था 'राष्ट्रीय विचार मंच' के दो दशक से अधिक एवं उसके मुखपत्र 'विचार दृष्टि' के सफलतापूर्वक दस वर्ष पूरे होने पर इन दोनों की ओर से विगत 30 एवं 31 अक्टूबर, 2008 को नई दिल्ली के विष्णु दिगंबर मार्ग स्थित हिंदी भवन तथा 10, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन के सभागार में राष्ट्रीय एकता के विविध पहलुओं पर केंद्रीत दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ जिसके उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त कुल छ: शैक्षिक सत्रों में 'विदेशी माटी में पुष्पित-पल्लवित हिंदी', 'भाषावाद, क्षेत्रीयता और धार्मिक संकीर्णता के उभार से राष्ट्रीय एकता पर मंडराते ख़तरे', 'स्त्री-विमर्श की भारतीय अवधारणा', 'राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में बापू और पटेल', 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' तथा 'राष्ट्रीय एकता के निहितार्थ भारतीय युवा वर्ग' जैसे छ: विषयों पर देश के सुप्रसिद्ध चिंतक, विचारकों, लेखकों, पत्रकारों तथा प्रबुद्धजनों ने सार्थक एवं जीवंत चर्चा कर मंच को सही मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देश प्रदान किया। निश्चित रूप से विचारों के आदान-प्रदान से मंच तथा इसकी पत्रिका के द्वारा राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए चलाए गए राष्ट्रीय अभियान को बल मिला है। शैक्षिक सत्रों के अलावा इस अवसर पर एक अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें देश भर के विभिन्न भारतीय भाषाओं के जाने-माने कवियों ने अपने काव्य-पाठ का सुधा-रस-पान कराकर सुधि श्रोताओं को सराबोर किया। जिन प्रमुख चिंतकों, विचारकों, रचनाकारों, कवियों तथा पत्रकारों ने विभिन्न सत्रों में अपने-अपने विचार व्यक्त कर गोष्ठियों को ऊँचाई प्रदान की उनमें तिरुवनंतपुरम के डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर, डॉ० पी० लता, डॉ० एन० सुरेश, चेन्नई के डॉ० बालशौरि रेड्डी, डॉ० पी० के० बालासुब्रह्मण्यम, डॉ० मधु धवन, प्रो० श्रावणी पांडा, प्रो० मणिकंठन, पी० आर० वासुदेवन 'शेष', श्री रमेश गुप्त 'नीरद', बैंगलुरु की सुश्री बी० एस० शांताबाई, गौतमबुद्ध नगर, नोयडा से श्री टी० एन० चतुर्वेदी, गाजियाबाद से डॉ० सोमेश्वर दत्त शास्त्री, डॉ० कुसुम लुनिया, नई दिल्ली के डॉ० रामकरण शर्मा, डॉ० परमानंद पांचाल,

डॉ० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन', पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि, श्री नंदलाल, श्री विद्यासागर वर्मा, प्रो० गंगा प्रसाद विमल, श्रीमती मृदुला सिन्हा, डॉ० सुंदरलाल कथुरिया, डॉ० नैनी, श्री रमेश शर्मा, श्री उदय कुमार 'राज़' हिसार के डॉ० रामनिवास 'मानव', प्रो० कुमार रवीन्द्र, राँची के डॉ० पी० एन० विद्यार्थी, पटना के डॉ० एस० एफ० रब, डॉ० साधुशरण, श्री रघुवंश कुमार सिन्हा, डॉ० शाहिद जमील, श्री उमेश्वर सिंह, अफ़ज़ल इंजीनियर, देहरादून के डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, जयपुर के डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', कोलकाता के श्री श्याम सुंदर गुप्ता, श्री जितेन्द्र धीर, प्रो० शरणबंधु, शिमला के डॉ० धर्म सिंह पाल का नाम उल्लेखनीय है।

आयोजित अधिवेशन ने जहाँ मंच के पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों को इसके उद्धेश्यों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया गया, वहीं 'विचार दृष्टि' के संपादक एवं संचालक-मंडल को काफ़ी ऊर्जा मिली है।

यहाँ यह कहना सर्वथा समीचीन होगा कि पूरे अधिवेशन को सफल बनाने का श्रेय यदि किसी एक पदाधिकारी को दिया जाए, तो मंच के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं संप्रति दिल्ली विकास प्राधिकरण के वित्त सदस्य, श्री नंदलाल जी ही होंग जिनके नेतृत्व में, मंच तथा 'विचार दृष्टि' से जुड़े सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अधिवेशन को सफल बनान में अपनी एकजुटता का परिचय दिया। मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक होने के नाते मैं अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री नंदलालजी के प्रति तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इनका मार्गदर्शन एवं अपेक्षित सहयोग मिलता रहेगा। मंच तथा पत्रिका से जुड़े अपने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अधिवेशन की सफलता के लिए कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा। बधाई के पात्र तो सबसे अधिक वे हैं जिन्होंने अधिवेशन के कार्यक्रमों को प्रायोजित किया तथा विज्ञापन द्वारा व्यावहारिक सहयोग प्रदान किया। अंत में मैं अपने दो सक्रिय सहयोगियों डॉ० शाहिद जमील तथा श्री उदय कुमार 'राज़' के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ जिनके क़दम-क़दम पर सहयोग के बिना यह अधिवेशन कदापि अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाता। वैसे स्वागताध्यक्ष, श्री नंदलाल जी के नेतृत्व में बनी 'स्वागत समिति' ने आमंत्रित प्रतिनिधियों, मान्य अतिथियों, वक्ताओं तथा सुधि श्रोताओं और मीडिया से जुड़े कर्मियों के आवभगत तथा खान-पान की सराहनीय व्यवस्था की थी फिर भी जाने-अनजाने में यदि कहीं किसी प्रकार की किसी को असुविधा हुई हो, तो राष्ट्रीय महासचिव के नाते इसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

इस ऐतिहासिक अधिवेशन के बाद मैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहना चाहूँगा कि 'राष्ट्रीय विचार मंच' के पिछले बाइस वर्षों की और 'विचार दृष्टि' की दस वर्षों की यात्रा के बाद इससे जुड़े सदस्यों, लेखकों तथा पाठकों के मानसिक धरातल में परिवर्तन आए हैं। उनकी कार्य-शैली बदली है। संस्था तथा पत्रिका के प्रति प्रतिबद्धताएँ भी बढ़ी हैं। आज हम उस मुक़ाम पर पहुँच गए हैं जहाँ मंच से लगाव और संस्था के प्रति आस्था पहले की अपेक्षा अधिक दिखने लगी है, क्योंकि इस बीच काम करने की तकनीक ने काफ़ी बड़ी करवट ली है। हमारे अध्यक्ष, श्री नंदलाल जी ने अपने कंम्यूटर से स्वयं प्रिंट आउट निकालकर कार्यकर्ताओं को उनके दायित्वों की रूप-रेखा सौंपी और पग-पग पर मार्ग-दर्शन किया। आमतौर पर ऐसा देखा-सुना नहीं जाता है। हर व्यक्ति अपने दायित्व के निर्वहन और कर्त्तव्य के पालन में तल्लीन और समर्पित भाव से लगा हो तथा सारी चीजें सुव्यवस्थित और लोग अनुशासित हों, समय-प्रबंधन कमाल का हो, यह सब अपने-आप में कुछ ऐसा हुआ जो मु यह सोचने को बाध्य कर रहा है कि यदि किसी संस्था या पत्रकारिता के शीर्ष पर बैठे अधिकारी त्याग, निष्ठा, समर्पण और ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करें, तो कोई कारण नहीं कि संस्था के अन्य अधिकारी व कार्यकर्ता उनके क़दम से क़दम मिलाकर न चलें। कम से कम इस अधिवेशन से तो हम सबों को यही सीख मिली है।

मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि विचार--विमर्श से सोच का विकास होता है, चिंतन का विकास होता है और परिवर्तन के लिए जनमत तैयार होता है। अतएव विचार-विमर्श की प्रक्रिया को विकसित करने के लिए ज्ञान की परंपरा से संवाद के साथ-साथ समकालीन प्रबुद्धजनों, विचारकों और विचारवान लेखकों से संवाद स्थापित करने का प्रयास सदैव जारी रहे। वैचारिक क्रांति की दिशा में अग्रसर होने का यही एक सुलभ मार्ग है और यही 'राष्ट्रीय विचार मंच' और 'विचार दृष्टि' का उद्देश्य भी। इसी से आम आदमी को रोशनी मिलेगी दिशा तय करने और दशा बदलने में। यही महत्त्वपूर्ण भावनात्मक कड़ी होगी भारत-पुत्रों को मातृभूमि और अपने समाज से जुड़ने की। इस तरह का आयोजन एक सार्थक प्रस्थान-बिंदु बन सकता है।

जहाँ तक 'विचार दृष्टि' पत्रिका के सरोकार का सवाल है, इसने समाज को दिशा देने, जागरूक करने के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का भी काम किया है। इसकी स्थापना ही व्यक्ति और समाज में अनुकूल परिवर्तन की उम्मीद से रखी गई है। यही इसका बीज मंत्र है, जिससे कभी सममौता नहीं किया। मौजूदा दौर में समाज के प्राय: प्रत्येक क्षेत्र में विचार व सिद्धांत की बात बेमानी लगने लगी है और हर रोज़ इंसानियत शर्मसार हो रही है। वर्तमान युवा पीढ़ी भी दिमाग़ पर बो डालना नहीं चाहती और युवावर्ग चिंतन-मंथन नहीं करना चाहता। उन्हें तो बस चटपटी मसालेदार चीजें चाहिए। राजनीति के सभी मूल्य प्राय: ख़त्म होते जा रहे हैं। मूल्यविहीन राजनीति, भ्रष्टाचार, महिलाओं व दलितों पर हो रहे अत्याचार, सुस्त पड़ रहे राष्ट्र के नायकों, रंगकर्मियों, बुद्धिजीवियों और पद, पैसे व पुरस्कार पाने की लिप्सा लिए सत्ता के तंग गलियारों में घूमते लेखकों को जागरूक करने की मुहिम तो छेड़नी ही होगी तथा समाज में हो रहे अन्याय के ख़िलाफ़ एक न एक दिन तो हल्ला बोलना ही पड़ेगा। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर 'विचार दृष्टि' ने ग्यारवें वर्ष में प्रवेश करने के बाद भी अपने विचार पाठकों तक पहुँचाते रहने का संकल्प ले रखा है। आख़िर न्याय के लिए किसी न किसी को तो पहल करनी और आम लोगों को जागरूक करने हेतु अलख जगानी ही पड़ेगी। ऐसे में हमने आगे बढ़कर पत्रिका रूपी एक मशाल जला रखा है और 'विचार मंच' द्वारा अलख जगाने का काम भी जारी है। लेकिन यह कार्य व्यक्तिगत प्रयास से संभव नहीं है। मशाल से मशाल जलाकर और सुर में सुर मिलाकर चलना होगा। एक शायर ने सच ही कहा है :

अकेला ही चला था जानिबे मंज़िल मगर
लोग आते गए और कारवाँ बनता गया

पत्रिका को और अधिक स्तरीय और पठनीय बनाने तथा इसे देश के कोने-कोने और विदेशों में भी पहुँचाने का संकल्प है। पत्रिका परिवार में फेरबदल करते हुए चंद जानी-मानी हस्तियों को इस अंक से शामिल किया गया। साथ ही मूल्य-वृद्धि के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया गया है।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

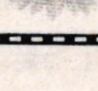

राष्ट्रीय एकता का प्रश्न एवं युवा संचेतना

✯ कुमार रवीन्द्र

राष्ट्रीयता एक भाव है, विचार है, जिससे कोई समुदाय परिभाषित होता है। जब हम किसी राष्ट्र की परिकल्पना करते हैं, तो उसमें हम किसी निश्चित सीमाबद्ध भौगोलिक इकाई और उसमें रहने वाले जन-समुदाय की बात ही नहीं सोचते हैं, अपितु उन मूलभूत आदिम संवेदनाओं और संज्ञानों के बारे में भी सोचते हैं, जो उस जन-समुदाय को उस भौगोलिक इकाई से जोड़ते हैं और जिनमें उक्त जन-समुदाय की आकांक्षाओं की परिणति होती है। राष्ट्रीयता का भाव दो स्तरों पर किसी समुदाय को अर्थात है– एक ओर वह उसे अन्य मानव-समुदायों से अलग पहचान देता है; दूसरी ओर उसकी अस्मिता को उसके क्षेत्र के नदी-पर्वत-नाली-सागर आदि से बने परिवेश से अभिन्न करता है यानी समस्त पदार्थ जगत से संयुक्त करता है। भारत में राष्ट्रीयता की उद्भावना सर्वप्रथम भारतीय मनीषा के द्वारा वेदों में की गई। ऋग्वेद में राष्ट्र-भाव को परोक्ष रूप से कई प्रकार से उद्भाषित किया गया है। प्रकृति और निसर्ग के प्रारूप देवों की स्तुतियाँ प्रतीक रूप में राष्ट्रपुरुष की विविध सामर्थ्यों अथवा राष्ट्र के स्थूल-सूक्ष्म अभिरूपों को ही परिभाषित करती हैं। इंद्र की वृष्टि और कृषि के आराध्य-नियामक देव के अतिरिक्त राजा की शक्तियों से समाहित राष्ट्रपुरुष के रूप में भी प्रस्तुति हुई है। एक पराक्रमी, उद्यमशील राष्ट्र का विजयोन्मुख आस्तिक बोध ही भारतीय मनीषा के प्रथम उन्मेष का मूलाधार बना। यही प्रागैतिहासिक राष्ट्रभाव भारतीय पर्व-त्योहारों और उपासना-उत्सवों में उपस्थित हुआ।

भारत में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति उसकी सांस्कृतिक संचेतना से जुड़कर ही हुई है। राजनीतिक रूप में अक्सर एक न होने पर भी भारत एकात्म रहा है। हमारी सांस्कृतिक संचेतना में समाहित रही है। भारतभूमि की भौगोलिक संरचना यानी उसके पहाड़-पठार, उसके मरुप्रांत एवं सागरीय तटबंध, सप्तसिंधु सिंचित उसके विस्तृत मैदान, उसके विशिष्ट षट्ऋतु-प्रसंग और इन सबसे जुड़ा मानुषी उत्साह एवं उल्लास-भाव, उसके पर्व, तीज-त्योहारों में अभिव्यक्ति पाता सहस्राब्दियों में संचित हुआ आस्तिक सहभाव जिसमें ये सभी सम्मिलित हैं और इनके अतिरिक्त भी बहुत कुछ ऐसा जो अकथ-अपरिभाषित है– एक साझा संघर्षरत अनचेतनीय उत्साह- भाव, जिससे भारतीयता का बोध होता है। इसी ऊर्ध्वोन्मुखी चेतना की उपस्थिति हम अपनी पुराकथाओं, अपने पौराणिक संदर्भों, अपनी किंवदंत्तियों, कहावतों और वानियों में पाते हैं। इसी से बनता है हमारा इतिहास-बोध। राष्ट्र-निर्माण की कितनी ही जानी-अनजानी कथाएँ हमार राष्ट्रीय अवचेतन में समाहित हैं। चाहे वह सृष्टि-हित के लिए सदाशिव के विषपान का प्रसंग हो या दधीचि के राष्ट्र-हित हेतु आत्म-बलिदान का या सत्ता-संघर्ष में राम के आत्मोसर्ग का या स्वयं की महत्त्वाकांक्षा से परे हट कर कुल के कल्याण हेतु गंगापुत्र देवव्रत की भीष्म-प्रतिज्ञाओं का या गंगा को धरती पर उतार कर लाने के भगीरथ प्रयास का– एक बात जो इन सभी प्रसंगों को विशुद्ध भारतीय अस्मिता का प्रतीक बनाती है, वह है इन सभी महानायकों की राष्ट्र-दृष्टि। इसके अतिरिक्त कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनमें राष्ट्रहित हेतु सत्ता के पदान्ध स्वरूप को निरंतर अनुशासित करने-रखने के ऋषिकुल के प्रयासों के आख्यान हैं। राजा बेन, राजा दण्डक के प्रसंग इसी समग्र राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण हेतु किए ऋषि-प्रयासों के उदाहरण हैं। इंद्र, जो सर्वोच्च सत्ता के प्रतीक-पुरुष हैं, वे भी अपने दुष्कृत्यों के लिए ऋषि-प्रज्ञा द्वारा दंडित होते हैं। राष्ट्र-हित को सर्वोपरि मानने का, रखने का यह भाव भारतीय संस्कृति की महती उपलब्धि है। हमारे हर पूजा-अनुष्ठान में इसी राष्ट्रीय संचेतना को उद्घाटित करती दैवी संपदा का आवाहन मंत्रोच्चार के द्वारा किया जाता है। सबसे पहले नवग्रह-मंडल, फिर 'क्षिति-जल- पावक-गगन-समीरा' पंचमहाभूतों का समुच्चय रूप पृथिवी-मंडल और इन पंचमहाभूतों से सर्जित संपूर्ण प्राणि-सृष्टि, फिर जंबू द्वीपे-भारत खंडे' के भौगोलिक राष्ट्र पुरुष, जिसके सात पर्वत सात नदियाँ हिमशिखर एवं पदतल में आंदोलित सागर उसके दैहिक स्वरूप की संरचना करते हैं, का आवाहन कर उनकी उपासना से ही शुरू होती है हमारी हर पूजा-क्रिया। हमारी राष्ट्रीय अवचेतना 'सर्वे भवन्तु सूखिन:' एवं 'आनो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वत:' के शिवाग्रह से पोषित एवं प्रेरित है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भारत की राष्ट्रीय अस्मिता के इसी सर्वकल्यानी भाव को यों व्याख्यायित किया है--

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भूमण्डल भर का है,
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित आस्वर है।

हाँ, पूरी मानवता के शील की जो वाचक है, वही तो है हमारी राष्ट्रीय अस्मिता। हमारी राष्ट्रीय एकता परिभाषित होती है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मंगलकामना से। 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की जो मानसिकता है, वही है हमारी राष्ट्रीय चेतना एवं एकता का मूलमंत्र और यही है हमारी सांस्कृतिक संचेतना का मूलाधार। आज जब हम राष्ट्र की या उसके उत्थान अथवा विकास की बात करते हैं, तो क्या हम इसी सांस्कृतिक अस्मिता की बात सोचते हैं? राष्ट्रीय एकता के इस सात्त्विक मनोभाव की अभिव्यक्ति स्वातंत्र्योत्तर भारत में कहाँ तक हो पाई है और किस हद तक हम आज की युवा पीढ़ी को इसका

संस्कार दे पाये हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है। आज से पचासेक वर्ष पूर्व जब मैं पढ़ रहा था यानी स्वतंत्रता के नवोन्मेष काल में भी राष्ट्रीय एकता की चिंता हमारे उन दिनों के कर्णधारों को व्यापने लगी थी। राष्ट्रीय एकता दिवस मनाने की बात तभी शुरू हुई थी। राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व-बोध युवा वर्ग में जगाने के उद्देश्य से बाद में राष्ट्रीय सेवा योजना भी स्कूलों एवं कॉलेजों

में लागू की गई। किंतु इन सभी चिंताओं एवं योजनाओं के पीछे कोई स्पष्ट राष्ट्रीय दृष्टि नहीं थी। राष्ट्र की परिकल्पना ही धीरे-धीरे पाश्चात्य प्रभाव के अंतर्गत अधूरी एवं परिदूषित होती गई। सांस्कृतिक एकात्मकता का जो मूल भाव भारतीय राष्ट्र की मनीषा ने उपजाया था, वह धुँधला गया। युवा वर्ग के सामने विकास का जो मॉडल शेष रह गया, वह था विशुद्ध रूप से आर्थिक एवं पदार्थिक। विश्वग्राम की आज की हाटीय व्यवस्था एक पूँजीवादी विकृति से परिचालित हो रही है। आज के युवक के सामने एकमात्र श्रेय रह गई है आर्थिक समृद्धि। जो मानवीय सरोकार सदियों के सभ्य आचरण के माध्यम से विकसित हुए थे, जिन मानुषी आस्तिकताओं को युगों-युगों की सांस्कृतिक संचेतना के तहत पाला-पोसा गया था, उन्हें आज उपेक्षित किया जा रहा है और इसे एक उपलब्धि के रूप में लिया जा रहा है। युवा-चेतना के विकास का सबसे प्रभावी साधन है शिक्षा और उसे संसाधनों के चुस्त एवं कुशल दोहन के प्रशिक्षण तक ही आज परिसीमित कर दिया गया है। तथाकथित आर्थिक उदारवादी दृष्टि के रहते शिक्षा के क्षेत्र में जितनी अराजकता आज व्यापी है, उतनी पहले कभी नहीं थी। आज शिक्षा का एकमात्र प्रयोजन पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए कुशल कार्मिक पैदा करना रह गया है। सामाजिक उत्तरदायित्त्व बोध जैसी भी कोई चीज़ होती है या होनी चाहिए, इसे आज की शिक्षा में पूरी तरह नज़रअंदाज किया जा रहा है। एक उद्देश्यविहीन, आशयमुक्त, संस्कारहीन शैक्षिक परिवेश में सुविधा-संग्रह का कौशल तो हम सीख रहे हैं, किंतु जिससे आत्म-समृद्धि हो, मानुषी आस्थाओं का परिपोषण हो, वह विद्या पूरी तरह उपेक्षित हो गई है।

हमारे शास्त्रों में शिक्षा के संदर्भ में पंच व-कारों के विकास को प्रमुखता दी गई है। ये पंच व-कार हैं वपु यानी शरीर, वेश यानी वस्त्रादि, वैभव यानी प्रभावशालीनता, विद्या एवं विनय। इन पंच संपदाओं के क्रमिक एवं सम्यक विकास से ही व्यक्तित्व का समुचित स्वरूप बन पाता है, ऐसा मानना था भारतीय मनीषियों का। इनमें से 'वपु' और 'वेश' देह के संस्कार हैं यानी इनके माध्यम से दैहिक संपदा विकसित होती है। 'वैभव' व्यक्तित्व में समाहित गुणों के प्रभावशाली प्रदर्शन की कला के प्रशिक्षण से संबंधित है। 'विद्या' मानसिक एवं बौद्धिक विकास की प्रक्रिया है और अंतिम 'विनय' हमारे भावात्मक-आध्यात्मिक उद्भव का द्योतक है। एक संतुलित शिक्षा-पद्धति में इन सभी संपदाओं की प्राप्ति की प्रविधि का प्रशिक्षण निहित है। आज की शिक्षा में अंतिम किंतु व्यक्तित्व की सर्वोत्कृष्ट संपदा 'विनय' की ओर तो कतई ध्यान नहीं है। इसी से अहंभाव से पोषित अन्य सभी संपदाएँ आसुरी वृत्ति को ही पनपा रही हैं। दैवी संपदा और आसुरी संपदा में अंतर इसी 'विनय' नामधारी संपदा के होने या न होने से स्थापित होता है। प्राचीन औपनिषदिक आख्यानों में ऋषि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी के संवाद का प्रसंग आता है। मैत्रेयी ने अपने पति एवं गुरु ऋषि याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछा था कि क्या संसार की सारी संपदा मिल जाने से उसे अमरत्व प्राप्त हो जाएगी। नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने इस उपनिषद् कालीन संवाद को वर्तमान संदर्भ में व्याख्यायित करते हुए कहा है– ''मानवीय परिस्थिति के स्वभाव और भौतिक जगत की सीमाबद्धता को बतलाने के लिए मैत्रेयी का उद्बोधनात्मक प्रश्न भारतीय दर्शन में बार-बार उद्धृत होता रहा है। लेकिन इस वार्तालाप का एक और पक्ष भी है जो एक तरह से आज के संदर्भ में ज़्यादा महत्त्व का है। यह प्रश्न आय और उपलब्धि के बीच, जिन्हें हम खरीद सकते हैं उन चीज़ों और हमारी खुश रहने की वास्तविक क्षमता के बीच, हमारी आर्थिक संपदा और हमारी रुचि अनुसार जीने की क्षमता के बीच के संबंध और उनकी दूरी से संबंधित है। अगर हम स्वाधीन रूप से लंबी और अच्छी ज़िंदगी जीने के इच्छुक हैं, तो हमारा जीवन प्रत्यक्ष रूप से जीवन और मृत्यु पर केंद्रीत होना चाहिए, न कि मात्र संपत्ति और आर्थिक विपुलता पर।'' इसी संबंध में संस्कृत की एक बहुश्रुत सूक्ति मुझे ध्यान आ रही है–

विद्या ददाति विनयं/विनयात याति पात्रताम्
पात्रत्वात धनमाप्नोति/धनात् धर्म ततः मुखपम्

विद्या से विनय, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म एवं धर्म से सुख की प्राप्ति की जो यह पंच-सूत्री प्रक्रिया है, उसी में शिक्षा का मर्म छिपा हुआ है। जो विद्या विनय और जो धन धर्म की ओर उन्मुख नहीं करते, वे भारतीय दर्शन के अनुसार अनर्गल हैं और आसुरी संपदा को ही उपजाते हैं। अपनी युवा पीढ़ी को क्या हम आज ये संस्कार दे पाये हैं? क्या हमारी विद्या विनय की ओर उन्मुख है, क्या हमारा धन-संग्रह धर्म की ओर उन्मुख है? सांस्कृतिक अवचेतनता के इस दुष्काल में तो लगता है कि जैसे ये प्रश्न ही निरर्थक हो गये हैं।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ राष्ट की एकात्मकता सांस्कृतिक अवचेतना से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। यह सांस्कृतिक अवचेतना किसी भी मानव-समुदाय को एकात्म बनाती है और उसी रूप में उस समुदाय की राष्ट्रीय अस्मिता परिभाषित होती है। यह सांस्कृतिक अवचेतना धर्म, संप्रदाय, जाति, क्षेत्र-बोधक सभी संज्ञाओं से ऊपर होती है, किंतु इन सबका संयुक्त बोधन भी करती है। शिक्षा का एक परम उद्देश्य इस सामूहिक सांस्कृतिक संचेतना को जाग्रत रखना एवं पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसे सक्रिय रख कर

समुदाय के परंपरा-बोध को नये संज्ञान से उद्बोधित करते रहना भी है। ऐसा करने स ही समवायी बुद्धिजीवी (organic intellectuals) वर्ग बना रह पायेगा। क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं? 6 मई, 2008 को आई० आई० टी०, खड़गपुर में प्रसिद्ध चिंतक सुदीप बनर्जी आदि टैगोर स्मारक व्याख्यान में युवा संचेतना के विकृत किये जाने के भूमंडलीय षडयंत्र का पर्दाफ़ाश करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के हस्तक्षेप की बात उठाई है। उनके अनुसार, ''भूमंडलीय वित्तीय पूँजी की यह मायावी, आवारा और बेलगाम दुनिया सुरसा की तरह हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के झुंड के झुंड को निगलती जा रही है। हमारे विद्यार्थी अपनी जड़ों से, यहाँ तक कि अपनी मानवीयता से भी दूर होते जा रहे हैं। उन्हें देश के बहुआयामी सरोकारों से विरक्त किया जा रहा है।'' उनका मानना है कि इसका दुष्प्रभाव राष्ट्रीय अस्मिता को भी निष्प्रभ कर रहा है, जिससे 'प्रतासंपन्न देशों की स्वायत्तता' विनष्ट हो रही है, 'पर्यावरणीय

संतुलन और सदियों से सँजोई गई संस्कृतियाँ' ध्वस्त हो रही हैं। ऐसे में युवा संचेतना में राष्ट्र के प्रति, राष्ट्रीय एकता के प्रति ममत्व भाव पैदा हो तो कैसे हो। राष्ट्र की जो एक समुच्चय परिकल्पना हमारी संस्कृति में रही है और जिसका जिक्र मैं ऊपर कर आया हूँ, आज उसे ही विखंडित किया जा रहा है। युवा ऊर्जा का जितना दुरुपयोग आज किया जा रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ। एक ओर वर्तमान पूँजी-केंद्रित अर्थ-संस्कृति में नई-नई उपभोक्ता-वस्तुएँ निरंतर उपजाई जा रही हैं, जिससे युवावर्ग भोगवादी भटकन का शिकार हो रहा है, अनावश्यक भोग--सामग्री का संग्रह करते-करते ऊब और 'बोरडम' जैसी मानसिक विक्षिप्तियों में जीने को विवश हो रहा है, तो दूसरी ओर बाज़ार के नियंत्रक तत्त्व उसे और उसके भाव-जगत को विभिन्न अपसांस्कृतिक दबावों से विच्छिन्न कर रहे हैं। हमारी तथाकथित प्रजातांत्रिक राजनीति ने भी युवा वर्ग को निरंतर दिग्भ्रमित ही किया है। तुलसी बाबा ने कभी कहा था– 'जो कह झूठ मसखरी जाना। कलजुग सोइ गुणवंते बखाना।।' हाँ, आज का समस्त पुरुषार्थ छल-प्रपंच एवं छिछले मनोरंजन तक सीमित रह गया है युवा वर्ग के सामने यही दो आदर्श रह गये हैं। एक ओर है बाज़ार का प्रपंची संसार, तो दूसरी ओर है 'मौजाँ-मौजाँ' का मायाजाल और इन दोनों के बीच में बँटी हुई युवा-संचेतना अभिशप्त है एक झूठी जिंदगी जीने को। समस्या यह है कि आज विकृति को ही संस्कृति माना जा रहा है। फूहड़ अंग-प्रदर्शन एवं भंगिमाओं को ही आज सौंदर्य-बोध की संज्ञा दी जा रही है। ज्ञान का स्थान सूचना ने ले लिया है। ज्ञान न तो आज स्वानुभूत है और न ही स्व० अर्जित। मशीनी उपकरणों से दुनिया-भर की सूचनाएँ तो उपलब्ध हैं, किंतु गंभीर चिंतन-मनन की सहज सांस्कृतिक मानसिक प्रक्रिया की उपेक्षा से ज्ञान सूचनाएँ मात्र तक सीमित रह गए हैं और जहाँ तक रागात्मक अनुभूतियों का प्रश्न है, उन्हें तो गर्हित मानने का उपक्रम किया जा रहा है। राष्ट्रीय एकता की अनुभूति भी इसी कारण आज उपेक्षित हो रही है।

सन् 1947 में आज़ादी के साथ-साथ धर्म के आधार पर भारत के विभाजन से भारत राष्ट्र का व्यक्तित्व भी विभाजित हुआ और उसमें उसकी सांस्कृतिक अस्मिता भी खंडित हुई। सिंधु और सिंध, जिनसे सिकन्दर के आक्रमण के समय से विश्व भर में भारत देश परिभाषित होता रहा, अचानक ही विदेशी हो गये, हालाँकि आज भी हमारे राष्ट्रगान में इनका अस्तित्व विद्यमान है। भारत राष्ट्र की एकता का जो मूल सांस्कृतिक पहलू था, वह उस दुर्घटना से बुरी तरह विचलित हुआ और हमें अपने राष्ट्र को पुन: परिभाषित करने की ज़रूरत पड़ी। उसी से धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत की अवधारणा हुई। किंतु हुआ यह कि हम धर्म-निरपेक्षता की भावना का सही ढंग से निरूपण नहीं कर पाए और राष्ट्रीय एकता को उससे सही प्रकार से जोड़ नहीं पाए। आज भी हम कश्मीरियत, पंजाबियत, मराठा, बंगला, तमिल, असमी, उड़िया जैसी क्षेत्रीय अस्मिताओं से जूझने को विवश हैं। युवा पीढ़ी के सामने हमारे राजनेता इन क्षेत्रीय अस्मिताओं के बरअक्स एक राष्ट्रीय अस्मिता को स्थापित करने में बुरी तरह विफल रहे हैं। नतीजा यह है कि जब हम विदेशों में जाते हैं, तभी भारतीय हो पाते हैं। राष्ट्रीय एकता का प्रश्न एक और उलझाव से जटिल हो गया। संविधान में उल्लखित 'भारत दैट इज़ इंडिया' की दुविधा से हम आज भी जूझ रहे हैं। यानी हमारा राष्ट्र भारत भी है और इंडिया भी। इस भाव से भी राष्ट्रीय एकता आहत हुई है। अधिसंख्य भारतीय होते हुए भी हम इंडियन भी होने को अभिशप्त हैं। यह इंडियन होना बृहत् भारतीय समाज से अलग होना भी है युवा पीढ़ी का अधिसंख्य भारतीय है, किंतु इंडियन होने को लालायित है। विभक्त एवं दुविधाग्रस्त इस देश की युवा संचेतना इसीलिए राष्ट्रीय एकता के प्रश्न को परखने, समझने, उसका उत्तर या समाधान ढूँढ़ने के स्थान पर उससे मुँह चुराने की चेष्टा करती है। युवा संचेतना को यदि हम राष्ट्रीय एकता का संवाहक बनाना चाहते हैं, तो हमें सबसे पहले अपने इन मानसिक भावात्मक सांस्कृतिक अवरोधों और विरोधाभासों को दूर करना होगा। हमारी राष्ट्रीय चेतना के सहज प्रवाह में ये जो रोड़े या रुकावटें हैं, इन्हें दूर किए बग़ैर हम युवा संचेतना में एकात्म राष्ट्रभाव को स्थापित नहीं कर पाएँगे और इसके लिए जो हमारी गंगा-जमुनी सहज साँझी सांस्कृतिक विरासत है, उसे पुन: जाग्रत करना पड़ेगा। काश, हम ऐसा कर पाएँ! आज की विकृत मन:स्थिति का आकलन करते अपने एक गीत से मैं अपनी बात को समाप्त करना चाहूँगा। गीत यों है–

'क्या बतलाएँ
महानगर में / अब-थकन ही हुई ख़ास हैं
कल पार्टी थी / मोना के घर
उसमें नक़ली हँसे ख़ूब सब
आए थे मेहमान / सभी थे
इक-दूजे से बढ़ कर बेढब
खाली प्लेटें–
सेंट्रल टेबिल पर रक्खे / जूठे गिलास हैं
अंदर से खोखले / सभी थे
रंग-बिरंगे चश्मों से थीं
सबने अपनी आँखें ढाँकीं
जलन-ईर्ष्या
नये वक़्त की / और बढ़ गई भूख-प्यास हैं
सुबह हुई / सब खीझ रहे हैं
तैयारी ऑफिस जाने की
वीक-एंड तक / सुनो, चलेगी
कोशिश ख़ुद को भरमाने की
घर भी चुप है
खाली दिन है / मेज़-कुर्सियाँ भी उदास हैं।

हाँ, यही है आज की सभ्यता की उपलब्धि और वर्तमान युवा पीढ़ी की त्रासक नियति। ऐसे में फ़ुर्सत किसे है कि राष्ट्रीय प्रश्नों से जूझे! आसुरी इंद्रजित की मायावी शक्ति से उपजी मूर्च्छा समाप्त हो, तभी तो हमारे युवा लक्ष्मण वीर राष्ट्रहित के लिए सन्नद्ध हो पाएँगे।

❋❋❋

संपर्क : 'क्षितिज', 310, अर्बन एस्टेट-2,
हिसार-125005 हरियाणा
फोन : 01662-247347

छोटकी भौजी

☆ कृष्ण कुमार राय

सरजू ने जबसे छोटे भाई की शादी की, घर का माहौल बदल गया था। छोटकी बहू लछमीना ने आने के साथ गृहस्थी के सारे काम-काज का भार ओढ़ लिया। जेठानी कुन्ती को इस घर में आये आठ साल गुज़र चुके थे, किंतु जल्दी-जल्दी चार संतानें होने से शरीर समय से पहले टूट गया था। बच्चों को पालने-पोसने में ही वह परेशान हो जाती थी। देवरानी का आगमन उसके लिए बहुत बड़ा सहारा बन गया। घर के कामों से छुट्टी मिली और बच्चों की चिंता भी अब अधिक नहीं करनी पड़ती थी। लछमीना उन्हें भी सँभाल लेती थी। बिना माँ बने ही बच्चों के प्रति उसका ममत्व और वात्सल्य देखते बनता था। उसके जैसी खुशमिजाज़ और कामकाजी बहू मिलने से सरजू भी संतुष्ट था। वैसे तो संयुक्त परिवारों में प्राय: देवरानी-जेठानी की अनबन और दिन-रात की किचकिच कलह का कारण बनकर भाई-भाई के बीच भी दरार पैदा कर देती है और एक दिन ऐसा आता है जब पुश्तैनी घर के आँगन में विभाजन की दीवार तक खिच जाती है, किंतु कुन्ती और लछमीना के संबंध में अभी तक खटास की बू-बास नहीं आई थी।

साल भीतर ही लछमीना ने खुद आगे बढ़कर खेती-बारी के कामों में भी हाथ बँटाना शुरू कर दिया। घर के अंदर पल भर भी बेकार बैठे रहना उसे नहीं सुहाता था। गृहस्थी के कामों से छुट्टी पाती तो फ़ौरन खेत-खलिहान में जा पहुँचती, कटनी के समय खेतों से बोझा उठाकर खलिहान में पहुँचाती और दवनी-ओसौनी के बाद अनाज और भूसा ढो-ढोकर खलिहान से घर ले जाती। जबसे वह बाहर निकलने लगी थी, गाँव वालों की निगाहें भी उस पर पड़ने लगी थीं। धोती का पल्लू तो कभी उसके सिर से नहीं सरका, लेकिन घूँघट भी उसने कभी नहीं काढ़ा, जबकि वह बाहर निकलती थीं। रंग थोड़ा दबा होने के बावजूद उसके आकर्षक नाक-नक्श और फैली हुई बड़ी-बड़ी आँखों में काफ़ी कशिश थी और चेहरे से अभी मासूमीयत झलकती थी। बड़े-बूढ़े जहाँ उसकी कर्मठता की सराहना करते थे, वहीं गाँव के युवकों की वह छोटकी भौजी बन गई थी। उसे आते-जाते देखकर छैले उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए कभी सीटियाँ बजाते तो कभी हँसी-ठिठोली कर उसे रिझाने की कोशिश करते, लेकिन ऐसे मनचलों की तरफ़ उपेक्षापूर्ण नज़रों से देखने के सिवाय उसने आजतक किसी को पलट कर जवाब नहीं दिया।

गाँव के प्रधान ठाकुर निर्भय सिंह का इलाके में बड़ा मान-सम्मान और दबदबा था। पचासों एकड़ के बड़े काश्तकार और बारी-बगीचे के स्वामी, लोग अदब से उन्हें बड़े सरकार कहते थे। ट्रैक्टर से लेकर खेती के सारे आधुनिक उपकरण उनके पास थे।

आलीशान दुतल्ला मकान और आधुनिक ढंग से सुसज्जित बैठका उनकी आर्थिक संपन्नता और खुशहाली दर्शाते थे। घर में नौकर-चाकरों की कमी न थी। पढ़ा-लिखा सुसंस्कृत परिवार। दो बेटियों की शादी कर चुके थे और दोनों अपने-अपने घरों में सुखी थीं। बेटा संजय सिंह कृषि विज्ञान का स्नातक था। बाईस वर्ष का युवा, चढ़ती जवानी थी। अभी तक विवाह के बंधन में नहीं बँधा था। लाड़-प्यार में पलने से थोड़ा सिर चढ़ा और शोख़ मिज़ाज हो गया था, लेकिन प्रधान जी का इकलौता बेटा होने के नाते लोग उसे भी आदर से छोटे सरकार कहकर पुकारते थे। गाँव के युवाओं की छोटकी भौजी लछमीना उसकी चुलबुली निगाहों से भला कबतक बची रह सकती थी। एक दिन लछमीना जब अपने खेत से गन्ने का भारी गट्ठर सिर पर लादे कोल्हाड़ की तरफ़ जा रही थी, उसी समय बीच रास्ते में संजय सिंह उसके सामने पहुँच कर बोला, ''इस बार सरजू भैया के खेत का गन्ना बड़ा दमदार हुआ है। देखकर चूसने के लिए मन ललचा रहा है। कहो तो एक गन्ना खींचकर निकाल लूँ छोटकी भौजी?''

आते-जाते लछमीना की नज़र प्राय: छोटे सरकार पर पड़ती थी और वह उन्हें पहचानती भी थी, लेकिन आजतक कभी बातें करने का संयोग नहीं हुआ था। सकुचाती हुई वह बोली, ''गन्ना चूसने को भला कौन मना करेगा छोटे सरकार, जितना जी चाहे चूसिये। लेकिन बोझा भारी है, यहाँ खींचकर निकालने से गिर जायगा। कोल्हाड़ में चलकर एक नहीं दो-चार ले लीजिए।''

''अरे, कोल्हाड़ तक कौन जायेगा भौजी। तुम ज़रा देर रुक जाओ तो मैं धीरे स एक गन्ना खींच लेता हूँ। मुझे इतना अनाड़ी न समझो भौजी कि बोझा गिरा दूँगा।''

लछमीना जहाँ की तहाँ ठिठक गई और दबी ज़बान से बोली, ''आपकी यही इच्छा है तो निकाल लीजिए छोटे सरकार। लेकिन ज़रा सँभालकर खींचियेगा, गट्ठर कसकर बँधा है।''

संजय सिंह ने हाथ उठाकर एक गन्ना खींचना चाहा, लेकिन गट्ठर सचमुच मज़बूती के साथ बँधा हुआ था। गन्ना तो नहीं निकल सका, अलबत्ता ऐसा झटका लगा कि लछमीना का संतुलन बिगड़ गया और बोझा उसके सिर से नीचे गिर पड़ा। संयोग अच्छा था कि लड़खड़ाने के बाद भी वह सँभल गई। कहीं वह भी गिरकर बोझे के नीचे आ जाती तो अनर्थ हो जाता। संजय सिंह भौचक्का-सा खड़ा उसका मुँह ताकने लगा, मानो उससे भारी अपराध हो गया हो।

लछमीना ने चुटकी लेते हुए कहा, ''छोटे सरकार, चूक अनाड़ियों से ही नहीं, बड़े-बड़े खिलाड़ियों से भी हो जाती है। मैं पहले कह रही थी कि बोझा भारी है, गिर

जायगा, लेकिन आप नहीं माने। अच्छा छोड़िये, अब तो गट्ठर गिर ही गया। एक नहीं, दो-चार गन्ना खींचकर निकाल लीजिए। बोझा थोड़ा हलका भी हो जायगा।''

माफ़ करना भौजी, मुझसे गलती हो गई। दो-चार गन्ना लेकर मैं क्या करूँगा। कह रही हो तो एक निकाल लेता हूँ। उसी को चूसते-चूसते अघा जाऊँगा। हाँ, बोझा मेरी नादानी से गिरा है, इसलिये उसे उठवाना मेरा फ़र्ज़ है। लाओ, उठवा देता हूँ।''

''अरे नहीं छोटे सरकार, भला आप बोझा उठावेंगे। एक गलती तो नासमझी से कर बैठे। अब दूसरी गलती मत कीजिए। कहीं कमर चटक गई तो मुसीबत में पड़ जाइयेगा।''

''यह क्या कह रही हो भौजी! जब इतना भारी बोझा ढोने से तुम्हारी गर्दन नहीं चटकी तो उसे उठाने में मेरी कमर कैसे चटक जायगी। लाला-बनिया की औलाद नहीं हूँ भौजी, ठाकुर का बेटा हूँ। देखती रहो, बोझा कैसे उठाता हूँ।'' लछमीना रोकती ही रह गई, लेकिन छोटे सरकार ने झुककर दोनों हाथों से अकेले ही गट्ठर उठाकर फिर लछमीना के सिर पर रख दिया। लछमीना ने एक बार झुकी हुई शरमायी नज़रों से छोटे सरकार की ओर देखा और मुस्कुरा दी। छोटे सरकार गर्व से इठलाते गन्ना चूसते हुए आगे बढ़ गये। लछमीना चुपचाप अपने कोल्हाड़ की तरफ़ चल दी।

संयोग से उसी समय सरजू अपने गन्ने के खेत की तरफ़ जाने के लिए निकला था उसने छोटे सरकार को बीच रास्ते में लछमीना से बातें करते और फिर गन्ने का गट्ठर उसके सिर पर लादते दूर से देख लिया। उसे छोटे सरकार की यह हरकत बहुत बुरी लगी। तेज़ कदम बढ़ाता हुआ वह लछमीना के पास पहुँचा और बड़ी रुखाई के साथ पूछा, ''क्यों रे छोटी, यह छोटे सरकार यहाँ क्या कर रहे थें?''

जेठ जी को सामने देखकर लछमीना सकपका गई। दबी जुबान से बोली, ''दादा जी वह रास्ते में रोककर चूसने के लिए गन्ना माँगने लगे। मैंने कहा कि बोझा भारी है, गिर जायगा। कोल्हाड़ में चलकर ले लीजिए। लेकिन वह ज़िद करके गट्ठर से गन्ना खींचने लगे। झटका लगने से बोझा नीचे गिर पड़ा। मेरे मना करने पर भी उन्होंने गट्ठर उठाकर फिर मेरे सिर पर रख दिया।''

सरजू को बहू की बातों पर कितना यक़ीन हुआ, यह तो पता नहीं, लेकिन उसने झुँझलाकर कहा, ''यह तो ठीक नहीं। छोटे सरकार को इस तरह रास्ते में गाँव की बहू-बेटियों को नहीं छेड़ना चाहिए। उन्हें गन्ना चूसना था तो खेत या कोल्हाड़ में जाकर ले लेते। मैं प्रधान जी से कहूँगा कि छोटे सरकार को समझा दें।'' फिर पलभर रुककर उसने बहू से पूछा, ''तुमको तो कहीं चोट-चपेट नहीं लगी?''

''नहीं दादा जी, मुझे कुछ नहीं हुआ। अगर कोई दूसरा होता तो मैं हरगिज़ गट्ठर में हाथ न लगाने देती, लेकिन छोटे सरकार का लिहाज़ करके ख़ामोश रह गई।''

''अच्छा छोड़ो, जो हुआ सो हुआ। गट्ठर कोल्हाड़ में पहुँचा कर घर चली जाना।''

लछमीना ने घर पहुँचकर जब रास्ते में

घटित घटना के बारे में जेठानी को बतलाया तो वह मुस्कराकर बोली, ''अरे छोटी, जानती नहीं। यह छोटे सरकार बड़े रसिया हैं। कभी-कभी आते-जाते हमसे भी हँसी-ठिठोली करते हैं, लेकिन हैं दिल के साफ़। अभी चढ़ती जवानी है न। शादी भी नहीं हुई है। लाड़-प्यार में पले बड़े घर के बेटे हैं उनकी बातों का बुरा नहीं मानना।''

उस दिन की बात तो वहीं ख़त्म हो गई, लेकिन दुर्भाग्य ने लछमीना का पीछा नहीं छोड़ा। पखवारे भर बाद ही एक दिन जब संजय सिंह सिवान से गाँव की तरफ़ लौट रहा था तो उसकी निगाह अपने मटर के खेत में अकेली बैठी छीमी तोड़ रही लछमीना भौजी पर पड़ गई। मटर की यह अगती फ़सल सरजू और बिरजू ने बड़े जतन और परिश्रम से तैयार की थी। दूसरे-तीसरे दिन चार-पाँच पसेरी फलियाँ निकल आती थीं। दोपहर बाद लछमीना खेत में जाकर छीमियाँ तोड़ती और घर ले आती। अगले दिन सरजू या बिरजू उसे साइकिल से ले जाकर सट्टी में बेच आते। इससे अच्छी नक़द कमाई हो रही थी। खेत की मेड़ के पास पहुँचकर संजय सिंह बोला, ''इस बार तुम्हारे खेत में छीमी बहुत जल्दी तैयार हो गई छोटकी भौजी। अभी तो बाजार में बहुत मँहगी बिक रही है। हरी-हरी फलियाँ देखकर खाने का मन हो रहा है।''

लछमीना ने सिर उठाकर देखा तो दस पग दूर छोटे सरकार खड़े थे। उसने सकुचाते हुए दबी ज़बान से कहा, ''रूमाल हो तो ले लीजिए छोटे सरकार। थोड़ी सी नरम-नरम फलियाँ गठिया देती हूँ, रास्ते में खाते जाइये।''

''खेत की मेड़ पर बैठकर हरी-हरी छीमियाँ खाने का मज़ा कुछ और होता है छोटकी भौजी। अगर बुरा न मानो तो यही डाँड़ पर बैठकर दस-बीस फलियाँ खा लूँ।''

''अगर किसी ने आपको यहाँ बैठकर इस तरह छीमियाँ खाते देख लिया तो क्या कहेगा। छोटे सरकार!''

''कहेगा क्या भौजी! खेत से फलियाँ तोड़कर खाना कोई गुनाह तो नहीं। मैं यहाँ खेत उजाड़ने नहीं आया हूँ। दस-बीस फलियाँ खाकर चला जाऊँगा। तुम अपना काम करो न। उसमें कोई बाधा न पड़ेगी।''

''मैं छीमी खाने को नहीं मना कर रही हूँ छोटे सरकार। आपकी इज्जत का ख्याल करके मन सकुचा रहा है।''

''अरे मैं भी इसी गाँव की माटी में पला-बढ़ा हूँ भौजी। खेत से छीमी तोड़कर खा लेने से मेरी इज्जत में बट्टा नहीं लग जाएगा। तुम क्यों चिंता करती हो।''

इस तर्क का भला लछमीना क्या जवाब देती। छोटे सरकार को यह बतलाकर अपनी किरकिरी नहीं कराना चाहती थी कि उस दिन उन्हें गन्ने का गट्ठर उठाकर उसके सिर पर लादते जेठ जी ने देख लिया था और वह बहुत नाराज़ हो रहे थे। वह सिर नीचा किए चुपचाप अपने काम में इस तरह लग गई मानो उसे छोटे सरकार की उपस्थिति का भान ही न हो। उधर छोटे सरकार मेड़ पर बैठकर छीमियाँ छील-छीलकर खाने लगे।

संयोग से गाँव के दो युवक उसी समय कॉलेज से घर लौट रहे थे। दोनों एक ही

साइकिल पर सवार थे। लालता साइकिल चला रहा था और भोला पंडित आगे डंडे पर बैठा था। जब उन्होंने छोटे सरकार को सरजू भैया के खेत के डाँड़ पर बैठकर छीमी खाते देखा तो चौक पड़े, लेकिन ज्योंहि उनकी निगाह खेत में बैठी छीमियाँ तोड़ रही छोटकी भौजी पर पड़ी, तो माजरा समझ में आ गया। लालता ने भोला पंडित से कहा, ''देख रहे हो दोस्त यह मोहब्बत का खेल। यहाँ बहरी तरफ़ चुपके-चुपके इश्कबाजी चल रही है छोटकी भौजी से हमलोग कभी कुछ बोल देते हैं, तो वह इस तरह मुँह बिचका कर आँखें फेर लेती है मानो हम निरे लंपट-लफंगे हों और वह कलयुग की अकेली सती-सावित्री। लगता है उन्हें अपने रूप पर बड़ा गरूर है। कहीं गोरी चमड़ी होती तो न जाने क्या सितम ढाती। लेकिन आज सारी करनी उजागर हो गई। उनका घमण्ड चूर करने का यह सुनहरा मौका है दोस्त। चलो, चलकर बिरजू भैया से कहते हैं कि जरा खेत में जाकर भौजी की करतूत अपनी आँखों से देख लें।''

भोला पंडित ने भी हाँ में हाँ मिलाया और दोनों सीधे बिरजू भैया के घर जा पहुँचे। बिरजू तो घर में था नहीं, लेकिन बड़े भाई सरजू से भेंट हो गई। उसे जब अपने मटर के खेत में लछमीना के संग छोटे सरकार की उपस्थिति की जानकारी मिली तो वह क्रोध से तिलमिला उठा। गुस्से से तमतमाया फ़ौरन खेत की तरफ़ चल पड़ा। दोनों लौंडे तो आग लगाकर वहाँ से चुपचाप खिसक गये, लेकिन सरजू ने जब खेत के समीप पहुँचकर देखा तो सचमुच छोटे सरकार मेड़ पर बैठे आराम से छीमी छील-छीलकर खा रहे थे। थोड़ी ही दूर पर लछमीना भी बैठी छीमी तोड़ रही थी। यह दृश्य देखकर सरजू के ज़ेहन में पन्द्रह दिन पहले की वह घटना ताज़ा हो गई जब उसने छोटे सरकार को बीच रास्ते में खड़े होकर लछमीना से बातें करते और फिर गन्ने का गट्ठर उठाकर उसक सिर पर लादते अपनी आँखों से देखा था। आज की घटना से उसके मन के किसी कोने में समाया यह संदेह पोख़्ता हो गया कि दोनों के बीच गुपचुप कुछ चक्कर चल रहा है। घर की इज्ज़त पर इस तरह बट्टा लगते देख वह आपे से बाहर हो गया। छोटे सरकार से कुछ कहना तो उसने मुनासिब नहीं समझा, लेकिन लछमीना को डपटते हुए बोला, ''ओ छोटी, छीमी की टोकरी उठा और फौरन घर चली जा। आइन्दा तुझे इधर आने की जरूरत नहीं।''

जेठ जी का यह तेवर देखकर लछमीना काँप उठी। काटो तो शरीर में खून नहीं। एक शब्द भी बोलने की हिम्मत न हुई। चुपचाप टोकरी सिर पर रखी और घर की राह पकड़ी।

संजय सिंह ने जब बेगुनाह लछमीना पर अनायास गाज गिरते देखा तो उसे बड़ा नागवार लगा। लछमीना का कोई दोष नहीं था। यह तो खुद उसी की ढिठाई का नतीजा था कि उस बिचारी को नाहक जलील होना पड़ा। उसने आवेश में सरजू भैया से कहना चाहा कि छोटकी भौजी तो उसे बार-बार मना कर रही थी, लेकिन वही जिद करके खेत के डाँड़ पर छीमी खाने बैठ गया। फिर

यह सोचकर वह खामोश रह गया कि कहीं सरजू भैया उसकी बातों का कुछ दूसरा मतलब न समझ लें। वह चुपचाप मेड़ से उठा और सिर लटकाये दूसरी तरफ चल दिया।

घर पहुँचकर सरजू ने लछमीना की जो लानत-मलामत की उसे विस्तार से बतलाने में तो कथा लंबी हो जायगी। बिचारी भींगी बिल्ली बनी सबकुछ सुनती और सहती रही। सरजू का क्रोध शांत होने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह आवेश में बड़बड़ाता जा रहा था-''...अगर तेरी नीयत में खोट न होती तो खेती के काम के बहाने घर से बाहर निकलने के लिए इतनी उतावली न रहती। पाप-कर्म अधिक दिन नहीं छिपता। आखिर आज पोल खुल गई। जब अपना ही सिक्का खोटा हो तो दूसरे को क्या कहा जाय। लेकिन कान खोलकर सुन ले, उस छोटे सरकार को भी छोड़ूँगा नहीं। गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत के साथ खिलवाड़ करने का मजा उन्हें भी चखाकर रहूँगा। गाँव में कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ूँगा।''

अभी सरजू अपना गुस्सा उतार ही रहा था कि इतने में बिरजू भी आ पहुँचा। जब उसे सारा क़िस्सा मालूम हुआ तो वह भी बड़े भाई के स्वर में स्वर मिलाता हुआ लछमीना पर बरस पड़ा। घर में अगर कोई लछमीना के बचाव में खड़ा था तो वह अकेली कुन्ती थी। वह बार-बार कह रही थी- ''मैं इतने दिनों से छोटी को देख रही हूँ। उसके चरित्र पर लांछन लगाना ठीक नहीं। छोटे सरकार की तो आदत है कि गाँव की भौजाइयों से हँसी-ठिठोली करते रहते हैं। वह स्वभाव से मजाकिया जरूर हैं, लेकिन कभी किसी के साथ बदसलूकी नहीं की।''

दोनों भाई इस समय इतने गुस्से में थे कि कुन्ती की कोई बात सुनने को तैयार न थे। उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि आँखों देखी घटनाओं को किसी प्रमाण की ज़रूरत नहीं। नतीजा यह हुआ कि लछमीना के घर से बाहर निकलने पर पूरी तरह पाबन्दी लगा दी गई। लछमीना तो इस समय इतनी डरी-सहमी हुई थी कि अपनी सफ़ाई या प्रतिवाद में एक शब्द भी बोलने का साहस नहीं हुआ।

सदैव ख़ुशी-ख़ुशी घर का सारा काम-काज करने वाली लछमीना का मन आज इतना दुखी हो गया कि उसे खाना पकाने की भी सुधि न रही। यदि उसका तनिक भी क़सूर होता तो वह सब कुछ सुन और सह लेती लेकिन इस तरह लांछन लगाया जाना उसके लिए असह्य हो गया। वह जाकर चुपचाप बाँहों में मुँह छिपाये ओसारे में पड़ रही। कुन्ती ने खाना पकाया, सबको खिलाया, लेकिन जब खुद खाने की बारी आई तो पहले रूठी देवरानी को मनाने पहुँची। उसने बहुत मान-मनौअल किया लेकिन लछमीना टस से मस न हुई। वह न उठी और न कुछ बोली। बस मुँह छिपाये पड़ी सिसकियाँ भरती रही। हारकर कुन्ती ने कहा, ''सुन लो छोटी, अगर तुमने मेरी बात न मानी और खाने के लिए न उठी तो मैं भी भूखी सो जाऊँगी।'' लेकिन जेठानी के इस आत्मीयतापूर्ण अनुनय का भी लछमीना पर कोई प्रभाव न पड़ा। आज पहली बार अपने प्रति छोटी की इस उदासीनता से कुन्ती के मन

में इतना क्लेश हुआ कि वह भी बिना खाये-पिये जाकर पड़ रही।

दूसरे दिन सुबह जब कुन्ती सोकर उठी, तो देखा कि घर में छोटी का कहीं पता न था। वह घबराई हुई सरजू के पास पहुँची और उसे भी बतलाया। सुनते ही घर में कोहराम मच गया। हो-हल्ला सुनकर बिरजू भी उठ बैठा। सरजू ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "अरे, जाएगी कहाँ वह कुल-बोरनी। उसी प्रधान के लौंडे के साथ साँठ-गाँठ करके कहीं भागी होगी। देखो, मैं अभी पता लगाता हूँ।"

सरजू ने पड़ोस के एक लड़के को प्रधान जी के घर जाकर चुपचाप यह पता करने को कहा कि छोटे सरकार वहाँ मौजूद हैं या नहीं। थोड़ी ही देर में लड़के ने लौटकर बतलाया कि छोटे सरकार घर के सामने चबूतरे पर बैठे दतुअन-कुल्ला कर रहे हैं। सुनकर सरजू की पेशानी पर बल पड़ गया। उसका क़यास ग़लत निकला। सामने खड़े बिरजू से वह बोला, "तुम्हारी औरत ने तो आज नाक कटा दी। ऐसा करो कि तुम जल्दी से साइकिल उठाकर ससुराल चले जाओ और देखो कि कहीं वह हरामजादी वहाँ पहुँचकर अपने महतारी-बाप से तो इधर-उधर की बातें नहीं कर रही है।"

बिरजू ने चटपट कपड़े बदले, साइकिल निकाली और ससुराल की राह पकड़ी। पाँच-छ: मील की बात थी। तीन घंटे में ही वह लौटकर वापस भी आ गया। उसके साथ ही लछमीना के बाबू भी घबराये हुए आ पहुँचे। सारा दिन सभी लोग इधर-उधर नाते-रिश्तेदारी की ख़ाक छानते रहे, लेकिन लछमीना का कहीं पता न चला। इसी उधेड़-बुन में तीन दिन गुज़र गये। चौथे दिन कुन्ती जब अपने मटर के खेत में गई तो देखा कि एक ओर बिरजू का अँगोछा लुँडिया कर फेंका हुआ है। उसने मन में सोचा कि बिरजू तो इधर आया नहीं, फिर अँगोछा यहाँ कैसे आया। उत्सुकतावश उसने अँगोछा उठाकर देखा तो उसमें छोटी के कतरे हुए लंबे बाल लुँडियाये हुए थे। अँगोछा उसी तरह लिये वह भागती हुई घर पहुँची। वहाँ जब सरजू और बिरजू ने गमछे में लुँडियाये छोटी के बाल देखे तो उनका भी माथा ठनका। अब उन्हें इस बात में तनिक भी संदेह नहीं रहा कि छोटी ने डाँट-फटकार से आहत होकर आवेश में अपने केश कतर डाले और उसे गमछे में लुँडिया कर खेत में फेंक दिया। फिर उसने कहीं ताल-पोखर या कुएँ में छलांग लगाकर जान दे दी होगी। लछमीना घर से न तो कोई कपड़ा-लत्ता ले गई थी और न गहना-ज़ेवर। हाँ, उसके गले में पड़ा मंगल-सूत्र ज़रूर घर में कहीं नहीं दिखालाई पड़ा। सारी परिस्थितियाँ आत्म-हत्या की ही ओर संकेत कर रही थीं। घर के सारे प्राणी माथा पीटकर रह गये।

लछमीना के अचानक घर से लापता होने की ख़बर सारे गाँव में दावानल की तरह फैल चुकी थी। सुनने वाले सभी हैरान थे। लोग तरह-तरह के क़यास लगा रहे थे। संजय सिंह को छोड़कर असलियत किसी और को पता न थी। मटर के खेत में सरजू भैया की तनी हुई भृकुटि और तेवर वह अपनी आँखों से देख चुका था। उसे यह अनुमान लगाने में देर न लगी होगी कि घर में पुन:

प्रताड़ना का शिकार होने के कारण ही छोटकी भौजी ने घर छोड़ने या आत्म-हत्या करने का घातक रास्ता चुना होगा। उधर सरजू, बिरजू और कुन्ती बिल्कुल चुप्पी साधकर बैठक गये थे। उनके मन में यह भय समा गया था कि यदि छोटी को प्रताड़ित किये जाने की बात कहीं उजागर हो गई तो मामला तूल पकड़ सकता है और वे भारी मुसीबत में फँस सकते है। थाना-पुलिस के चक्कर से वे बहुत घबराते थे।

संजय सिंह को छोटकी भौजी के इस तरह घर से लापता हो जाने की घटना से गहरा सदमा पहुँचा था। वह मन ही मन अपने को कोसता रहता था कि उसी की छोटी-सी नादानी इतने बड़े दर्दनाक हादसे का कारण बन गई। एक बार फिर उसके मन में आया कि जाकर सरजू भैया को बतलावे कि छोटकी भौजी बिल्कुल निर्दोष थी। उसक मना करने पर भी वह स्वयं जिद करके छीमी खाने के लिए डाँड़ पर बैठ गया था। इसके लिए भौजी पर किसी तरह का संदेह करना और उसे डाँटना-फटकारना उचित नहीं था। लेकिन फिर उसने सोचा कि जब छोटकी भौजी रही ही नहीं तो किसके लिए यह सफ़ाई दे। अत: मन मारकर वह ख़ामोश रह गया और बात वहीं समाप्त हो गई।

दिन गुज़रते देर नहीं लगती। एक साल बीता, दो साल बीता, लेकिन लछमीना का न तो कोई सुराग़ लगा और न उसकी मृत्यु का ही कोई विश्वसनीय प्रमाण सामने आया। सरजू और बिरजू की गृहस्थी दिनो-दिन चौपट होती जा रही थी। आख़िरकार बिरादरी के पंचों से राय करके सरजू ने छोटे भाई की दूसरी सगाई कर दी। धीरे-धीरे लछमीना की याद अतीत के गर्त में समाकर धुँधली पड़ने लगी। गाँव के लोग भी उसे मृत मानकर भूलते गए। यदि किसी के दिल और दिमाग़ में अब भी उसकी स्मृति अमिट बनी हुई थी तो वह अकेला संजय सिंह था। आज भी वह अपने को ही उस निर्दोष अभागिन औरत की भरी जवानी में मौत का जिम्मेदार मानता था। अब वह न तो किसी सें अधिक मिलना-जुलना पसंद करता और न गाँव के प्रपंचों से ही कोई सरोकार रखता। बस अपने काम से काम रखता था।

धीरे-धीरे चालीस साल का लंबा ज़माना गुज़र गया। एक समय गाँव के प्रधान रह चुके तब के बड़े सरकार स्वर्गीय ठाकुर निर्भय सिंह को गाँव की नई पीढ़ी बिल्कुल भूल चुकी थी। पुराने छोटे सरकार यानी ठाकुर संजय सिंह कबके बड़े सरकार बन चुके थे। शादी तो उनकी पच्चीस साल की उम्र में हो गई थी, किंतु अबतक संतान का मुँह न देख सके। वंश की अगली कड़ी टूटती देख ठाकुर बहुत उदास रहते थे। खेती के अतिरिक्त अन्य धंधों को उन्होंने समेट कर अब अपने कार्यक्षेत्र का दायरा काफ़ी सीमित कर लिया था। खेती का काम भी कुछ पुराने विश्वासपात्र सेवकों के भरोसे चल रहा था। इधर कई वर्षों से ठाकुर और ठकुराइन का अधिकतर समय धरम-करम और पूजा-पाठ में व्यतीत होता था।

गर्मियों के दिन थे। ठाकुर संजय सिंह अपनी धर्म-पत्नी के साथ तीर्थ-यात्रा पर

निकले थे। इसी क्रम में काशी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा आदि तीर्थों का भ्रमण करते हुए वे हरिद्वार पहुँचे। गंगा-तट के समीप एक अतिथि-गृह में कमरा लिया। इस रमणीक स्थल पर तीन-चार दिन रुकने का कार्यक्रम था। एक दिन संध्या समय ठाकुर अपनी पत्नी के साथ गंगा मैया की आरती देखने घाट पर गए हुए थे। वहाँ से लोटते समय अचानक किसी वृद्ध महिला की काँपती हुई धीमी आवाज़ पीछे से ठाकुर के कानों में पड़ी, ''छोटे सरकार, ज़रा सुनियेगा।'' सुनकर संजय सिंह चौंक पड़े। 'छोटे सरकार' के संबोधन से पुकारने वाली यह वृद्धा कौन हो सकती है? संजय सिंह ने मुड़कर पीछे देखा और पहचानने की कोशिश की। एक अत्यंत बूढ़ी महिला, जिसके सिर के बाल मुड़े हुए थे और झुर्रियों से भरे शरीर में केवल हड्डियों का ढाँचा मात्र शेष रह गया था, एक लठिया के सहारे झुकी हुई खड़ी थी। संजय सिंह ने बड़ी विनम्रता के साथ पूछा, ''आप कौन हैं माँ जी? क्या आपने मुझको पुकारा है?''

''छोटकी भौजी!'' यहाँ और इस अवस्था में? नहीं-नहीं, मेरी आँखें धोखा नहीं खा सकतीं। छोटकी भौजी न तो झूठे लांछन से आहत होकर उसी समय आत्म-हत्या कर ली थी। अगर जीवित होती तो अभी इतनी बूढ़ी भला कैसे हो जाती। ''सच बतलाइये माँ जी, आप कौन है?''

लंबी साँस खींचती हुई वह कृश-काय वृद्धा फिर बोली, ''विश्वास कीजिए छोटे सरकार वही कलंकिनी भौजी आपके सामने खड़ी है। दुर्दिन के थपेड़े सहते-सहते इस स्थिति में पहुँच गई है। यह देखिये, बचपन में हाथ पर गुदा नाम।'' कहते-कहते वृद्धा ने अपना बायाँ बाज़ू धीरे से ठाकुर संजय की ओर फैला दिया।

नीले अक्षरों में बाज़ू पर 'लछमीना' खुदा देखते ही ठाकुर संजय सिंह के आश्चर्य की सीमा न रही। वह एकटक भौजी का चेहरा निहारने लगे मानो फिर से उसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों।

''लगता है अब भी आपके मन में कुछ शंका शेष रह गई है छोटे सरकार!''

''नहीं भौजी, अब कोई संदेह नहीं रहा, लेकिन आँखों के सामने तुम्हें खड़ा देख कर मन में तूफ़ान ज़रूर उठ खड़ा हुआ है। आख़िर इतने दिनों तक तुम कहाँ अज्ञातवास करती रही? सारा गाँव तो तुम्हें चालीस साल पहले ही मृत मान चुका था।''

लड़खड़ाती आवाज़ में वृद्धा ने उत्तर दिया, ''क्या बतलाऊँ छोटे सरकार, अपनों का विश्वास खोने के बाद सबकी नज़रों से गिर कर लानत भरी जिंदगी जीना या कहीं डूब मरना, दो ही रास्ते मेरे सामने रह गये थे। काफ़ी सोच-विचार के बाद मैंने दूसरा रास्ता चुना और उस रात इसी पक्के इरादे के साथ मैं घर से बाहर निकली भी थी, लेकिन किस्मत में अभी कुछ और ठोकर खाना लिखा था।'' ... कहते-कहते वह अचानक ख़ामोश हो गई। कोटरों में धँसी उसकी सूनी आँखें थोड़ी देर तक एकटक शून्य में अँटकी रहीं। फिर कुछ सँभल कर आहें भरती हुई वह बोली, ''कहाँ अपना वह गाँव और कहाँ हरिद्वार! दोनों के बीच की गाथा बहुत लंबी है छोटे सरकार! ... लेकिन अब खड़ा नहीं रहा जा रहा है। पैर लड़खड़ा रहे हैं। थोड़ी देर कहीं बैठ जाइये तो बतलाती हूँ।''

भौजी की दर्द भरी बातों ने ठाकुर की उत्कंठा बढ़ा दी। वह थोड़ा आगे बढ़े और सहारा देकर भौजी को वहीं सीढ़ी पर बैठाना चाहा, लेकिन इसी बीच उसके साथ से सहसा लठिया छूटकर नीचे गिर पड़ी। लठिया उठाने के लिए ठाकुर नीचे झुके ही थे कि इतने में भौजी भी अचानक पछाड़ खाकर धराशायी हो गईं। ठाकुर ने समझा कि लठिया का सहारा छूट जाने से भौजी अपने को सँभाल न सकी और गिर पड़ी। उन्होंने भौजी को दोनों बाँहों पर उठाकर सीढ़ी पर बैठाना चाहा, लेकिन उसका शरीर बाँहों पर ही निस्पन्द लटका रह गया। शीश भी एक ओर झूल गया। घबराकर ठकुराइन और क़रीब आ गईं। उन्होंने तुरन्त वृद्धा की छाती पर हाथ फेरकर देखा तो हृदय की धड़कन बंद हो चुकी थी। वक्ष का आँचल सरक जाने से वृद्धा के गले में लटक रहा एक लाकेट उघर गया जिस पर अंकित था-'संवासिनी- सेठ गिरधर दास निरारित नारी निकेतन, हरिद्वार।'

ठाकुर और ठकुराइन भौचक्के से खड़े एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उनकी भाव-भंगिमा बतला रही थी कि वृद्धा की जीवन-लीला समाप्त होने का एहसास उन्हें हो चुका है। ठाकुर की आँखें सहसा सजल हो उठीं और मुँह से अनायास निकल पड़ा-''आह! चालीस वर्षों का दुख-दर्द कलेजे में ही समेटे छोटकी भौजी चली गई। उसकी लंबी जीवन-गाथा हमेशा के लिए रहस्य के परदे में ढँकी रह गई।''

ठकुराइन ने भारी मन से अपने हाथों का सहारा दिया और दोनों ने मिलकर भौजी के शव को वहीं घाट की सीढ़ी पर लिटा दिया। थोड़ी देर तक ठाकुर चुपचाप हथेली पर सिर टिकाए शव के पास बैठे अतीत की यादों में खोये कुछ सोचते रहे। फिर ठकुराइन को शव के पास छोड़कर उठ खड़े हुए और सिर लटकाए नारी निकेतन के प्रबन्धक को उनकी एक वृद्धा संवासिनी की दुःखद मृत्य की सूचना देने के लिए धीरे-धीरे घाट की सीढ़ियों पर चढ़ने लगे।

❋❋❋

संपर्क: 'कृष्ण-कुंज', ब्धव प्रदीप कुमार राय, पो० बॉ० नं०-2037,
सी०-21/3, (होटल हिन्दुस्तान इंटरनेशनल कम्पाउंड)
वाराणसी- 221002 (उ०प्र०)

दस्तो बाज़ू

✯ डॉ॰ शाहिद जमील

गमी के मौसम की यह चौथी लेकिन सबसे बड़ी आँधी थी। दोपहर से ही आसमान कई बार अपना रंग-रूप बदल चुका था। शाम के वक़्त तो ऐसा लगने लगा था जैसे प्रलयकारी लाल आँधी आ रही है या फिर क्षितिज पर आत्मघाती हमलों में लाखों बेगुनाहों का ख़ून बहा है। देखते ही देखते लालिमा काले बादलों में गुम हो गई और बादल इस तरह उमड़ने लगे जैसे किसी ने अजगर का सिर कुचलकर छोड़ दिया हो। जल्दी-जल्दी ज़ुबैदा बीबी ने जलावन उठाते हुए कहा,

''दुल्हन! बाहर आकर आसमान तो देखो। ख़ुदा का जलाल (तेज) साफ़ नज़र आ रहा है। वह अपनी नाराज़गी इसी तरह जतलाता है ... हम भी तो दीन (धर्म) से दूर और दुनिया से चिपके हुए हैं।''

''मुझसे नहीं देखा जाएगा। अब आप भी कमर में चली जाएँ।''

''बस, चूल्हे की आग बुझा दूँ।''

ज़ुबैदा बीबी चूल्हे की आग बुझा रही थीं कि उनके पल्लू में आग लग गई। पहले थप्पड़ फिर चप्पल मार-मारकर उन्होंने आग तो बुझा ली थी, लेकिन चिंता की आग से उनका वजूद धू-धू जलने लगा। बहू को अर्द्धजला पल्लू दिखलाते हुए उन्होंने कहा,

''दुल्हन! तुम भी ख़ुदा से ख़ैर माँगो ... आँचल का जलना अच्छा शगुन नहीं। कई दिनों से बाँईं आँख फड़क रही है ... झपकी में भी बुरे ख़ाब आने लगे हैं। मेरे लाल को अल्लाह अपने अमान (संरक्षण) में रखे। अब तो घर भागते लोगों पर भी क़हर ढाया जाने लगा है। ख़ुदा जाने कौन-कौन सा दिन देखना बाक़ी है। ...''

''यह भी एक सियासी हथकंडा है, सस्ती शोहरत हासिल करने का एक भोंडा (भद्दा) तरीक़ा। अब उनकी समझ में भी आ चुका है कि फ़िर्क़ावाराना फ़साद (सांप्रदायिक दंगा), बाबरी मस्जिद का तनाज़ा (विवाद) और दहशतगर्दी के हथियार नाकारे हो चुके हैं। इसीलिए सूबाई तफ़रीक़ (क्षेत्रीय भेद-भाव) और नस्ली मुनाफ़रत (जातीय नफ़रत) फैलाई जा रही हैं। ...''

''अगर सभी इसी राह पर चल निकले तो?''

''ऐसा नहीं होगा। देखती नहीं, अब दंगों और सीरियल बम धमाकों के बाद भी लोग एकजुट रहते और सब्रो तहम्मुल (धैर्य) से काम लेने लगे हैं। ... ख़बरें सुन-सुनकर आप कुछ ज़्यादा ही परेशान रहने लगी हैं।''

''सुना है टी॰वी॰ पर तो सब कुछ होते हुए दिखाया जा रहा है। ... ख़ुदा जाने मेरा लाल किस हाल में होगा।''

''अल्लाह पर भरोसा रखिए। ... उनका ख़त तो पढ़कर सुना ही चुकी हूँ। मुरादाबाद वाले दोस्त के साथ हुए हादसे के बाद से, वे रात के वक़्त टैक्सी नहीं चलाते, दिन में भी मुहतात (सर्तक) रहते हैं ... मोबाईल फ़ोन

जल्द ही ख़रीदने वाले हैं। ... नंबर मिलते ही पहले आपको जी भरकर बात करा दूँगी।''

ज़ुबैदा बीबी बैठी रहीं। शबनम उठी और उनके आँचल से अर्द्धजले हिस्से को फाड़कर बोली,

''अब जाकर साड़ी बदल लीजिए।''

ज़ुबैदा बीबी मरीज़ की तरह उठती हुई बोलीं,

''जी चाहता है गाड़ी पर सवार हो जाऊँ ... औरत, सचमुच मिट्टी का कच्चा घड़ा और अंदेशे की पोटली है ... कोई छू दे तो छुतहर कहलाए ... बेबस बेवा (विधवा) माँ आँसू बहाने के सिवाय कर भी क्या सकती है। रज्जू! तू तो जानता है, एख़्तलाजी (हृदयकंपन रोगी) हूँ ... तेरी चुप्पी कलेजा खाए जा रही है ...''

आँसू का रेला बहने से पूर्व वे आँगन में चली आईं और ऊँचे स्वर में दुआएं माँगने लगीं,

''या अल्लाह! इस घर के चिराग़ को महफ़ूज़ रखना। वही हमारा वली (स्वामी) और वारिस है। उसके बिना हमसब जीते जी मर जाएँगे ...''

आँधी शुरू होते ही लोगबाग थैला, बोरा, चादर और लुंगी लिए बाग़ों में घुस गए थे। डाँट-फटकार और धमकियों को बेअसर होते देखकर रखवाले भी फल बटोरने लगे थे। ग़रीब घरों के बच्चे छज्जों, लकड़ियों और डालियों को घसीटते हुए भाग रहे थे। लूटने में भी हर्ष-आनंद मिलता है, चाहे चरख़ा हाथ लगे, ढाए गए भवन की ईंट या किसी की आबरू।

तबाही मचाकर आँधी का ज़ोर थम गया था, जैसे थका क़ातिल तलवार पकड़े ज़मीन पर बैठा सुस्ताने लगा हो। फिर बारिश शुरू हो गई। मोटी-मोटी बूँदों से हल्की धूल उड़ी, टीन और खपड़ों की छतें बजने लगीं, मिट्टी की महक नथुनों में समान लगी और अधिकांश घरों की छतें चूने लगीं। शबनम ने बर्तनों को टपकने वाली जगहों पर पहले ही रख दिया था। ज़ुबैदा बीबी एशा (रात्रि) की नमाज़ पढ़कर खाना खाती हैं। इन दिनों वज़ीफ़ा (विशेष नमाज़ और दुआ) भी पढ़ने लगी हैं। इसीलिए उनका खाना ढँककर रख दिया जाता है। मच्छरदानी लगाकर शबनम रोती चंदा को बाज़ुओं (अंकों) में भरके उसके होंठों पर गाल रख-रखकर बोलने लगी,

''ना, ना ... बाबू बहादुर है ... वह गरज से भी नहीं डरती, उसे तो पापा याद आ रहे हैं। बाबू भी दुआ माँग रही है ... पापा खिलौने लेकर आ रहे हैं ...''

माँ की समीपता और ममता का स्पर्श महसूस करते ही वह चुप हो गई।

बिस्तर पर लेटते ही शबनम को ख़्याल आया, सुबह रेडियो की बैटरी मँगवा लेनी है। बेख़्याली में उसका हाथ पति के तकिया पर चला गया। उसने फ़ौरन तकिया बदल लिया। तकिया की महक यादों को गुदगुदाने लगी। बेटी के सिर पर हाथ फेरते

हुए उसने धीमे स्वर में कहा,

''या अल्लाह! उनका साया मासूम के सिर पर बनाए रखना।''

शबनम शंकाओं में घिर गई। उसने झट से ख़्यालों का द्वार बंद कर दिया। परंतु जब दिल घबड़ाने लगा तो वह अतीत की बालकोनी पर जा खड़ी हुई।

बिछड़े प्रेमी की तरह अचानक गुज़रा वह दिन सामने आ खड़ा हुआ। शबनम का चेहरा लाल हो गया। उसने सोचा, उस दिन तो हद कर दी थी उन्होंने। अम्मा नई नवेली दुल्हन को देखने पड़ोस में गई हुई थीं। तीसरा पहर था। सावन के आवारा बादल चंद मिंटों में ही हमआगोश (आलिंगनबद्ध) हुए और तेज़ बारिश शुरू हो गई थी। सामान उठाने में हम दोनों भीग गए तो उन्हें शरारत सूझी थी। बाहर का दरवाज़ा बंद करके लौटे और मुझे बाज़ुओं में भरकर ओलती के नीचे खड़े हो गए थे। सिर और जिस्म पर पानी गिरता रहा और वे जी भरकर मनमानी करते रहे। मर्द अक्सर ऐसे मौके़ की ताक में लगे रहते हैं, बल्कि बेमौक़ा जुगाड़ बैठा लना भी जानते हैं ... छी ... बाद में ख़्याल आया, मैं क्यों सहरज़दा-सी (जादू के प्रभाव में) थी। कई दिनों तक उनसे आँखें मिलाकर बात नहीं कर सकी थी। ताड़ पर चढ़ा पासी सब कुछ देख चुका होगा, यह शुबह (शंका) आज तक दिल से नहीं निकला ... उसी दिन एहसास हुआ था, तन्हाई सचमुच बेख़ौफ़ी और बेहयाई को परवान चढ़ाती है।

लज्जित शबनम अतीत की बालकोनी से लौट आई। अब उसे बारिश की आवाज़ फिर सुनाई देने लगी और बीते दिन बरसाती पौधों की तरह मन-मस्तिक में उगने लगे। उसन करवट बदलकर तकिया को सीने से भींच लिया।

''शब्बू! कितनी मौसीकि़यत (लयबद्धता) है इन आवाज़ों में ...''

उसे लगा, बालों में उँगलियाँ फँसाकर वे कान में फुसफुसाए।

लेकिन शबनम को आज इनमें मातमी धुन सुनाई दे रही है। उसे लगा कोई परित्यकता अपने भाग्य पर विलाप कर रही है।

करवट बदलकर चित होते ही शबनम के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि वे होते तो आज भी ... इस कल्पना से बनते चक्रवात को देखकर वह ठिठक गई। बेख़्याली में उसने बेटी को सीने पर सुलाकर उसे भींच लिया। चंदा बिलबिलाकर रोने लगी तो उसने ब्लाउज़ का हुक खोल दिया। दूध पीते हुए वह विशेष आवाज़ निकालने और रुक-रुककर लंबी-लंबी साँस छोड़ने लगी। शबनम की झील-सी आँखों में उस रात की बातें जलपक्षी की तरह उतरने लगीं।

आँधी के बाद उस रात भी मूसलाधार बारिश हुई थी। छत से पानी इसी तरह टपक रहा था और वह ग़ुस्से में बंदरों को कोसने लगी थी,

''ख़ुदा ग़ारत करे ... सबके सब बिजली के तार में झूल जाएँ ...''

''तार में करंट होगा तभी ना झूलेंगे।''

उन्होंने मुस्कराकर कहा था।

''सुना है आसमानी बिजली भी तारों पर कभी-कभार दौड़ जाया करती है।''

''बंदर बड़े चालाक होते हैं। इस वक़्त सभी

दुबके पड़े होंगे ... तुम्हें पता है, पहले ये इंसान थे।''

''इसीलिए इंसान का जीना हराम कर रखा है। बदज़ात दिखा-दिखाकर खपड़े उलटता है। मौक़ा मिलते ही कोई चीज़ लपककर छत या मुंडेर पर जा बैठता है। रोटी-फल लेकर भी मान-मनौव्वल के बाद सामान फेंकता है ... लाठी उठाओं तो दाँत निपोड़कर ऐसी घुड़की देता है, जैसी बदन पर ही कूद पड़ेगा। अब तो ये पटाख़ों से भी नहीं डरते ...''

उन्होंने मेरी बात काटकर कहा था,

''शादी से पहले की एक घटना तुम्हें सुनाता हूँ। उस दिन अम्मा सोकर उठीं, तो गर्दन में अकड़न महसूस की। उन्होंने अपना तकिया धूप में रख छोड़ा था। उनकी चौकसी के बावजूद एक बंदरिया उसे ले उड़ी। अम्मा हाय-तौबा करते कुछ लाने को दौड़ीं। इसी बीच पास पड़ी लाठी उठाकर मैंने उसे धमकाया। तैश में आकर उसने तकिया का पेट फाड़ डाला और लगी रूई उड़ाने। बेरहमी से तकिये का तिक्का-बोटी होते देखकर उन्होंने रोटी और केला छत पर उछाला लेकिन महारानी टस से मस नहीं हुई। मन्नत करने लगीं तो वह तकिया लेकर कहीं और चली गई। तकिया अब्बा के हाथों का भरा था। अम्मा कई दिनों तक इसका मातम मनातीं और उसे कोसती रहीं।''

बंदरों के खि़लाफ़ मेरा दबा ग़ुस्सा उबल पड़ा था। मैंने कहा था,

''मदारीवाला आ जाए तो ढेर सारे अनाज दे-दिलवाकर इन्हें फँसवाऊँगी।''

उन्होंने ढाढ़स बँधाया था,

''इस बार आऊँगा तो मुंबई से एयरगन ज़रूर लाऊँगा ... तुम देखना बंदूक़ देखते ही बंदर घर-आँगन छोड़ देंगे।''

''एक अच्छा ग़ुलेल तो बनाते नहीं ... चले गन लाने ... रहने दीजिए ... जानवरों का भी ज़ुल्म सहना मुक़द्दर में लिखा है। बंदर भी ख़ूब समझते हैं हम औरतों को ... जितना चाहो तंग कर लो। देखते नहीं, आपके आते ही घर-आँगन से उछल-उछलकर छत पर जा बैठते हैं ... सच है, लोग भी उसी औरत से डरते हैं, जिसकी पीठ पर मज़बूत मर्द होता है ...''

उस रात मुझे भी भड़ास निकालने का मौक़ा मिल गया था। थोड़ी देर ख़ामोश रहकर ढाढ़स बँधाने के लिए उन्होंने कहा था,

''इस बार आऊँगा तो टीन की छत भी लगवा लूँगा ... बारिश में छत गाएगी और हम ख़ूब मज़ा लूटेंगे।''

उन्होंने चट-चट दो बोसे (चुंबन) जड़ दिए थे और मैं तुनककर बोली थी,

''ताकि बंदर उछल-कूदकर ढोल-नगाड़े बजाएँ ...''

''तुम कहो तो उसपर खर बिछवाकर फिर से खपड़े फेरवा दूँ ...''

''ऐसा पूछ रहे हैं, जैसे सुबह से ही काम शुरू हो रहा है।''

मैंने तुर्श (कटु) लहजे में कहा था।

उनका चेहरा बुझ गया था। कुछ देर तक वे मुझे देखते रहे। फिर अचानक उठे और चिराग़ की फुलिया झाड़कर लौ को उक्सा दिया। रोशनी बढ़ते ही संदूक़ पर रखी देगची से क़तरा-क़तरा गिरते हुए पानी को देखकर वे लपके, तब मैंने नर्म लहजे मं कहा था,

''ज़रा संभलके ... फिसलन है। खाना लगाते वक़्त मैं बाल-बाल बची हूँ।''

''नंगे पाँव नाखून गड़ाकर चलने से आदमी नहीं गिरता है।''

देगची उठाकर मस्त बिल्ले की तरह क़दम रखते हुए उन्होंने मुझे इत्मीनान दिलाया था। भरे और अर्द्धभरे बर्तनों से पानी फेंककर उन्होंने कहा था,

''शब्बू! टपकते पानी की आवाज़ों में क़ुदरती लय और मौसीक़ियत (संगीत) है लेकिन इनमें एक भद्दी आवाज़ भी है।''

उड़ती छींटों से उन्हें जल्द ही सुराग़ मिल गया था। उन्होंने टॉर्च जलाकर देखा। रौशनदान से आती झटास रेंगती हुई शहतीर के बंधन तक आ रही थी। पानी पहले छोटी-सी बूँद की शक्ल अख़्तियार करता, फिर बढ़ता हुआ पकी निबौरी की तरह टीन के बक्स पर टपक रहा था। उन्होंने बिस्तर के नीचे से प्लास्टिक का थैला निकाला, उसे फाड़कर बक्स के ऊपर बिछाया और उसपर लुंगी रखते हुए कहा था,

''चलो निजात मिल गई ... लेकिन तुम्हारा काम बढ़ गया। मौक़ा निकालकर रजाई और गर्म कपड़ों को धूप दिखा देना।''

फिर वह कमरे से बाहर निकलकर बोले, ''शब्बू! बादल अब फटने लगा है। कभी-कभी चाँद की हल्की रोशनी भी नज़र आ जाती है। हवा सीटियाँ बजाने लगी है। डालियाँ झूम रही हैं। शीशम का पतला वाला पेड़ फन काढ़े नाग की तरह लहरा रहा है। रह-रहकर बिजली चमक रही है लेकिन बादल हर बार नहीं गरजता। पपीते का बूढ़ा पेड़ गिर गया है। केले के नए पत्ते तारतार हो चुके हैं और बारिश का ज़ोर घटने लगा है ...''

''तबीयत ख़राब हो जाएगी। अब अंदर चले आइए ...''

थोड़ी देर में वे लौट आए। पलंग के नीचे रखे तांबे के लगन (पराथ) में पाँव डालकर साफ़ किया और चालाक मुसाफ़िर की तरह वे मुझसे सटकर बैठ गए थे। मैं समझ गई थी। वे मंसूबा बनाकर पेशाब करने निकले थे। अब उनकी निगाहें चीते की तरह शिकार पर मरकूज़ (केंद्रित) थीं और मैं पेशानी पर बाज़ू रखे बेबस हिरणी जैसी दम साधे साकित (स्थिर)। चिराग़ में फुलिया फिर बन गया था। वे मेरा तलवा सहला रहे थे। चीटियाँ सरपट दौड़ने लगी थीं। अज़्म (संकल्प) बर्फ़ की तरह पिघल रहा था और मैं सोच रही थी, औरत साज़ की तरह साज़िंदे के वश में होती है।

''तुम्हारे कपड़े भी नम हैं ...''

वे जानबूझकर हाथ घुटने तक लेजाकर बोले थे। मेरी ख़ामोशी से शह पाकर उनका हाथ रुका नहीं। मैं फ़ौरन उठ बैठी थी।

''शब ... बू ...''

कंधे पर सिर रखते ही उनके मुँह से कराह जैसी सदा निकली थी।

''नहीं ... बिल्कुल नहीं ...''

मेरे मुँह से आदतन आज़माया बेअसर जुम्ला निकला था।

''नींद नहीं आ रही ...''

जल्दीबाज़ी में उन्होंने फ़ौरन कोड वर्ड का इस्तेमाल कर दिया था।

सायल शौहर (याचक पति) को सैराब (तृप्त) करने का शरई (धार्मिक) हुक्म है। फिर भी डूबते की तरह मैंने तिनका पकड़ लिया था।

''समझते क्यों नहीं ... ज़मीन और औरत बीज नहीं रख पाती। चंदा छः माह की भी नहीं हुई है ... सुबह नहाते ही अम्मा समझ जाएँगी।''

''तुम देखना ... अम्मा खुद ही नहलवाएँगी।''

''लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा ...''

अनसुना करके वे हल से खुले बैल की तरह अपनी भूख मिटाने लगे थे।

गिरने की आवाज़ पर मैं भी दौड़ी थी। रात का फ़ातेह (विजेता), सुबह आँगन में चारों ख़ाने चित पड़ा था। तांबे का लगन दूर जा गिरा था और कपड़े कीचड़ से लथपथ थे। अम्मा जल्दी-जल्दी नहाने का इंतज़ाम कर रही थीं।

विदा होकर जब वे बहाने बनाकर दुबारा मिलने आए थे तो मैंने कहा था,

''कोशिश करें तो फ़िल्म कंपनी में भी काम मिल सकता है ... मैं तो सचमुच डर गई थी, कहीं हाथ-पैर टूट न गया हो। लेकिन रात कही बात याद आते ही हँसी छूट गई थी . .. वैसे भी गिरने वालों पर सब हँसे हैं। अम्मा भी मुँह फेरकर मुस्करा रही थीं।''

''परदेसी के लिए यादें और बातें ही सौग़ात होती हैं शब्बू!''

चंदा का भी बोसा लेकर कमरे से निकलते हुए उन्होंने कहा था।

चंदा गहरी नींद में थी। उसकी लार से शबनम का सीना तर हो चुका था। उसे बिस्तर पर सुलाकर वह उठी। कमरे से बाहर निकलकर वह हर तरफ़ निगाहें दौड़ाने लगी। आसमान साफ़ था। हवा में नमी बढ़ गई थी। आकाश गंगा धुली-धुलाई लग रही थी। झींगुर की आवाज़ ख़ामोश फ़िज़ा में सेंध मार रही थी। रह-रहकर मेंढक टर्राने लगते लेकिन कुत्ते चुप थे। उसने सोचा, ''अगर वे होते तो आज वह भी इन बातां को उन्हें ज़रूर बताती ...''

''बहू! ज़रा ठहरो, मैं भी चलती हूँ।''

अचानक ज़ुबैदा बीबी की आवाज़ उसे सुनाई दी।

''अम्मा! चाँद नज़र नहीं आ रहा है।''

वापसी में उसने पूछा था।

''अमावस है ... अब तक जाग रही थी?''

''हाँ, नींद नहीं आ रही है।''

''तुम जाओ, मैं कमरा बंद करके आती हूँ।''

ज़ुबैदा बीबी पलंग पर बेटे की जगह उसके तकिया पर सिर रखकर लेट गईं। फिर सोई हुई चंदा को कलेजे में समेटत हुए बोलीं,

''लाहौल (शैतान से निजात का मंत्र) पढ़ लो। शैतानी वस्वसों (शंकाओं) से निजात मिल जाएगी ... फिर भी नींद न आए तो लेटी-लेटी ही वज़ीफ़ा (विशेष दुआ) पढ़ो ... इबादत शैतान को नहीं भाती।''

चंद मिनटों में ही ज़ुबैदा बीबी की नाक बजने लगी। शबनम ख़र्राटों के नए अज़ाब (कष्ट) में मुबतला हो गई। अब उसे झींगुर और मेंढक की आवाज़ बुरी नहीं लग रही थी। ख़्यालों की डोर टूट जाने और चंदा से बेदख़ल होकर उसने सोचा,

''मर्द अपने लिए नहीं कमाता। औरत अपने लिए नहीं जीती। चट्टान से दबी दूब और

औरत दोनों खुद को ज़िंदा रखती हैं। दूब अपनी और औरत दूसरों की बक़ा (अस्तित्व) के लिए। मर्द पौधा और औरत लता जैसी है। जड़ कहीं, धड़ कहीं ... फल भी किसी और का ... लुट-लुटाकर फ़ना (समाप्त) ... औरत तेरा यही मुक़द्दर ...''

चंदा कसमसाई तो शबनम ख़्यालों की वादी से लौट आई। दादी की गिरफ़्त सख़्त हो गई थी। उनका हाथ खींचकर ढीला करते ही शबनम के ख़्यालों का टूटा सिलसिला पुनः जुड़ गया। उसने दादी-पोती पर नज़र डालते हुए सोचा,

''कब्ज़ा जमाना और हक़ जतलाना औरत की फ़ितरत में है। बात पीछे मेरा बेटा, मेरी पोती, मेरी बहू , मेरा घर कह-कहकर हक़े मिलकीयत (स्वामित्व) जतलाती रहती हैं। ब्याहकर भी बेटे पर क़ाबिज़ हैं ... काश! कोई देख पाता। पोती के वसीले (माध्यम) से किस तरह बेटे तक जा पहुँचीं।''

सुबह ज़ुबैदा बीबी आँधी से हुए नुक़्सान का जायज़ा ले रही थीं कि अचानक भगदड़ का शोर बुलंद हुआ। बदहवासी में वे दरवाज़े पर खुले सिर निकल आईं और सड़क की ओर एक-दूसरे के पीछे भागते हुए लड़कों से पूछने लगीं,

''क्या हुआ? बेटा! कोई कुछ तो बताते जाओ ...''

जब किसी ने ध्यान नहीं दिया तो उनकी बेकली बढ़ गई। वे फ़ौरन अंदर गईं और बहू को आवाज़ देने लगीं,

''बहू! ... बहू , बेटी को संभालो ... पता लगाकर आती हूँ ... आख़िर कठपुलिया की तरफ़ लोगबाग क्यों बे तहाशा दौड़े जा रहे हैं।''

''ज़रा दो क़दम बढ़कर देखिएगा। मेरा कलेजा अभी से बैठा जा रहा है ... आज ही रात, तीसरे पहर ख़ाब में अब्बा मरहूम को आँगन में बेचैन टहलते हुए भी देखा है। खुदा ख़ैर करे ...''

ज़ुबैदा बीबी चादर लपेटे तेज़ क़दमों से चलकर सड़क किनारे महुआ के पेड़ के नीचे जा खड़ी हुईं। उनके बाएँ पाँव की चप्पल कीचड़ में ही धंसी रह गई थी। आँखों पर हथेली का छज्जा बनाकर उन्होंने बहुत दूर तक देखने की कोशिश की। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। कुछ ही देर बाद भीड़ में एक जीप देखकर उनका दिल फड़फड़ाया और पाँव काँपने लगे। किसी तरह वे पेड़ से पीठ सटाकर खड़ी रहीं। धीमी रफ़्तार से गुज़रती जीप की अगली सीट पर एक आदमी सिर झुकाए बैठा था। लाश देखन के लिए लोग धक्का-मुक्की कर रहे थे। बदबू फूट रही थी। फिर भी बच्चे जीप के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। उन्होंने लपककर एक बच्चे का हाथ पकड़कर पूछा,

''कुछ पता चला? कौन है? कहाँ मरा?''

''यादव टोला में मवेशी चोरी करते पकड़ा गया था। गाँव वालों ने पीट-पीटकर चार जनों को मार डाला। उन्हीं में मुखिया जी का बेटा भी ...''

लड़का हाथ झटककर भाग निकला।

''हर जगह लोग क़ानून को हाथ में लेने लगे हैं। कड़े क़ानून का क्या फ़ायदा जब

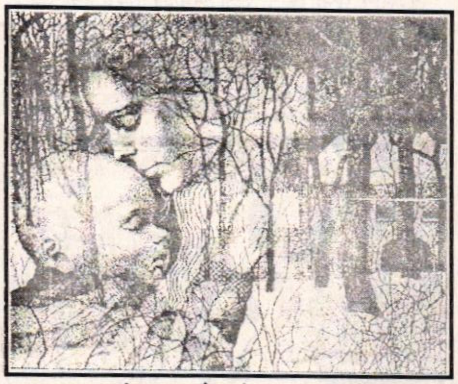

उनका इस्तेमाल मुँह देखकर किया जाए। यह कैसा इंसाफ़ है? बेक़सूरों को जेल और अम्न के दुश्मनों को बेल। साझी सरकार की कुर्सी बरफ़ के सिल पर रखी होती है। इसीलिए उनका ज़्यादा वक़्त पिघलती बरफ़ और धँसती कुर्सी पर नज़र रखने में गुज़रता है। राजा जानबूझकर अंधा, बहरा और गूँगा हो जाता है ... इक़्तिदार (सत्ता) के लिए हमेशा ख़ून की होली खेली जाती रही है। मुल्क के बाद सूबे बँटते जा रहे हैं। ...''

ज़ुबैदा बीबी ग़ुस्से में बड़बड़ाती हुई लौट आईं।

जैसे-जैसे दिन गुज़रता जा रहा था, ज़ुबैदा बीबी और शबनम की बेक़रारी बढ़ती जा रही थी। शबनम का ज़्यादातर वक़्त ख़बरें सुनने और समझाने में व्यतीत होता था। अब वह हिंदी के अतिरिक्त उर्दू ख़बरें भी ताकीद से सुनने लगी थी। बी॰बी॰सी॰ को सुनना वह कभी नहीं भूलती। लेकिन कभी-कभी उसे निराशा भी होती, जब अधिकतर समय पाकिस्तानी राजनीति, इज़राईल-फ़िलिस्तीन के झगड़े या फिर ईरान के विरुद्ध अमरीका द्वारा ज़हर उगलने पर व्यतीत कर दिया जाता था। चंदा भी अब रोना शुरू करती तो चुप होने का नाम ही नहीं लेती। शबनम उसे अब मारने लगी थी। घर-आँगन की बाक़ायदा सफ़ाई बंद थी। चूल्हे से किसी वक़्त धुआँ निकलता। नाली में रोक लगाने की किसी को सुध नहीं रहती। अक्सर उसी रास्ते कुत्ते, बिल्ली और नेवले आने-जाने लगे थे। एक रात सियार भी घुसकर आँगन में रोने लगा था। अब शबनम भी बाक़ायादा वज़ीफ़े पढ़ने लगी थी। ज़ुबैदा बीबी को कहीं से कोई सुराग़ हाथ लग जाता तो वह सिर पर चादर डालकर किसी बच्चे को साथ लिए भगोड़े मज़दूर से बेटे की ख़बर- ख़ैरियत पूछने चल देतीं। अभी तक उन्हें किसी से पक्की ख़बर नहीं मिली थी। किसी ने उसे हालफ़िहाल देखा भी नहीं था।

एक दिन ज़ुबैदा बीबी ने मस्जिद के इमाम साहब को घर बुलवाकर उनसे कोई तरकीब लगाने की मिन्नत की। इमाम साहब ने दो तावीज़ लिखकर एक को चौकोर मोड़ा और दूसरे का रोल बनाया और उन्हें ज़ुबैदा बीबी को देकर समझाया,

''चौकोर को किसी पत्थर के नीचे दबा देना है और इसे सूती कपड़े में लपेटकर चिराग़ की बत्ती बनाकर सरसो तेल से रोज़ मग़रिब (शाम) के वक़्त पाँच मिनट तक जलाना है। रज़ी हैदर ज़िंदा होगा तो इंशाअल्लाह (खुदा ने चाहा) तावीज़ के जलकर ख़त्म होने से क़बल घर लौट आएगा।''

अमल शुरू किए दस-बारह दिन गुज़र गए थे। चिराग़ जलाते वक़्त ज़ुबैदा बीबी बत्ती निकालकर उसकी लंबाई ज़रूर देख लिया करतीं। दिन के वक़्त मामूली आहट पर भी वे कई बार दरवाज़ा खोलकर चारों ओर निगाहें दौड़ाने लगतीं। एक बार उस पत्थर को भी देख आतीं, जिसके नीचे तावीज़ रख छोड़ा था। इमाम साहब की बात ''ज़िंदा होगा तो'' कान में घुसी चींटी की तरह परेशान करती रहती। एक दिन उन्होंने शबनम से पूछा,

''बहू! तेरा मन क्या कहता है, रज्जू ज़िंदा है?''

''सच कहूँ?''

''हाँ, हाँ। दरअसल मैं अपने दिल की बात

से मिलाना चाहती हूँ।''

''चंदा बेवजह रोती और बेकल नज़र आती है तो मेरा दिल बैठने लगता है लेकिन जब मैं सोई हालत में इसका चेहरा गौ़र से देखती हूँ तो वह यतीमों (अनाथ) जैसा नहीं लगता।'' भावविभोर ज़ुबैदा बीबी सोई पोती के सिर पर हाथ फेरते हुए बोलीं,

''ना उम्मीदी कुफ़्र है। खुदा मुझे माफ़ करे। लेकिन सच कहती हूँ , अब तो आस का दामन छूटने लगा है। मेरा बेटा ऐसा बेदर्द नहीं, जो माँ को इतना तड़पाएगा। ज़रूर कोई बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार होगा या फिर ... नहीं, नहीं ... तौबा ...तौबा ...''

अपने गालों पर हल्का थप्पड़ मारकर वे जल्दी से कमरे से निकल गईं। फिर वापस लौट कर बोलीं,

''बहू! कंघी-चोटी रोज़ कर लिया करो। तेरी पेशानी पर लाल बिंदी ख़ूब फबती है।''

उस रात एशा की नमाज़ के बाद ज़ुबैदा बीबी ने वज़ीफ़ा शुरू ही किया था कि दरवाज़े पर रूक-रूककर ठोकर मारने की आवाज़ सुनाई दी। पहले तो उन्होंने इसे शैतानी वस्वसा (शंका) समझकर लाहौल (प्रेत-मुक्ति की दुआ) पढ़ा फिर ख़्याल आया आँगन में घुसा कुत्ता दरवाज़े से निकलना चाह रहा होगा। लेकिन जब उन्हें महसूस हुआ ठोर उनकी ममता को मारी जा रही है तब उन्होंने बहू को पुकारा,

''बहू! मेरे साथ चलो तो ... पता नहीं, इस वक़्त दरवाज़े पर कौन है?''

शबनम सोई बेटी को लेकर नंगे पाँव टार्च जलाए दौड़ पड़ी।

सामने रज़ी हैदर चादर ओढ़े सिर झुकाए खड़ा था। ज़ुबैदा बीबी लालटेन चेहरे के सामने रखे बेटे को आँखें फाड़-फाड़कर देख रही थीं और शबनम को साँप सूँघ गया था। चंदा रोने लगी, तो ज़ुबैदा बीबी चहककर बोलीं,

''अरी पगली! देख मेरा बेटा आ गया ... इसकी गोद में बच्चा दे दे, चुप हो जाएगी।''

शबनम आगे बढ़कर चंदा को पकड़ान लगी तो रज़ी हैदर धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता हुआ माँ के कमरे में चला आया। ज़ुबैदा बीबी जल्दी से क़ुरान शरीफ़ उठाकर तकिया उसके क़रीब करते हुए बोलीं,

''रज्जू! ... बेटा, कुछ बोलता क्यों नहीं?? बोल वरना मेरा कलेजा फट जाएगा ...''

रज़ी हैदर ने सिर उठाकर माँ को एक नज़र देखा। शबनम गौ़र से उसे ही देख रही थी। उसे आज बोलती आँखें मूक और शरारती चेहरा मरीज़-सा लगा। चंदा अब मुँह फाड़-फाड़कर रोने लगी थी। लेकिन इस बार शबनम ने उसे बाप की जानिब नहीं बढ़ाया। वह दर्शक की तरह खड़ी रही। बेताब ज़ुबैदा बीबी ने भावविभोर होकर बेटे को बाहों में भरा तो वह दर्द से बिलबिला उठा। उन्होंने फ़ौरन उसके कंधों से चादर गिरा दी। हाथ कटे बेटे को देखते ही वे चींख़ मारकर बेहोश हो गईं।

''शब्बू! इन्हें होश में लाओ। यही सब सोचकर घर आने से हिचकता रहा ... लेकिन न जाने क्यों दिल ऐसा बेक़ाबू हुआ कि ...''

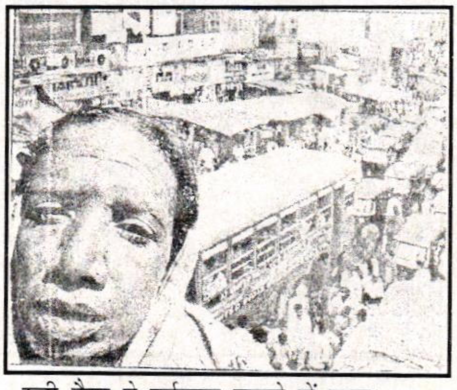

रज़ी हैदर ने दर्दनाक लहजे में कहा।

शबनम अपने आप में लौट आई। बेटी को बिस्तर पर पटककर उन्हें बार-बार होश में लाने लगी।

''मेरी जेब में नींद की दवा है। किसी तरह एक टिकिया इन्हें खिला दो।''

रज़ी हैदर रोती चंदा को चुप करान की कोशिश करने लगा। बाप की आवाज़ और स्पर्श का जादुई असर हुआ। वह चुप्प होकर लेटे ही लेटे उसके गाल और कान को छूने-पकड़ने लगी।

चंदा बाप के पहलू में गहरी नींद सो रही थी। रज़ी हैदर हादसे की मुख़्तसर रूदाद सुनाकर चुप हो गया। अलगाववादी तत्त्वों के हाथों एक अद्धमरे परीक्षार्थी को उसने अस्पताल पहुँचाया था। बतौर सज़ा हाथ काटकर उसकी टैक्सी जला दी गई थी। एक मराठी डाक्टर ने अपने नर्सिंग होम में मुफ़्त इलाज करके उसकी जान बचाई। शबनम सोचने लगी,

''सच है, दुनिया बुरे लोगों से भरी और अच्छों से ख़ाली नहीं है। उसका सुहाग सलामत है लेकिन उनलोगों के घरवालों पर क्या गुज़रा होगा, जो मारे गए या गुमशुदा हैं। ज़ालिमो! यह क्यों नहीं सोचते, मज़दूर के साथ उसका कुंबा (परिवार) भी जीते जी मर जाता है। सरकारी रक़म मरने वाले की जगह नहीं ले सकती और निंदा लगे ज़ख़्मों का मरहम नहीं ... अपाहिज, मरते दम तक अना (अहं) की लाश ढोता है और हमदर्दी तेज़ाब की तरह उसके वजूद को चाटती है ... किसानों और मज़दूरों के बल पर ही दुनिया का माली निज़ाम (अर्थ व्यवस्था) क़ायम है। आतंक फैलाकर, अपाहिज बनाकर और शहर बदर करके मज़दूरों के हौसले पस्त नहीं कर सकते ... देखते नहीं, झोंपड़ियों की राख पर झोंपड़ियाँ उगती ही रहती हैं ...''

चुप्पी जब भयानक रूप अख़्तियार करने लगी तब रज़ी हैदर ने कहा,

''शब्बू! एयरगन नहीं ला सका ... अब टीन की छत भी नहीं लगवा सकूँगा ... और ... और ...''

''हाँ, हाँ बोलिए ना ...''

''और तुम्हें तंग भी नहीं कर सकूँगा ... मेरे दस्तो बाज़ू नहीं रहे ... अब तो बंदर भी नहीं डरेंगे मुझसे ... शब्बू! मर्द और मज़दूर को अपने दस्तो बाज़ू और बेटों का बड़ा अभिमान होता है ... मेरे तो ...''

रज़ी हैदर के होंठों पर हथेली रखकर शबनम पानी की सतह पर फिसलती नोका की तरह उसके सीने से जा लगी और चुंबनों की बोछार करके बोली,

''देखा! ... अब, मैं तंग करूँगी। हिसाब बराबर करना है ...''

फिर उसके सिर को अपने बाज़ू पर रखकर कान में बोली,

''आपका दस्तो बाज़ू मेरी कोख में पल रहा है।''

भावविभोर रज़ी हैदर ने दायाँ पाँव शबनम के बाएँ पाँव पर रखकर आँखें मूँद लीं। अब उसे महसूस हो रहा था, कटे बाज़ुओं में कोंपलें फूटने लगी हैं।

❖❖❖

संपर्क : आवास सं०- सी०/6, पथ सं०-5,
आर० ब्लॉक, पटना- 800001
दूरभाष सं०- 09430559161
Email : drshahidjamil@rediffmail.com
drshahidjamil1958@gmail.com

अपने-आप से

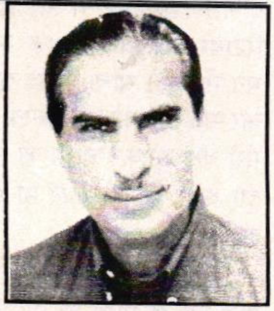

अनुवाद : विक्रम सहानी

✯ बंसी खूबचन्दाणी

मैं उलझन में पड़ गई हूँ। पता नहीं चल रहा, उनको अचानक हो क्या गया है? कुछ तो बात है जो उन्हें मन ही मन कुरेदे जा रही है। अभी दो ही दिन पहले की बात है, वे कुल्ला करने बाथरूम में गए हुए थे- कुछ ही देर बाद बाथरूम से उनकी आवाज़ सुनाई दी, जैसे किसी के साथ बात कर रहे हों। मैं सोच में पड़ गई, बाथरूम में वो किसके साथ बात कर रहे हैं? घर में तो हम दो ही प्राणी हैं तीसरे इनके पिता जी थे जो छ: महीने पहले ही चल बसे।

मुझसे रहा न गया, झाँककर देखा, तो वो एक छोटा सा टॉवल हाथ में लिए, आइने के सामने तैश में कुछ बोल रहे थे। मेरे कानों में जो कुछ शब्द पड़े वो थे- ''तुम नहीं सुधरोगे गुलाब, ऐसे ही दब्बू बने रहोगे, जैसे हमेशा से हो!''

मुझे बाथरूम में झाँकते देख, झेंपकर उन्होंने हाथ में पकड़ा हुआ टॉवल झट से खूंटी पर लटकाया और बाथरूम से बाहर आकर, पानी पीने के बहाने सीधे रसोई में चल गए शायद मुझसे नज़रें मिलाने से कतरा रहे थे या फिर मेरे अनपूछे प्रश्न का उनके पास उत्तर नहीं था। फिर आहत हो चप्पल पहनकर अपनी सोसाइटी के कंपाऊंड में चक्कर लगाने निकल पड़े।

ऐसा कुछ दिनों से चल रहा है। उस दिन मैं रसोई में रोटियाँ पका रही थी, तब मुझे एहसास हुआ कि वो डाईनिंग-टेबल पर बैठे किसी के साथ बातें कर रहे हैं। रोटियाँ लेकर मैं जैसे ही उनके पास पहुँची, वो एकदम चुप हो गए। मैंने पूछा-''किसके साथ बातें कर रहे थे?'' वो कहने लगे-''मैं किसके साथ बातें करूँगा शायद तुम्हें कुछ भ्रम हुआ है।'' उस वक़्त मैंने बात को आगे बढ़ाना ठीक नहीं समझा, पर मन ही मन चिंतित ज़रूर हुई।

हमारे विवाह को दस वर्ष हो गए हैं। घर में अकेलापन अब काटने को दौड़ता है। बच्चे होते, तो जीने का सहारा भी हो जाता। ये तो बोलते भी कम हैं। मुझसे तो सिर्फ़ काम से काम रखते हैं। मैंने कितनी बार कहा कि एक अच्छे डॉक्टर का पता मिला है, जाकर उनसे मिलें और इस बारे में सलाह व मशिवरा करें। पर वो हमेशा यह कह कर टाल देते हैं- ''अभी तो सारी उम्र पड़ी है, चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।''

ये अपने आपसे बात करने की समस्या पिछले पंद्रह दिनों से है। कभी-कभार खाना खाते-खाते ही उनकी मुड़ियाँ तन जाती हैं। मेरे पूछने पर हल्का-सा मुस्कराकर बात टाल देते हैं। एक बार छुट्टी के दिन वो मुट्ठियाँ तानकर लातों से हवा में प्रहार कर रहे थे। उनकी पीठ मेरी तरफ़ थी इसलिए

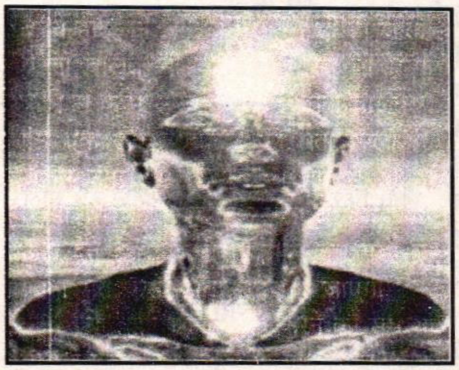

मुझे वो देख नहीं पाए। उनकी यह विचित्र मुद्राएँ देखकर उस वक़्त मेरी हिम्मत नहीं हुई कि उनसे कुछ पूछूँ।

ये चर्च गेट स्टेशन के पास स्थित एक इंश्योरेंस कंपनी में काम करते हैं। कंपनी की इस शाखा में वे पिछले 15 वर्षों से काम कर रहे हैं। मैंने कई बार समझाया है कि अपने बॉस से निवेदन कर अपना तबादला घर के पास वाली शाखा में करवा लें। वो कहते हैं जब पदोन्नति होगी, तो तबादला अपने आप ही हो जाएगा।

एक दिन शोभा का फोन आया- शोभा, किशोर की पत्नी है और किशोर इनके साथ ही ऑफ़िस में काम करते हैं। किशोर ने शोभा को बताया था कि कैसे वो किसी काम के कारण इनके पास गया तो देखा कि ये दोनों गालों पर हथेलियाँ टिकाए कुछ बोले जा रहे थे- किशोर के कानों में जो शब्द पड़े वो थे- ''पुलिस ... अस्पताल ...'' किशोर ने इनसे पूछा अगर इनको किसी सहायता की आवश्यकता हो, तो बेझिझक बताएँ। पर इन्होंने आदतन टाल दिया। शोभा ने यह सारी बात मुझे फ़ोन पर बताकर अधिक चिंतित कर दिया।

इसके बाद दो-तीन दिन सब ठीक--ठाक होता रहा। ऐसे में अचानक एक रात मुझे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। मैं हड़बड़ा कर जाग गई। देखा, तो ये नींद में अपने तकिए को मुक्के मारकर हवा में लातें उछाल रहे थे और चिल्लाकर कह रहे थे- ''पुलिस को बोलो, क्या कर लोगे ...'' मैंने उनका कंधा झकझोरा। आँख खोलकर उन्होंने मेरी तरफ़ देखा, फिर चुपचाप सो गए। मुझे समझ नहीं आ रहा था मैं क्या करूँ पूरी रात मुझे नींद नहीं आई।

दूसरे दिन कुछ नहीं हुआ। मैंने ही उनको रातवाली घटना की याद नहीं दिलाई। पर कल बाथरूमवाली बात ने फिर चिंतित कर दिया है। समझ में नहीं आ रहा मैं क्या करूँ? किससे सलाह-मशिवरा करूँ? सास तो हमारे विवाह के पहले ही स्वर्ग सिधार गई थीं। ससुर जी जबतक ज़िंदा थे, अपना अधिकतर समय भजन-कीर्त्तन और लिखने-पढ़ने में बिताते थे। खाना भी वो अपने कमरे में ही खाते थे। वे ऑफ़िस से आते ही सबसे पहले ससुर जी के बारे में पूछते, फिर उनक कमरे में जाकर उनसे थोड़ी बहुत बात-चीत कर लेते। ससुर जी अकेले ही खाना खाते थे। उस वक़्त भी ये अक्सर उनके पास जाकर बैठते। ससुर जी के देहांत के बाद एक बार इन्होंने मुझसे कहा था-''पिता जी मेरे लिए पीठबल थे। उनके जाने के बाद मैं अपने आपको कमज़ोर महसूस कर रहा हूँ।''

मेरे एक चाचा जी पुणे में रहते हैं।

पुलिस डिपार्टमेंट में थे। दो वर्ष पहले वो रिटायर हो चुके हैं। एक आशा की किरण मन में फूटी। सोचा शायद वो मेरी कुछ मदद कर सकें। उनको फ़ोन करके सारी बात बताई। मेरी बात सुनकर चाचा जी ने मुझे धैर्य बँधाते हुए कहा कि वो कल ही हमारे यहाँ पहुँच जाएँगे।

खाना खाते हुए मैंने इनसे कहा कि कल पुणे से चाचा जी आ रहे हैं, हो सके ता वो अपने ऑफ़िस से कुछ जल्दी आ जाएँ। उन्होंने मेरी बात सुनकर मेरी तरफ़ देखा और इतना ही कहा-''कोशिश करूँगा'' खाने के बाद वो चप्पल पहनकर बाहर चक्कर लगाने गए और मैं बेसब्री से कल की प्रतीक्षा करने लगी।

अगले दिन ये ऑफ़िस से एक घंटा जल्दी लौटे। चाचा जी भी आ गए थे। उनके साथ चाय-नाश्ता करके ये उनको हरे-कृष्ण मंदिर ले गए, जो हमारे घर के पास ही है, जहाँ वो कभी-कभार ससुर जी को भी ले जाया करते थे।

चाचा जी को मैंने सारी बातें बता दी थीं। चाचा जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इनके साथ कोई ऐसी घटना घटी है जिसका इनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। रात को खाना खाते हुए इधर-उधर की बातें होती रहीं। बातों-बातों में चाचा जी ने अपनी पुलिस डिपार्टमेंट की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस डिपार्टमेंट में काम करने वाले कैसे अपने सुख-सुविधाओं की परवाह किए बिना, सामान्य आदमी की सुरक्षा के लिए अपने आपको कठिन परिस्थितियों में धकेल देते हैं। कितनी बहादुरी से वो अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं ...

चाचा जी की बातें सुनते-सुनते, इनका मुँह लाल हो गया और मुट्ठियाँ तन गईं। अपने आप को संयमित रखने की कोशिश में विफल होकर, चाचा जी से रोषपूर्वक कहा- 'क्षमा चाहता हूँ चाचा जी, पर पुलिस डिपार्टमेंट के बारे में मेरा अनुभव आपकी बातों के विपरीत है- मैं जानता हूँ इस डिपार्टमेंट के लोग कितने ख़ुदगर्ज़, लालची और मक्कार हैं और सामान्य आदमी को परेशान करने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखते!''

दरअसल चाचा जी ने इनको उक्साकर अपने मन की भड़ास निकालने के लिए प्रेरित किया था। चाचा जी ने मुस्कराते हुए इनसे पूछा, वो किस अनुभव के आधार पर पुलिस के बारे में ऐसी बातें कह रहे हैं।

वो चुप रहे। शायद सोच रहे थे कि अपने मन की बात बताए अथवा नहीं। अपनी कही हुई बात को न्यायसंगत सिद्ध करने हेत अपने साथ घटी घटना का बयान करते हुए कहने लगे- ''अठारह दिन पहले की बात है, चर्च गेट के एक कॉफी स्टॉल पर मैं कॉफी पीने गया। मैं कुछ जल्दी में था, कॉफी स्टॉल से कॉफी लेकर जैसे ही मैं पल्टा, मेरी कोहनी, पीछे खड़े एक नौजवान को लगी, जो वहाँ पहले से कॉफ़ी पी रहा था। वो नौज़वान एकदम भड़क उठा। मैंने उससे 'सॉरी' कहा। फिर भी वो मुझे अनाप-शनाप बोलने लगा। उसकी बातें सुनकर मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने उससे कहा कि दोष उसका भी है। कॉफ़ी लेने के बाद, स्टॉल से ज़रा दूर खड़े रहकर उसे कॉफ़ी पीनी चाहिए थी।

इतना बताने के बाद, वो कुछ देर शांत हो गए, और अपनी बॉईं आँख मलने लगे। फिर अपने आपको संभालते हुए बोले- ''पता है उस नौजवान ने क्या किया? मेरी बात सुनते ही आव देखा न ताव अपने ग्लास में बची हुई कॉफी मेरी बाईं आँख में दे मारी। ये सब इतना अचानक हुआ कि मेरी सिट्टी--पिट्टी गुम हो गई। बौखलाकर मैंने भी उसे अपनी दाईं लात से मारने की कोशिश की और हाथ में पकड़ा हुआ बेग उसके मुँह पर दे मारा। फिर अपनी बॉईं आँख का ख़्याल आते ही मैंने अनुभव किया कि मेरी उस आँख की नज़र बुझ गई है।''

यह बताते हुए वो फिर कुछ कुछ देर चुप हो गए और अपनी बॉईं आँख को सहलाने लगे।

चाचा जी ने शांतभाव से पूछा- ''इस बारे में आपने चर्च गेट स्टेशन पर स्थित -'पुलिस-रूम' में जाकर अपनी शिकायत दर्ज करवाई?''

यह सुनते ही इनकी साँस तेज़ हो गई। चाचा जी की तरफ़ देखते हुए इन्होंने कहा- ''ये पुलिस ही तो इस मुसीबत की सब से बड़ी जड़ है। इस घटना के समय दो पुलिसवाले, जो उस कॉफ़ी स्टॉल के आस-पास ही खड़े थे, उन्होंने सब से पहले मुझे ही आकर दबोचा और धमकाते हुए पूछने लगे कि मैंने उस नौजवान को क्यों मारा? वो मुझे डराने लगे कि मेरा दिमाग ठिकाने लगाने के लिए वो मुझे लॉक-अप में बंद कर देंगे। अपने आपको उनके चंगुल से छुड़ाते हुए मैंने तैश में कहा-'' इस नौजवान ने पहले मेरी आँख में कॉफी फैंकी, इसका कोई दोष नहीं ...? आप लोग मेरी सहायता करने की बजाय मुझे ही धमका रहे हों'' मेरी बात सुनकर पुलिसवाले ने उस नौजवान से पूछताछ की। फिर हम दोनों को पुलिस-रूम में ले गए। वहाँ हमें धमकाने लगे कि हम दोनों ने 'पब्लिक-प्लेस' पर झगड़ करके अन्य लोगों की शांति में बाधा डाली है। इस जुर्म के तहत वो हमें लॉक-अप में बंद कर देंगे-

कुछ पल शांत रहने के बाद वो आगे बताने लगे- ''मैंने पुलिसवालों से पूछा कि इसमें मेरा क्या दोष? मेरे साथ कोई बुरा सलूक करे और मैं उसका जवाब भी न दूँ!'' तो वो कहने लगे- ''इस नौजवान के ख़िलाफ़ तुम्हें यहाँ आकर शिकायत दर्ज करवानी चाहिए थी इसकी बजाय तुमने उसपर हमला किया!'' मैंने दलील देते हुए कहा, ''तब तक तो यह नौजवान भाग चुका होता!'' तो वो कहने लगे- 'फिर इसको पकड़ना भी पुलिस का ही काम था।'' मैंने अपनी सफ़ाई में उनसे बहुत कुछ कहा जिनका उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वो हमें पुलिस सब इंस्पेक्टर के पास ले गए और उनसे कहा कि हमदोनों रेल्वे स्टेशन पर झगड़ा कर रहे थे। मैंने इंस्पेक्टर को सारी रूदाद सुनाई। मेरी बातें सुनकर उन्होंने यह तो माना कि दोष उस नौजवान का है, फिर भी उसने कहा सबूत के तौर पर वो मुझे अस्पताल भेजकर यह जाँच करवाएँगे कि सचमुच मेरी आँख में गर्म कॉफी फैंकी गई है!''

इतना बताकर वो फिर हाँफने लगा जैसे अठारह दिन पहले घटी घटना उसके ज़ेहन में फिर ज़िंदा होकर उसे सता रही हो!

चाचा जी के पूछने पर उन्होंने आगे बताया कि- पी०एस०आई (पुलिस सब इंस्पेक्टर) ने मुझे धमकाते हुए घर का पता और टेलीफोन नंबर ले लिया फिर उस नौजवान को धमकाते हुए पूछने लगे कि उसके पास

पैसे कितने हैं? उस नौजवान के पास जितने पैसे थे, पुलिस को उससे अधिक की आशा थी। वो उसे घर पर फ़ोन करके और पैसे मँगवाने के लिए कहने लगे। मुझसे शायद उन्हें पैसा मिलने की उम्मीद नहीं थी, इसलिए मुझे यह कहकर जाने दिया कि इस केस के संदर्भ में वो मुझे कभी भी बुला सकते हैं! मैंने सोचा अब यहाँ कुछ देर और रूका, तो वो मुझे किसी और शिकंजे में कस लेंगे। यह सोच, तुरंत वहाँ से निकल पड़ा। मेरी बाईं आँख में दर्द तो हो रहा था, पर इतना संतोष था कि नज़र सलामत है!

उस दिन से, इस घटना को लेकर मन में बेहद संघर्ष चल रहा है। मन में कई प्रश्न उठते हैं- क्या सामान्य आदमी इतना मजबूर है, कि कोई भी उसे कष्ट पहुँचाए, धमकाए और वो बेबस-लाचार बनकर ये सब सहता रहे। पुलिस उसे बिना किसी ठोस कारण के लॉक-अप में बंद करने की धमकी दे और वो उसका कोई विरोध न कर सकें! साहस उसकी हिम्मत छीन ली गई है! किससे सामना करे वो? सिर्फ़ 'अपने आपसे!'' हाँ-'अपने आपसे'।

मैंने उनको पानी का ग्लास दिया। पानी पीकर वो कुछ शांत हुए। ऐसा लगा, हमें ये सब बातें बताने के बाद उनके मन से एक भारी बोझ हल्का हो गया है।

मैंने चाचा जी की तरफ़ देखा, वो खोए हुए से थे- शायद अपने अतीत के बारे में सोच रहे थे- शायद उनके अंदर बिराजमान पुलिसवाला रूबरू होगा- 'अपने आपसे!''

❋❋❋

संपर्क : बंसी खूबचंदाणी,
बी०- 603, वुडलेंड (अशोक अकादमी के पास) ओखण्डवाला कॉम्पलेक्स, अंधेरी,
मुंबई- 400053
फोन : 022-26350680
एवं
विक्रम सहानी,
51, स्टार एपार्टमेंट, नालंदा कॉम्पलेक्स के सामने, वस्त्रापुर,
अहमदाबाद-380015
फोन : 079-26745380

हिंदुस्तान

☆ अजमल सुलतानपुरी

मुसलमाँ और हिंदू की जान
कहाँ है मेरा हिंदुस्तान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

मेरे बचपन का हिंदुस्तान
न बंगलादेश न पाकिस्तान
मेरी उम्मीद मेरा ईमान
वह पूरा-पूरा हिंदुस्तान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

वह मेरा बचपन वह मेरा स्कूल
कच्ची सड़कें उड़ती धूल
लहकते बाग़ महकते फूल
वह मेरे खेत मेरा खलियान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

वह उर्दू ग़ज़लें हिंदी गीत
कहीं वह प्यार कहीं वह प्रीत
पहाड़ी झरनों के संगीत
दिहाती लहरा पूर्वी तान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

जहाँ के कृष्ण जहाँ के राम
जहाँ की श्याम सलोनी शाम
जहाँ की सुब्ह बनारस धाम
जहाँ भगवान करें स्नान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

जहाँ थे तुसली और कबीर
जायसी जैसे पीर फ़कीर
जहाँ थे मोमिन ग़ालिब मीर
जहाँ थे रहमान और रसखान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

अनोखा और निराला देश
वह बच्चन का मधुशाला देश
वह मंदिर मस्जिद वाला देश
जहाँ है गीता और क़ुरान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

यह है मौजूदा हिंदुस्तान
लड़ाई-झगड़े का मैदान
काश मिल जाए कोई इंसान
जिसे हो मानवता का ज्ञान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

यह हर सू बल्वा और फ़साद
अलीगढ़ हो कि मुरादाबाद
सियासी वर्दी में जल्लाद
जो ले ले जल्लादों की जान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

यह मीरठ यह मज़हबी जनून
आग ही आग ख़ून ही ख़ून
कहाँ इंसाफ़ कहाँ क़ानून
कहाँ है पत्थर का भगवान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

मुझे है वह लीडर तसलीम
जो दे यकजहती की तालीम
मिटाकर कुंबों की तक़सीम
जो करदे हर क़ालिब यक जान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

यह भूखा शायर प्यासा कवि
सिसतका चाँद सुलगता रवि
हो जिस मदिरा में ऐसी छवि
करा दे **अजमल** को जलपान
मैं उसको ढूँढ़ रहा हूँ

ग़ज़ल

☆ शमीम क़ासमी

आज कल प्यार-व्यार करते हैं
रात दिन इंतिज़ार करते हैं

काम जो करके हाँपते हैं वो
उसको हम बार-बार करते हैं

हम वो मजनूँ नहीं कि हिज्र में जो
दामने दिल को तार-तार करते हैं

ख़ूब खुलता है जिस्म का जंगल
जब कभी हम शिकार करते हैं

गिर गया आँख-वाँख का पानी
जिस्म को संगसार करते हैं

हमने सिनासपर किया लेकिन
लोग पीछे से वार करते हैं

शायरी-वायरी नहीं करते
दिल का हल्का बुख़ार करते हैं

संपर्क : 'बैतुलमुकर्रम', महमूदशाह लेन, पटना- 4 फ़ोन : 09304009026 (मो॰)

ग़ज़ल

☆ सत्यपाल सिंह चौहान 'भारत'

माना कि दोस्तों की इनायत नहीं रही
लेकिन मुझे किसी से शिकायत नहीं रही

रूहानियत का इशक़, न रूमानियत का शौक़
मस्जिद में और घर में इबादत नहीं रही

उसने भी अपनी क़ैद से आज़ाद कर दिया
परवाज़ की परों में जो क़ुवत नहीं रही

निला था उसको ढूढ़ँने मैं शौक़ से ज़रूर
वो मिल गया तो दीद की चाहत नहीं रही

रोज़े अजल से खुद जो क़यामत का रूप हैं
उनके लिए तो कोई क़यामत नहीं रही

जिसके करम से तह हुई जिद्दत की मंज़िलें
क्यों उसकी जुस्तजू की रवायत नहीं रही

मेरा कलाम हो गया दुनिया की जायदाद
अपनी ग़ज़ल इबारते **भारत** नहीं रही

संपर्क : 1512, सेक्टर 15, फ़रीदाबाद

ग़ज़ल

☆ इफ़्तेख़ार राग़िब

जी चाहे कि दुनिया की हर इक फ़िक्र लाकर
कुछ शेर सुनाऊँ मैं तुझे पास बिठाकर

जाने कहाँ किस मोड़ पे हो जाए मुलाक़ात
इस आस में फिरता हूँ तेरे शहर में आकर

खुशियाँ तुझे मिल जातीं तो अफ़्सोस न होता
आख़िर तुझे क्या मिल गया दिल मेरा दुखाकर

ये क्या कि सदा अपने ही मतलब की दुआएं
औरों के भी हक़ में कभी ऐ दोस्त दुआकर

फिर देख कि मिलती है तुझे कितनी मुसर्रत
है शर्त कि एख़लास व मोहब्बत से मिलाकर

चेहरे से तेरे चिपकी हुई हैं मेरी आँखें
तू भी तो मेरी सिम्त कभी देख लियाकर

ग़ीबत से न भर जाएँ कहीं नाम-ए-आमाल
जो कुछ तुझे कहना है कहो सामने आकर

बख़्शा है जो उसने दिले खुशफ़हम को **राग़िब**
रखा है हर इक ज़ख़्म को सीने से लगाकर

संपर्क : दबिस्ताने अदब, पोस्ट बक्स न॰- 11671, दोहा, क़तर
00974 5707870 (मो॰)

एक दीप तुम जला लेना

☆ डॉ॰ वंदना वीथिका

नाम हमारे अपने घर, एक दीप तुम जला लेना
मोम हमारी यादों का, कुछ देर तुम गला लेना।

बाग़बाँ-से तुम रहो, एहसान एक तो कर देना,
फूल-सी हँसी हमारी, कुछ देर तुम खिला लेना।

दर्द दे जो आँखों को, तस्वीर वो मिटा देना–
दीदार को जगी पलकें, कुछ देर तुम सुला देना।

ग़ज़लों के पर्दे हैं सजे, झरोखों को खुला रखना,
होंगे हम वहीं कहीं, कुछ देर तुम हिला देना।

संपर्क : द्वारा श्री अजय कुमार (अधिवक्ता), 2, तूतबाड़ी, गया (बिहार)

हाइकु

☆ **डॉ0 रामनिवास 'मानव'**

लगी दांव पे
हर युग में नारी,
छल से हारी।

मॉडर्न नारी
ग्लैमर के कारण
खुद से हारी।

गर्भ में हत्या!
नारी बहन–बेटी,
कितनी हेठी!

अग्नि–परीक्षा,
फिर भूमि–समाधि;
नारी–समीक्षा।

आज की नारी
प्रसाद की 'तितली',
फूलों की क्यारी।

विभा-शिवानी,
मधुमिता-जेसिका,
वही कहानी।

किस से आस,
जब दिया पति ने
ही वनवास!

अब तो नारी
कहने को अबला,
नर पे भारी।

संकट भारी,
बनी आज दुश्मन
नारी की नारी।

देखते मौन;
जलती हैं नारियाँ,
दोषी कौन?

बहू–बेटियाँ
बनी हैं चौसर की
आज गोटियाँ।

संपर्क : 706, सैक्टर-13, हिसार- 125005 (हरि॰)
फोन- 01662-238720

संस्कृत साहित्य अभिव्यक्ति है हमारी सांस्कृतिक चेतना की

❀ सिद्धेश्वर

जिस प्रकार हिंदी साहित्य भारतीय अस्मिता की वाग्धारा है उसी प्रकार संस्कृत साहित्य भी हमारी सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति है, मगर अँग्रेज़ी के समक्ष हिंदी व संस्कृत को दोयम दर्जे को ठहराने का प्रयास किया जा रहा है जिसे हम क़तई स्वीकार नहीं कर सकते। हिंदी व संस्कृत इन दोनों में पनपी हीनत्व की ग्रंथी को तोड़ना अतिआवश्यक है। हिंदी के उन्नयन के लिए तो सदैव प्रयास हो रहे हैं और सन् 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से लेकर सन् 2007 में न्यूयाक में संपन्न आठवें सम्मेलन के ज़रिए संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को अधिकृत भाषा का दर्जा दिलाने तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया, किंतु सांस्कृतिक संरक्षिका संस्कृत को उन्नयित करने के प्रयास में उदासीनता और शिथिलता बरती गई है, क्योंकि अब तक पर्याप्त शैक्षिक संस्थानों व उपयुक्त पाठ्य उपकरणों तथा पाठ्यक्रमों की कमी के साथ-साथ संस्कृत को रोजी-रोटी व आजीविका से जोड़ने की कोशिश नहीं के बराबर हुई है। आख़िर तभी तो हमारे नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट होती जा रही है और समाज में कुप्रवृत्तियाँ व विद्रूपताएँ बढ़ती जा रही हैं। इसी का दुष्परिणाम है कि समाज अपसंस्कृति व असभ्यता की ओर तेजी से अग्रसर है और कभी पूरे विश्व में अपनी महान सभ्यता व संस्कृति तथा धर्मशास्त्र की शाश्वत घटनाओं की वजह से जगद्गुरु के रूप में विख्यात भारत आज भ्रष्टाचार, घोर अनैतिकता, स्वार्थपरता, अराजकता, आतंकवाद तथा अलगाववाद से बुरी तरह जूझ रहा है। जिस भारत के धर्मशास्त्र, वेद-पुराण, महाभारत, रामायण आदि सदा से नागरिकों को उनके कर्त्तव्य और नैतिकता की सीख देते रहे हैं और 'उदार चरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत' आदि कितने ही संस्कृत शास्त्रों में उपलब्ध संदेशों से अंतरराष्ट्रीय जीवन प्रेरित होते रहे हैं, वही देश आज स्वयं खण्ड-खण्ड होने को है और इसकी एकता व अखण्डता पर लगातार ख़तरे मंडरा रहे हैं। इसके और चाहे जो कारण हों, राष्ट्रभाषा हिंदी और संस्कृत भाषा की उपेक्षा भी प्रमुख कारण है। हम अपने आचार, व्यवहार और संस्कार को भूलते जा रहे हैं और इस भौतिकवादी युग में सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिए वास्तविक सुख--शांति हमसे दूर होती जा रही है। हम देशवासी एकता के सूत्र में न बँधकर एक-दूसरे के प्रति घृणा, द्वेष व ईर्ष्या का शिकार हो रहे हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि संस्कृत वाङ्मय में वर्णित व सुस्थापित मूल्यों के कारण ही हमारी राष्ट्रीयता के साथ-साथ समस्त मद-वादों, विचारधाराओं के बीच समन्वय स्थापित कर मानव जीवन के उत्थान हेतु संस्कृत साहित्य विचार में अभिव्यक्त होते रहे हैं। संस्कृत साहित्यकार ही भारतीय जीवन पद्धति में राष्ट्रीय एकता का भाव समाहित होता रहा है और गीता हमें भौतिक के अँधकार से उपर उठकर कर्म का पाठ पढ़ाती रही है- 'कर्मण्येवा धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' दरअसल, संस्कृत साहित्य के विशाल परिदृश्य में अनेक ऐसे विख्यात रचनाकार हुए हैं जिनके साहित्य से भारतीय संस्कृति समृद्ध हुई है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, बाणभट्ट आदि संस्कृत साहित्य के ऐसे प्रतिनिधि साहित्यकार हुए जिनके साहित्य में भारतीय संस्कृति की सफल अभिव्यक्ति हुई है और जो हमारी संस्कृति के मूल्यवान दस्तावेज हैं। इस संदर्भ में यह सुखद समाचार आया है कि विगत तैतालीस वर्षों के बाद वर्ष 2008 में पिछले दो वर्षों के लिए घोषित ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए वर्ष 2006 का पुरस्कार संस्कृत भाषा के मर्मज्ञ डॉ० सत्यव्रत शास्त्री का चयन किया गया है जिन्होंने दशम गुरुगोविंद सिंहजी पर आधृत प्रबंध काव्य 'श्री गुरुगोविंद सिंह चरितम् बौद्ध जातकों पर आधारित बोधिसत्व चरितम्', 'रामायण का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' जैसे अप्रतिम ग्रंथों की रचना सहित अबतक छह हजार से अधिक संस्कृत पद्यों की रचना की है। आज दक्षिणपूर्व एशिया के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों तथा संस्कृत अध्ययन केंद्रों में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन कार्य का बहुत कुछ श्रेय शास्त्री जी को जाता है। आज जब इस देश में संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में निरंतर कमी होती जा रही है और उसे तमाम आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं के लिए अनुपयुक्त कहकर ख़ारिज किया जा रहा है, संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुलता वाली हिंदी का छायावादी या द्विवेदीयुगीन हिंदी कहकर मख़ौल उड़ाया जा रहा हो, ऐसे में सत्यव्रत शास्त्री जैसे संस्कृत के उद्भट विद्वान भी हैं, जो साठ वर्षों से विरल संस्कृत साहित्य-सृजन में लगे हैं और उनसे काफी आशाएँ और अपेक्षाएँ की जाती हैं। यह संस्कृत भाषा के लिए संतोष की बात है। जहाँ तक संस्कृत के शब्द भंडार का सवाल है, सच्चाइ यह है कि समस्त भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार में से समान रूप से प्रयोग होने वाले शब्दों की सूची बनाई जाए, तो निश्चित रूप से उसमें संस्कृत के शब्द अधिकतम होंगे।

निःसंदेह संस्कृति जीवन-मूल्यों पर केंद्रीत होती है। त्याग, करुणा, सहानुभूति, क्षमा, संयम आदि ये ऐसे जीवन मूल्य हैं जो भारतीय जीवन की धुरी हैं जिन्हें हम संस्कृत साहित्य में बखूबी पाते हैं। संस्कृत भाषा में व्यक्त विचार न केवल राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता और मेल-मिलाप को बढ़ावा देते हैं, बल्कि व्यक्ति के मन की अभिव्यक्ति के साथ-साथ वे राष्ट्र-मन

को भी अभिव्यक्त करते हैं। वह सांस्कृतिक चेतना को भी अभिव्यक्ति देते हैं। वैसे भी किसी विदेशी भाषा में राष्ट्र की आत्मा की और उसकी संस्कृति की अभिव्यक्ति हो ही नहीं सकती।

संस्कृत साहित्य के पास संस्कृत की, अथाह ज्ञान-विज्ञान की समृद्ध परंपरा है। इसकी लिपि देवनागरी है जो कंप्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और वैज्ञानिक है। इसलिए वर्तमान समय में संस्कृत को वास्तविक न्यायपूर्ण स्थान दिलाना हमारा परम कर्त्तव्य है। इसके लिए हमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों के बीच समन्वय स्थापित करना होगा। संस्कृत के विकास पर ही देश का सामाजिक और सांस्कृतिक विकास निर्भर करता है। इस ख़्याल स संस्कृत

के अस्तित्व को बरक़रार रखना देशवासियों का दायित्व है।

नवगठित बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना द्वारा नए सिरे से, इसके तंत्र को ज़िम्मेदार बनाने और संस्कृत को आम आदमी से जोड़ने का हर संभव प्रयास प्रारंभ किया गया है। 28 दिसंबर, 2008 को सम्राट अशोक की नगरी पाटलिपुत्र के तारामंडल सभागार में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित संगोष्ठी और इसके विभिन्न शैक्षिक सत्रों में संस्कृत के विविध पहलुओं पर देश के जाने-माने संस्कृत व हिंदी के विद्वत्जनों एवं चिंतक-विचारकों द्वारा विचार-विमर्श इसी दिशा में एक सराहनीय कदम साबित हुआ और संस्कृत जगत में न केवल इसका एक अच्छा संदेश गया, बल्कि संगोष्ठी में संस्कृत भाषा, साहित्य और शिक्षा में गुणात्मक बदलाव के लिए किए गए विचारों का आदान-प्रदान चर्चित है।

जब हम संस्कृत और सांस्कृतिक चेतना की बात कर रहे हैं, तो मौजूदा दौर में बढ़ते आतंकवाद पर भी एक नज़र डालना होगा कि आख़िर इसके पीछे सांस्कृतिक क्षरण तो नहीं। निश्चित रूप से सांस्कृतिक क्षरण से आतंकवाद में वृद्धि हुई है। संस्कृति, शिक्षा, धर्म, कला व साहित्य को मिलाकर बनती है, मगर जब इन चारों के बीच का संतुलन बिगड़ता है, तो मनुष्य में आतंकवाद या अतिरेकी प्रवृत्तियाँ पनपती हैं। आतंकवादी गतिविधियों का मूल हमेशा सांस्कृतिक धरातल का रहता है। यह तो इस देश की ऐतिहासिक फ़ितरत है कि यहाँ मानव जाति की कई संस्कृतियाँ एक साथ रहती हैं। कई संस्कृतियों ने भारत की धरती को अपना बसेरा बनाया। कई कारवाँ यहाँ रुके और यहीं रह गए। कई भाषाएँ यहाँ पनपीं और भारतीय राष्ट्र को मज़बूत बनाने में जुटी रहीं, मगर आज उसे ही हम भूलते जा रहे हैं, जबकि अतीत से हमें सीखना चाहिए था। संस्कृत की उपेक्षा कर आख़िर हम कहाँ जाना चाहते हैं? हम संस्कृत साहित्य में उल्लिखित दर्शन का बखान कर उसे हलाल करके आगे तो बढ़ जाते हैं, परंतु वह रहता है वहीं का वहीं। आज की जरूरत उसे निकालकर बाहर करने की है यानी संस्कृत भाषा और उसके साहित्य को समृद्ध करने की है। केवल वसुधैव कुटुम्बकम का उपदेश देने से ही काम नहीं चलेगा, बल्कि उस पर अमल करके दिखाना भी है।

अब हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि हमारा सारा खेल संस्कृत भाषा की असीमित व्याप्तियों और शब्द-साधना के सांस्कृतिक चमत्कार का रहा है। हज़ारों वर्षों से वर्चस्व का जो तामाम हमने खड़ा किया है और जिसके चलते हमारी हस्ती चाहकर भी मिट नहीं पा रही है उसका एकमात्र आधार संस्कृत भाषा और उसके शब्दों के सिवा और क्या है? सामाजिक सोपान और सांस्कृतिक धरोहरों के ऊपरी खण्डों में हम जहाँ और जैसे हैं उसे सही सिद्ध करने वाले सारे दर्शन, चिंतन-शास्त्र और धर्मग्रंथ संस्कृत भाषा और उसके साहित्य में ही तो सुरक्षित हैं। जब से मानव का इस धरती पर अवतरण हुआ है, तब से मिट्टी की सोंधी गंध को अपने में समेटे संस्कृत साहित्य ज़िंदा है और सांस्कृतिक चेतना एवं भारतीय अस्मिता का वाग्बोध बना हुआ है जिससे पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रभावित होती रही है। इसलिए समय का तक़ाज़ा है कि संस्कृत की भाषिक और सांस्कृतिक यथार्थ के मद्देनज़र संस्कृत साहित्य की व्यापकता को समें और इसकी प्रेरक शक्ति से मानव- मूल्य विकसित करें। और तमाम भारतीय भाषाओं की चिंता करने वाले संस्कृत की सुधि लें अन्यथा यह भाषा सिर्फ जन्म से निधन तक आम जन की संस्कार क्रियाओं तथा उपासना स्थलों तक ही गुँजायमान होती रहेगी।

***

संपर्क : अध्यक्ष,
बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड,
414 एफ॰, गोविंदायन भवन,
पूर्वी बोरिंग केनाल रोड, पटना-1

आरज़ू

मो॰ सुलेमान

परवरदिगार!
मैं अपनी धाती से बेदख़ल कर दिया गया,
मैं अपने घर से बेघर हो गया।
मुझे है कैम्प की मजबूरी,
बन गई यही क़िस्मत मेरी।
इज़राईली विस्तारवादी नीति,
उसका सिकुरिटी एजेंडा।
अमेरिका-इज़राई-भारत तिकोण,
और विदेश नीतियाँ।
दिसंबर 08 जनवरी 09 की लड़ाई।
फ़िलिस्तीन की कितनी तबाही?
योजनाबद्ध संहार
कि सुनकर काँप उठते प्राण।
टैंक, मिसाईल और लड़ाकू विमान,
शोले बरसाता आसमान!
डिप्लिटेड यूरेनियम व श्वेत फासफोरस बम?
धरती लहू से लाल,
बच्चे, औरतें और गर्भवती बेहाल।
तेरह सौ से अधिक को मिला जामे शहादत
जिसमें चालीस प्रतिशत से अधिक बच्चे व औरत
और 5300 ज़ख़्मियों का बुरा हाल,
इलाज के लिए बचा न अस्पताल।
क़रीब डेढ लाख बेघर,
पानी, बिजली, इंधन हमले की नज़र।
कितना बड़ा अंधेर
कि क़रीब पचास हज़ार घर मलबे के ढेड़?
स्कूल, युनिवर्सिटी व इंफ्रास्ट्रक्चर,
और संयुक्त राष्ट्र का भवन
साज़िश के तहत / हुए ये ध्वस्त।
अर्थ-व्यवस्था तार-तार,
अब अनुदान ही रहा जीने का आधार।
मनवाधिकार का खुला उल्लंघन,
हॉलोकास्ट का नया संस्करण
और गंभीर युद्धापराध।
हमारी इंसाफ़ की गुहार,
आँखों में आँसू और ओंठों पर आह।
पर गाँधी जी की सत्य-अहिंसा,
शायद रोक सकती है टैंक व युद्धक विमान
और दिला सकती है न्याय।

संपर्क : समनपुरा, राजाबज़ार, पटना- 14

हिंदी नाटकों में पुरुष द्वारा आरोपित नारी मनोविज्ञान

✯ डॉ० परमलाल गुप्त

"नारियों के मानसिक बंधन तथा नैतिक मान्यताएँ पूँजीवादी तथा सामंतवादी संस्कृतियों के माध्यम से जन्मे हैं। पुरुषों ने उसे बहकाकर उसकी दासता को सतीत्व तथा पतिपरायण की संज्ञा से विभूषित कर दिया है, ताकि वह असंतुष्ट न हो और अपनी निरापद स्थिति में भी गौरव का अनुभव करे।" [डॉ० सुरेश सिन्हा : हिंदी उपंयासों में नायिका की परिकल्पना, पृ० सं० 300-301] नारी और पुरुष सृष्टि के मूलाधार स्तंभ हैं, दोनों के सहयोग, समन्वय, संपर्क एवं सह-कर्त्तव्य का ही परिणाम यह मानव समाज है। नारी में सेवा, त्याग, क्षमा, सहिष्णुता, लज्जा, विनय, संयम, आत्मसमर्पण, वात्सल्य, स्नेह, धैर्य, आत्माभिमान, पवित्रता एवं कोमलता की भावना विद्यमान है, इन्हीं स्वरूपों में वह पुरुष निर्माण की प्रक्रिया को पूरा करती है। जीवन-संघर्ष में उसे प्रेरणा देती है। पुरुष स्वभाव में भी नारी की भाँति जहाँ अनंत देवी गुण विद्यमान हैं वहाँ दोष भी हैं, उसमें नारी की अपेक्षा अधिक कठोरता, विलासिता, स्वार्थपरता, शक्तिमत्ता है, जिसे वह चाह कर भी उसका निराकरण नहीं कर सकता और जीवन के वास्तविक मूल्यों की अवहेलना कर बैठता है, पुरुष का यही रूप चिरंतन नारीत्व की समस्या को जन्म देता है, जिसकी रक्षा हेतु नारी प्रत्येक युग में प्रयत्नशील और सचेत रही है। मानव-स्वभाव की इस प्रक्रिया के फलस्वरूप मध्यकाल में वैदिककालीन नारी का गौरवपूर्ण स्थानाच्युत हो गया वह सहचरी, देवी, माँ स्थान से आश्रिता, दासी बन अशिक्षा, अज्ञानता और सामाजिक प्रतारणा का शिकार हुई। स्त्रियों के व्यवहार तथा आचरण के विषय में कठोर नियम थे। पतिव्रत धर्म सर्वोपरि था, पुरुष के अधिपत्य में रहकर वंश चलाने तथा उसके उपभोग की वस्तु रही तथा समाज में अपनी शारीरिक निर्बलता के कारण स्वतंत्र जीविका का स्थान न पाकर पुरुष की दासी मात्र रही।

पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार और प्रसार से नारी में चेतना आई, उसने पुरुष की तुलना में अपनी स्थिति का अवलोकन किया और बड़ा अंतर पाया, पुरुषों से स्पर्द्धा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई वह पुरुष के समान कठोर और स्वतंत्र बनने का प्रयत्न करने लगी।

"नारी-स्वातंत्र" एवं जागृति को लेकर पिछले चार दशकों में कितने ही आंदोलनों ने जन्म लिया, उनका प्रभाव नारी की अंतरंग मानसिकता पर तो स्पष्टत: परिलक्षित होता है, किंतु उसकी बहिरंग प्रासंगिकता का संदर्भ विशेष परिवर्तित नहीं हुआ है। वह माँ, पत्नी प्रेयसी, बहिन, भाभी, विधवा, वेश्या, रखेल आदि रूपों में किसी न किसी तरह पुरुष से स्थापित सह-संबंधों द्वारा ही जानी जाती है।" [साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप : डॉ० विमला शर्मा, पृ० सं० 344] नारी इन सभी रूपों में परंपरा का पालन करने को बाध्य नहीं है, किंतु उसके संस्कार ही उसकी गरिमा एवं उदारता को अक्षुण्ण रखे हैं, उसके मौलिक संस्कार ही उसे त्याग, कर्त्तव्यनिष्ठ, सहनशील एवं धर्म की अनुगामिनी बनाते हैं जिसे पुरुष अपना अधिकार समझ बैठा है। "किसी न किसी तरह अनंतकाल से ही स्त्री पर पुरुष ने अधिपत्य जमा रखा है। इस कारण स्त्री में अपने को हीन समझने की मनोवृत्ति आ गई है और पुरुष ने स्वार्थवश स्त्री को यह सिखाया है कि वह उससे नीची स्थिति की है और स्त्री ने इस शिक्षा को सच्चा मान लिया है।" [हरिजन: पृ० सं० 124-2-1940 ।]

नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक "विषपान" की कृष्णा उसी नारी धर्म का निर्वाह करती है, जो संसार में केवल देने आई है, लेने नहीं। दीपक की भाँति जलकर घर का अँधेरा दूर करती है। वह पुरुष द्वारा रचाए गए षड्यंत्र का शिकार होती है और अपने अहं के साथ समझौता न कर विषपान कर लेती है। नाटक का यह कथन : जगत : केसर प्रेम त्याग चाहता है। केसर : केवल नारी से-पुरुष से नही।" ["विषपान : 79-80]

यहाँ नारी अपने प्रेम के लिए, अपने अधिकार के लिए विवश दिखाई देती है। गोविन्द वल्लभ के नाटक "ययाति" की शर्मिष्ठा पुरुष द्वारा प्रताड़ित होने पर राजपुत्री होकर भी दासी रूप में विचरण करती है।

उदयशंकर भट्ट के नारी पात्रों में अंबा पुरुष की सत्ता पर अवलंबिता समाज के प्रति नारी का एक चित्र प्रस्तुत करती है" पुरुष की आँखों के इशारों पर नाचने वाली दीन स्त्री की शक्ति ही क्या? विश्वनायक तुम देख रहे हो? तुम भी क्या देखोगे? पुरुष रूप में रहने वाले परात्पर, तुम्हें मेरी क्या परवाह?"। पुरुष शाल्व द्वारा प्रताड़ित होने पर कि "तुम उच्छिष्ट हो आकाश से मैले बर्त्तन में गिरी हुई अमृत की बूँदें भी पीने योग्य नहीं होती नारी (अम्बा) के अहं को ठेस लगती है वह बेचैन हो उठती है" शाल्व! नीच शाल्व! सौंदर्य के दीपक पर जल मरने वाले पतंगे! रूढ़ियों के दास! जाने दो, इसमें उसका दोष ही क्या है? सब दोष मेरा है, मेरा! मेरा दोष है। पर मैंने क्या किया?"। "मुक्ति दूत" की गोपा भारतीय आदर्श के अनुरूप पति की इच्छा को तर्क रहित मौन भाव से, स्वीकार कर व्यक्तिगत पीड़ा भोगते हुए भी उसकी लक्ष्यपूर्ति हुए नारीत्व की विवशता का प्रतीक है। भट्ट जी के नारी पात्रों का तीक्ष्ण स्वर उस पुरुष समाज से है, जिसने उसे अपनी इच्छाओं की दासी बनाया, वे पुरुष के अहं की शिकार बनी हैं। पुरुष होने के नाते उसे घमंड है कि (विवेक और वीरता की दोनों आँखों से जगत को वश में करने वाली पुरुष जाति स्त्री के बहकावे में कभी नहीं आ सकती। इसी नाटक में वृद्ध ्रवा उस पुरुष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी दृष्टि में स्त्रियों की मान-मर्यादा, आत्मगौरव का महत्त्व नगण्य कदाचित शून्य है। इसीलिए तो वह वृद्ध होने पर भी स्वयंवर में अम्बालिका के वरण की इच्छा से जाता है। उसी दृष्टि में नारी का अस्तित्व केवल पुरुष के लिए है- "स्त्रियाँ आख़िर हैं किसलिए? फूल की सुगंधि भौरे के लिए और वर्षा की बूँदें पृथ्वी के लिए। इनका अपनापन तो कुछ है ही नहीं।" (विद्रोहिणी अम्बा, पृ० 74-75)

नाटककार श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटक गरुड़ध्वज की बासंती पिता बौद्ध काशीराज उसे बृद्ध यवन को सौंपकर मुक्त हो जाना चाहते हैं। बासंती राजकुमारी मलयवती से कहती है- "किसका-किसका मुँह बंद करोगी, बहन। लोक निंदा से रोकने की शक्ति रामचंद्र में नहीं हुई और सीता सी

सती को वनवास करना।'' (विद्रोहिणी अम्बा, पृ० 59)

पुरुष का सबसे बड़ा पौरुष और गुण- स्त्री का अविश्वास करना, उसे सदैव संदिग्ध दृष्टि से देखना, उसके आचरण पर पैनी दृष्टि रखना और अंत में अपमान और लांछन से उसके हृदय को चूर-चूर कर देता है। शासक पुरुष के लिए शासिता नारी रति से अधिक कुछ नहीं।'' ''दशाश्वमेघ'' नाटक में ''धरती और नारी दोनों की बुरी गति होती है, निर्बलों के साथ रहने में- देव पुत्रों का राज्य अब न टिकेगा।'' कौमुदी के इन कथन में नारी की असहायता और निर्बलता व्यक्त हुई है।'' वितस्ता की लहरें की नारी पात्र रोहिणी पुरुष के पुत्र रुद्रदत्त की पत्नी है, वह पति युवराज और रजनी के प्रेम में साधिका बनती है, उसका यह उत्सर्ग पुरुष द्वारा उत्पन्न की गई परिस्थितियों की विवशता का प्रतीक है- ''कभी देखा नहीं था तुम्हें - केवल घाट के शिविर में उनके साथ तुम लोगों के उतरने की सूचना मिली मुझे- नाव से तुम दोनों को अपने हाथ से उन्होंने उतारा- यह सब जान लेने पर मेरे नीचे की धरती धँसने लगी थी, तभी मैंने सोच लिया कि मुझे कुछ ऐसा करना होगा कि जो किसी तरुणी ने न किया हो।'' पुरुष के पाप, अनाचार सब क्षम्य हैं, उसके लिए मर्यादा का बंधन नहीं। नारी की भाग्यलिपि में लांछन, अपमान और अवहेलना अंकित हुइ है। उसे पग-पग पर प्रताड़ण सहनी पड़ती है। उसके लिए पिता के घर के अतिरिक्त किसी तीसरे घर का साहस करना भी पाप और भ्रष्टाचार है। पुरुष के लिए आकाश, पाताल और मृत्यु लोक सभी रास्ते खुले हैं।

उपेन्द्र नाथ अश्क के नाटक ''जय पराजय'' की हंसाबाई के भाग्य का विधान पुरुष द्वारा निर्धारित कर देने पर उसे एक वृद्ध राजपुरुष की युवा पत्नी के रूप में असंतुष्ट एवं अतृप्त रहना पड़ता है। अश्क ने अपने नाटकों में पुरुष की आर्थिक, भौतिक उपलब्धियों, वासना, रोमान आदि से जनित प्रवृत्तियों के मूल में पुरुष की स्वामित्व भावना को चित्रित किया है, जिससे नारी के जीवन में अनेक उलझनों, कुंठाओं और अंतर्विरोधों का जन्म हुआ।

1. गरुड़ध्वज, पृ० 32
2. वितस्ता की लहरें, पृ० 43
3. आधुनिक हिंदी नाटकों में नायिका की परिकल्पना, डॉ० प्रेमचलता अग्रवाल, पृ० 201।

पृथ्वी नाथ शर्मा नारी को शालीनता से वंचित देखना नहीं चाहते। नारी की समस्याएँ उनके नाटकों में एक जैसी हैं- उनके पुरुष पात्र एक ओर रोमांटिक और भावुक हैं, किंतु नारी पात्र शील का वैविध्य प्रस्तुत करते हैं। इसलिए पुरुष चरित्रों की अपेक्षा नारी पात्र प्रभावशाली हो गए हैं।''

जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद के नाटक गौतमनंद की सुंदरिका पति को संपूर्ण भावना से प्रेम करने पर भी उपेक्षित रहती है और पति उसकी सहमति के बिना प्रव्रज्या ग्रहण कर लेता है। यहाँ पुरुष द्वारा नारी के अंर्तमन की पीड़ा की उपेक्षा की गई है।

विष्णु प्रभाकर के नाटक ''समाधि'' की नारी पात्र भिक्षुणी हूणों के अत्याचार से पीड़ित होकर महाराज बालादित्य से आत्मपीड़ा व्यक्त करती है- ''क्या भारत की संतान इतनी हीन वीर्य हो गई है कि वह अपनी माँ-बहनों की रक्षा भी नहीं कर सकती?'' पुरुष द्वारा प्रताड़ित होने पर उसकी स्वाभाविक कोमलता, प्रतिशोध में परिणित हो जाती है, उसका अंर्तमन चीत्कार उठता है- ''कहाँ से कहाँ पहुँच गई! कहाँ वह शास्त्र और साधन का जीवन! कहाँ वह अनवरत संघर्ष, युद्ध, कटार और रक्त! रक्त हाँ रक्त! मैं रक्त की प्यासी हूँ। मैं हूणों के रक्त की प्यासी हूँ। उन हूणों के- जिन्होंने विहारों का ध्वंस किया, जिन्होंने हत्याएँ कीं, जिन्होंने नारियों का घोर अपमान किया- वे पापी, राक्षस, हत्यारे, नीच।'' ''अजीत सिंह'' की रजिया और ''शारदीया'' की बायजाबाई परिस्थितिवश प्रेम का दमन करने वाली नारी पात्र है।

रामवृक्ष बेनीपुरी की अम्ब्रपाली एक ओर पुरुष (अरुण) की कसक भरी स्मृति में घुलने वाली नारी है तो दूसरी ओर अपने रूप और यौवन के प्रति पूर्ण सचेत भी है अंततः अंर्तमन मुखर उठा है- ''काश तू जान पाती मैंने जिंदगी भी लाश की तरह ढोई है!!

1. डॉ० शांति मलिक: हिंदी नाटकों में शिल्प विधि का विकास
2. ''समाधि'' : पृ० 9, विष्णु प्रभाकर
3. ''समाधि'' : पृ० 142, विष्णु प्रभाकर
4. अम्बपाली : पृ० 104, रामवृक्ष बेनीपुरी

डॉ० कंचन लगता सब्बरवाल के नाटक ''अनंता'' की नारी अनंता जीवन पर्यंत देवगुप्त को सद्मार्ग लाने के लिए तिल-तिल जलती है। और पुरुष अपने गद में नारी की सद्भावनाओं को देख नहीं पाता है, अंततः अननूता को निराशा प्राप्त होती है और वह अपने प्रणयी से अगले जन्म में मिलन के लिए चल देती है।

मोहन राकेश के ''आषाढ़ का एक दिन'' की मल्लिका का पुरुष (कालिदास) के प्रति दृष्टिकोण ''में टूटकर भी अनुभव करती हूँ कि तुम बन रहे हो।'' संपूर्ण समर्पण को व्यक्त करता है और वही पुरुष कुछ बन जाने पर नारी को उपेक्षित कर उसकी भावना को ठेस पहुँचाता है। एक पुरुष विभिन्न नारियों से संबंध स्थापित करने के बाद भी साफ़-पाक और विवाह करने योग्य है, वही नारी परिस्थिति के भँवर में नीचे गिर जाती है जिसको स्वीकार करने का साहस आधुनिक पुरुष में नहीं है। ''लहरों का राजहंस'' की सुंदरी एक पत्नी होने के बावजूद पत्नी नहीं बन पाती, टूट कर रह जाती है, वह नंद में जिस ''पूर्ण पुरुष'' को प्राप्त करना चाहती थी, उसे पाने में असमर्थ रही, इस अंतर्द्वन्द्व में वह कह देती है-'' तुम! कितने-कितने शब्दों में ढाँपा है उन बिंदुओं को? जाओ, कुछ और शब्द ढूँढ़ो। परंतु अंत में कहाँ रह जाते हैं तुम्हारे वे सब बिंदु? कहाँ चले जाते हैं तुम्हारे वे सब शब्द?'' यहाँ नारी पुरुष और उसकी चेतना को अपने तक बाँधे रखना चाहती है और पुरुष बँधकर भी उससे ऊपर उठना, एक अपार्थिव जिज्ञासा में अपने लिए उपलब्धि ढूँढ़ना चाहता है।

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल की दृष्टि में स्त्री और पुरुष में उसके अहंकार और समर्पण में संघर्ष की स्थिति अनिवार्य रूप से चलती रहती है। ''पुरुष का लक्षण है उसकी हर इच्छा की पूर्त्ति- चाहे जैसे!'' नाटककार के नारी जीवन की विडम्बना यह है कि वह पुरुष से यह शब्द सुनकर कि ''मैंने तुम जैसी बहुत सी औरतें देखी हैं। वह अपने समर्पण की बात कहती है।'' 1. डॉ० चन्द्रशेखर : समकालीन हिंदी नाटक कथ्थय चेतना: पृ० 274 : डॉ० लक्ष्मीनारायण तुमने बहुत औरतें देखी है। मैंने सिर्फ़ एक

क्रः शेष भाग पृष्ठ 30 पर देखें

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना के
संस्कृत भाषा एवं साहित्य के
तथा संस्कृत शिक्षा की गुणवत्ता में
: दिनांक
28

भाषा एवं साहित्य के उन्नयन
तथा संस्कृत गुणवत्ता में सुधार के
28

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना के तत्वावधान में
संस्कृत भाषा एवं साहित्य के उन्नयन
श्री के० विक्रम राव
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद
प्रो० अरुण कुमार

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना के तत्वावधान में
संस्कृत भाषा एवं साहित्य के उन्नयन
: दिनांक :
28 दिसम्बर,
2008
: स्थान :
श्री सुनील दुबे
श्री के० विक्रम राव
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय विचार मंच
एवं विचार दृष्टि का
द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन
ANNUAL CONFERENCE OF
RASHTRIYA VICHAR MANCH
AND VICHAR DRISTI
31st OCTOBER
2.30 PM to 4.30 PM
RAJENDRA BHAWAN

राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार पटेल की 133वीं जयंती पर
राष्ट्रीय विचार मंच
का
31 अक्टूबर 2008

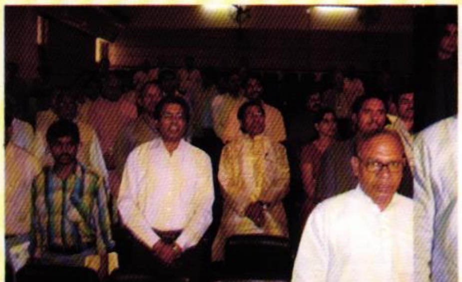

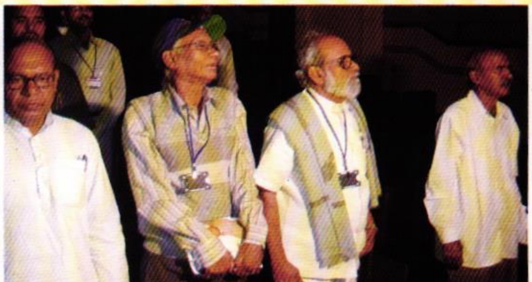

2ND ANNUAL CONFERENCE OF
RASHTRIYA VICHAR MANCH
AND VICHAR DRISTI
3rd SESSION
30TH OCTOBER

पत्रकारिता पर उच्च कोटि के आलेखों से भरपूर है विशेषांक

✯ समीक्षक : उर्मिला कौल

मानव शरीर में जो महत्त्व मस्तिष्क का है, पत्रिका में संपादकीय है। क्योंकि विचार मस्तिष्क में अँकुरता है- सुविचार एवं कुविचार- एक कल्याणकारी और दूसरा विनाशकारी ।

'विचार दृष्टि' के संपादक ने सही कहा है- तोप-तलवार, गोली-बंदूक से लड़ने की बजाय क़लम से क्रांति की चिनगारी ज्वाला में भड़की थी। याद आती हैं बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' की पंक्तियाँ-

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए
प्राणों के लाले पड़ जाए
त्राहि-त्राहि नभ रवि में छाए

आज भी ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं। पलायनवादी राजनीति से राष्ट्र की रक्षा संभव नहीं है। क़लम की धार आज भी पानीदार है। लेकिन जनमानस सुविधाभोगी हो चुका है। इसकी रगों में रवानगी मंचों से भी उठाने की आवश्यकता है। वीर रस में वाचन में अद्त शक्ति होती है।

'विदेशी माटी में पल्लवित और पुष्पित हिंदी' आश्वस्त करने वाला प्रामाणिक लेख है। हिंदी की वैज्ञानिकता, हिंदी की तीक्ष्णता और हिंदी की सटीकता को सब से पहले 19 वीं शताब्दी में फ्रेडरिक पिनकॉट ने पहचाना था। हिंदी की वरिष्ठ विदूषी राज बुद्धिराजा कहती हैं- विदेशों में उनके 50,000 से अधिक हिंदी छात्र हैं। जापान में हिंदी कार्य पर उन्हें जापान के सम्राट द्वारा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार सम्मान प्रदान किया गया है।

दु:खद, चिराग़ तले अँधेरा ।

अंक 37 में पत्रकारिता पर बहुत आलेख हैं। उच्चकोटि के । उर्दू पत्रकारिता पर उप संपादक डॉ० शाहिद जमील और डॉ० सैयद अहमद क़ादरी के आलेख हैं। उर्दू के इतिहास का प्रक्षालन है। शोधार्थियों के लिए अमूल्य निधि। डॉ० रूक्मा जी राव 'अमर' ने लिखा है- 'हिंदी प्रदीप' को साहित्य समीक्षा प्रकाशित करने का सर्वप्रथम श्रेय प्राप्त है। क़लम की महत्ता पर डॉ० मधु धवन ने रहीम का दोहा उद्धृत किया। डॉ० रेखा मिश्र ने शायर अकबर का उर्दू शेर दिया है-

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो
जब तोप मुक़ाबिल हो, तो अख़्बार निकालो

निश्चय ही यह सच उस संघर्ष काल का था, जब विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने को कण-कण में बेचैनी थी। आज का जनमानस भी लगता है राजनेताओं की तरह बयानबाज़ी में फँसकर रह गया है। यथा- 26 नवम्बर, 2008 मुंबई पर आतंकी आक्रमण।

शायद हम हमेशा की तरह पयालयनवादी हो चुके हैं। Survival of the fittest को दरकिनार कर चुके हैं।

डॉ० शाहिद जमील ने संपादक, सिद्धेश्वर जी को अंतरंगता से पहचाना है। पाठकों को महसूस होगा- अच्छा संपादक, अच्छा पत्रकार, अच्छा साहित्यकार और अच्छा साहित्यिक यात्री एक नेक इंसान भी हो सकता है। यानी आदर्श व्यक्तित्व! उनके यात्रा-वर्णन में मुझे एक अत्यंत संवेदनशील मानव का आभास हुआ है। साहित्य का भी व्यक्ति की तरह संवेदनशील होना अनिवार्य है। अन्यथा मरु--विस्तार!

डॉ० एम० तंकमणी अम्मा द्वारा साहित्य प्रेमी, संस्कृति पोषक डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर के लेख से आश्वस्ति प्राप्त हुई- संस्कृति के प्रति आस्थावान ही उसके प्रकाश-स्तंभ हैं। भले ही संख्या कम हो। ऐसे संस्कृति के पोषक होमियोपैथिक मदर टिंक्चर की बूँदों-सा प्रभावशाली होते हैं। वास्तव में, हमारी संस्कृति वैश्विक- कल्याण की पक्षधर है।

बिहार की विकास यात्रा-एक वरिष्ठ साहित्यकार का सिंहावलोकन है। सहज एवं सरल। भावात्मक दृष्टि से परिपूर्ण। गहन अन्वेषण!

पत्रकारिता को समय का इतिहास कहा गया है। अत: पत्रकारों का सत्यवादी, स्वस्थ, स्वच्छ बयान देने का गंभीर दायित्व है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम साहब ने कहा था- पत्र खोलो-मुखपृष्ठ पर अपराध को बड़े-बड़े अक्षर में देखा जाता है। निराशावादी अस्वस्थ मानसिक प्रदूषण! हमारे राष्ट्र की उपलब्धियों को हाईलाइट किया जाना चाहिए। जन-मानस को स्वस्थ ऊर्जावान रखने का दायित्व पत्रकारों का भी है। साहित्य तो हाशिए से बाहर कर दिया गया है। दु:खद!

सिद्धेश्वर जी ने बिहार के अपराध युक्त दौर का भी ज़िक्र किया है। राजनेता की जैसी दृष्टि-वैसी सृष्टि! अस्वस्थ दौर पर अंकुश तो दिखायी देता है, परंतु बिजली की स्थिति सोचनीय है।

अपनी अस्मिता से जूझता बिहार- जब कोई प्रदेश अपनी अस्मिता के लिए जागृत होता है, तो निश्चय ही, यह शुभ संकेत होता है। उसका प्रगति पर क़दम होता है। वर्तमान राजनेता के संकल्प की पुष्टि हैं मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ-

मैं स्वर्गलोक को लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

संकल्पबद्ध के लिए कड़ी चुनौती!

दक्षिण भारत की यात्रा के अंतर्गत सिद्धेश्वर जी ने लिखा है- तमिलनाडु सहस्त्राब्दी प्राचीन मूल तमिल संस्कृति को संजोये भारत का यह मंदिर है। हिंदी साहित्य सम्मेलनों की बदौलत मुझे भी महसूस हुआ था- तिरुपति के इस घर का द्वार सद्य: कल्पना से मण्डित देखकर पुलक-सी हुई थी। पता चला- निकनेम की तरह यह शुभ उकेरन होता है। उत्तर भारत में प्रत्येक पूजा अनुष्ठान-स्थल पर

स्वस्तिक चित्र के साथ अन्य शुभचिंह् उकेरे जाते हैं।

डॉ० अंबेडकर ने शत प्रतिशत सही कहा है- वेदों में आर्य ऋषियों ने भारत भूमि (तत्कालीन जम्बू द्वीप) के पर्वतों-नदियों की जिस ममतामयी स्तुति का गान किया है, वैसी आत्मीयता तो केवल धरती-पुत्रों में ही हो सकती है। इतिहास साक्षी है- जितने विधर्मी-विदेशी आक्रमणकारी आए, इस भूमि को लूटे। नृशंस अत्याचार किए। सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने के लिए यहाँ गर्दनों पर तलवार रख कर धर्म परिवर्तन कराए गए। यह भारत आर्य भूमि है- इसका प्रमाण विष्णु पुराण में है जो उस वक़्त अखण्ड भारत था–

उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारते नाम, भारती यत्र संतति।।

अर्थात् हिंद महासागर के उत्तर में हिमालय पर्वत के दक्षिण में जो भू भाग है, उसे भारत कहते हैं। वहाँ के समाज को भारती या भारतीय के नाम से जाना जाता है। (हिंदू ही हिंद महासागर के नाम का आधार है) अत: यह विशाल हिंदुओं का हिंदुस्तान है।

इसी की पुष्टि बृहस्पति आगम में–

हिमालस्य समारम्य्यावद इन्दु सरोवरम्।
तं देव निर्मितं देशम् हिन्दुस्थान प्रच्क्षते।।

अर्थात् हिमालय से लेकर इन्दु (हिंद) महासागर तक देव पुरुषों द्वारा निर्मित इस भूगोल को हिन्दुस्थान कहते हैं।

2500 बरसों में जो आक्रांत यूनानी, यवन, हूण, तुर्क, तातार, शक, कुशाण सीरियन, पुर्तगाली फ्रेंच, डच, अरब, मुग़ल, अंग्रेज़ आये इन सभी ने भ्रामक बातें फैलायीं। इन लोगों ने ज़ुल्म-तले राज किया परंतु इस भूमि के प्रति आस्था न रख, संस्कृति ने वर्ण संकरता लाए।

बिहार के सर्वांगीण विकास का जो आकलन है, निश्चय ही, अन्वेषण पर आधारित है। जड़ मूल का विकास तभी संभव है, जब इन लोगों पर चीन की तरह पाबंदी लगे। चीन ने जो फ़ॉरमूला बनाया, उसे सख़्ती से लागू किया। उनकी जन संख्या और मृत्यु औसत समान हो गयी थी। पहले बच्चे को सरकार आर्थिक सहायता देती है। दूसरे पर नहीं और तीसरे बच्चे पर पहले वाली सहायता काट दी जाती थी। (स्मृति के आधार)। अल्प संख्यक-बहु संख्यक हटा देना चाहिए। ज़रूरतमंदों को सही शिक्षा की सुविधाएँ दी जाएँ। खुली प्रतियोगिताओं में मात्र प्रतिभा को प्रश्रय दिया जाये। 'स्टाइयेंड' या आर्थिक सहायता का दुरुपयोग देखा-सुना गया है।

डॉ० अतुल रस्तोगी ने भाषा की शुद्धता बनाये रखने के लिये हिंदी में अनुनासिकता और अनुस्वारता के भेद स्पष्ट किये हैं। पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे। डॉ० एम० शेषण का लेख भारत के सभी संस्कृति के प्रेमियों की चिंताओं का प्रतिनिधित्व करता है। मूल्यवान विलक्षण संस्कृति की उपेक्षा और मूल्यहीन समाज की अँधी नक़ल किसी भी कोण से ग्रहण करने योग्य नहीं है। भारत की नारी ही भारत की संस्कृति है, सभ्यता है।

क़लम यक्ष प्रश्नों के उत्तर मांगती हैं–

- क्या मर्यादाओं का उल्लंघन आज़ादी है?
- क्या पश्चिम के मूल्यहीन समाज की नक़ल प्रगति है?
- चल-चित्रों के सेंसर बोर्ड क्या सीमा-रेखा रखते हैं?
- घरेलू धारावाहिकों में षड्यंत्रकारी, हत्या करने वाली नारियाँ दिखाकर हम समाज को, परिवार को क्या सिखाना चाहते हैं?
- संस्कृति को बचाने का संसद में क्या प्रयास हो रहा है? रैंप हमारी भारतीयता में कहाँ से शामिल हो गया?
- डायपर और हगीज़ का प्रचार, आज माताओं को गुमराह कर रहा है, मेरा अनुभव है– मात्र दस दिन का शिशु भी स्पर्श-संकेत समझता है। उसे अनुशासित करने के लिए माता को अपनी सुख, सुविधा, नींद इत्यादि को तिलांजली देनी पड़ती है।

इन विचारों पर चिंतन और व्यवहार के लिए क़लम तो गतिशील है। परंतु अंधी दौड़ पर परिवार और समाज को लगाम लगानी पड़ेगी।

❋❋❋

संपर्क : गीता भवन, हरि जी का हाता,
आरा-802301

पृष्ठ 28 का शेष भाग

पुरुष देखा है।'' ''यह प्रश्न'' की द्रौपदी (नारी) के पास शब्द है, एकता है, निष्ठा है, भक्ति और प्रेम है और पुरुष?- ''स्वीकारने नहीं, बाँटने चले थे- स्वयं बँटे हुए।'' नाटककार रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी' का नाटक ''प्रबुद्ध सिद्धार्थ'' की यशोधरा द्वार पर आये भगवान बुद्ध से प्रश्न करती है- ''अपनी भार्या को उस प्रकार अनायास, असूचित, असावधान छोड़कर गृह-त्याग करने की आवश्यकता उसके पति को क्यों हुई? क्या उन्हें भय था कि वह उनके मार्ग में बाँधा उपस्थिति करेगी, उन्हें अपने क्षुद्र स्वार्थ के हेतु अपने असहाय नारीत्व के बंधन में बाँधने अथवा उनके मार्ग का भार बनने का उपक्रम करेगी।'' यह प्रश्न आज की नारी का प्रश्न है, जिसका उत्तर वह पुरुष से चाहती है।

कैलाश नाथ भटनागर के नाटक ''भीम-प्रतिज्ञा'' में भरी सभा में द्रौपदी का अपमान किया जाता है ऐसे समय में द्रौपदी अपमानित नारी की भयंकर प्रतिहिंसा की प्रतीक बन जाती है।'' ... आप संधि कर सकते हैं, परन्तु मैं ... दुश्शासन के रक्त से सने बिना यह मेरे खुले केश कैसे बँध सकते हैं, और दुर्योधन के जीते जी मेरे जी की जलन कैसे बुझ सकती है।'' दूसरी ओर चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की नारी ''सुमन'' अपने पति का वध कराने वाले अशोक की प्राण-रक्षा कर सात्त्विक प्रतिशोध लेती है वह नारी के पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी मनोविज्ञान के प्रतिशोध का दो पक्षीय रूप है एक में पाशविक वृत्तियों का, दूसरे में सात्त्विक वृत्तियों द्वारा।

नाटककार मिश्र जी की दृष्टि में प्रकृति में पुरुष की अपेक्षा नारी को स्वभावत: सुकोमल बनाया है। पुरुष की प्रतिस्पर्धा हेतु नारी का उन्नयन मिश्र जी की दृष्टि में नारी को प्रकृति का बदला पुरुष से लेना है। उनकी दृष्टि में नारी के नयनों के आँसू उनके हृदय की उष्णता के आधिक्य को प्रकट करते हैं। पुरुष के दंभ ने उसे स्वयं को स्त्रियों से ऊँचा सोचने के लिए विवश किया।

1. ''यक्ष प्रश्न'' उत्तर युद्ध : पृ० 52
2. प्रबुद्ध सिद्धार्थ, पृ० 99
3. भीम प्रतिज्ञा, पृ० 16-17

संपर्क : संयोजक, अ०भा०ग० साहित्यकार परिषद, 'नमस्कार', बस स्टैण्ड के पीछे सतना-485001 (म०प्र०)

भाषा वैज्ञानिक से 'अचानक की एक मुलाकात'

✯ समीक्षक : चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

मन में उमड़ते विचारों को जब कोई व्यक्ति अपने तक ही सीमित रखना चाहता है तो वह निजी डायरी लिखता है। ऐसा लेखन भले ही वह कविता ही क्यों न हो, किसी को सुनाने के लिए नहीं होता, क्योंकि बकौल नामवर सिंह के वह 'फरमाइशी' लेखन नहीं होता। जब ऐसा व्यक्ति भाषा वैज्ञानिक हो, तो इन विचारों को सूक्ति या ऋचा ही कहा जाएगा, क्योंकि यह विद्वान शब्दों का ही नहीं, अक्षरों का भी मूल्य जानता है। ऐसे ही एक मूर्धन्य भाषा विज्ञान और आलोचना के विद्वान थे डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (1936) जिनका मानना था–

हीरे से तराशे शब्द जोड़
बुना है झिलमिलाता एक पट
जिसका हर रंगीला तार
अपनी अभिव्यक्ति में है दर्द
पीड़ा की एक नई सौग़ात ... काला चाँद

भाषा विज्ञान, भाषा शैली, आलोचना आदि विषयों पर लगभग दो दर्जन कृतियों के अलावा सौ से अधिक लेख लिखकर डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने हिंदी भाषा के क्षेत्र में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज कराया है। उनकी पहचान देश में ही नहीं, जापान, सोवियत संघ, इटली, अमरीका जैसे देशों में भी है। यह शायद बहुत कम लोगों को मालूम है कि डॉ० श्रीवास्तव एक अच्छे कहानीकार भी थे, (उनकी कहानियाँ स्थापित कथा पत्रिकाओं 'कहानी' और 'नई कहानियाँ' में प्रकाशित हुईं।) और अब तक शायद ही किसी को पता था कि वे एक सहृदयी कवि भी थे, जिनकी कविताएँ उनकी निजी डायरी में बंद पड़ी थीं। जब श्रीमती वीना श्रीवास्तव ने वह डायरी उपलब्ध कराई जिसमें डॉ० श्रीवास्तव की कविताएँ लिखी हुई हैं, जिन्हें डॉ० ऋषभ देव शर्मा ने पढ़कर पुस्तकाकार लाने का श्रम किया, तो उनका काव्य पक्ष सामने आया। इसी डायरी से चुनी इक्कीस कविताओं का संकलन है 'अचानक की एक मुलाक़ात' जिसे दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद के उच्च शिक्षा और शोध संस्थान ने प्रकाशित किया है।

पुस्तक :	अचानक की एक मुलाकात
कवि :	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
प्रकाशन :	2007 ई०
पृष्ठ संख्या :	96
प्रकाशक :	उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद- 500004

'अचानक की एक मुलाक़ात' में डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव का काव्य सफ़र 'आत्म परिचय' से शुरू होता है जिसमें कवि ने सुंदर प्रतीकों का प्रयोग किया है और अपने नहीं होने का दर्द एवं होने की अरजू को बयान किया है।

ओठों से फिसल जाय, महकते दर्द की वह सौग़ात कहाँ
आँखों से बहक जाय, शब्दों की वह अनगूँज पुकार कहां
घायल आँसुओं में बंद सपनों को महके है कभी तुमने
जकड़ दूँ तुम्हें शबनमी चीख़ों से मैं वह आवाज़ कहाँ?

यह होने न होने का दर्द कभी ग़ालिब को भी सताया था जब वे कहते रह

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता?

जब व्यक्ति कुछ होना चाहता है तो आकांक्षा जागती है। आकांक्षा और प्रयास ही तो उस नदी और नाव की तरह है जो उसे लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।

चेतन मन का पोल खोल
भावों की डाँड ले/ कूद पड़ो मझदार में
चाँद हँसिया बन/ स्वयं खिलखिलाएगा
तुम्हारी नाव से उठा/ असफलता का बुलबुला
आएगा/ आकर बिखर जाएगा
झण में आशा की गोद में/ निर्जीव सा ढह जाएगा। (आकांक्षा)

इसी आकांक्षा को जब कोई नहीं प्राप्त कर सकता तो उसकी आशाएँ बिखर जाती हैं और वह एक पुष्प की तरह टूटकर बिखर जाता है।

ड्योढ़ी पर ही छूट पड़ा/ अर्चना का फूल
असमय ही डाल से टूटा/बिखरा
किसी के भार से कुचला/ विवश/ एक पंखुरी हूँ। (भावातिरेक)

विरह की पीड़ा को चाय के संदर्भ से जोड़ते हुए कवि ने अपनी यादों को एक नया आयाम दिया है।

प्याला लाया/ पर लगता था ढल आया
(गरम उबलते पानी में)/ तेरा टाफी सा रंग ...
पीछे/ बहुत पीछे/ दौड़ा मन ।
आया/ थक कर लौटा/ ओह !
चाय की प्याली/ खाली है ! (संदर्भ)

मन में बसी यादें फॉस की तरह दबी रहती हैं पर जब उन्हें कोई कुरेद देता है तो किसी का भी मन बालक की तरह विचलित होना स्वाभाविक है।

अनगिनत रेखाएँ/ अनायास फैल गए
तोड़ते/ रराते/ फॉस बने याद के चट्टान ...
(अचानक यह क्या हुआ?)
सींचने जो मचल पड़ा
तोड़ लोरियों की तन/ अपनी ही परिधि में सिकुड़ा
अब तक सोया/ एक बालक नादान।
(अचानक की एक मुलाकात)

डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ऐसे सहृदयी कवि थे जो अपने उपजाऊ मस्तिष्क में खिज़ा में भी बहार देख सकते थे।

ओठों की रंगीन घाटियों में/ बेमौसम
गुलाब के फूल उगानेवाले/ ओ, सतरंगे कवि।
(एक साथी की पुकार)

तभी तो उन्होंने मिथकों और प्रतीकों को अपनी काव्याभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। मुनि का सागर पी जाना हो (भावातिरेक), राजा जनक के हल की नोक हो (अचानक की एक मुलाक़ात) या द्रौपदी स्वयंवर में मछली का घूमना हो (पथभ्रष्ट) या फिर ऐसे प्रतीक जैसे, टूटती चूड़ियों की खनक (स्पंदन), चाय में स्त्री (संदर्भ), प्रिज्म के रंग में कुँवारा घाव (मूड़ और ज़िंदगी) जैसे मिथक व प्रतीक इन कविताओं को और निखार देते हैं।

प्रो० दिलीप सिंह ने इस कविता संग्रह की भूमिका 'कविता में गुंथी अर्थ की अनुगूँज' में कहते हैं कि प्रो० श्रीवास्तव 'कविता' की बुनावट को एकदम भीतर तक देखने के पक्षपाती थे। प्रभाववादी और मूल्यपरक आलोचना की सीमाओं की वे पहचान करना चाहते थे।

श्रीवास्तव की इन छोटी-बड़ी सभी कविताओं में अपना निजी शिल्प है, गठन है। रवीन्द्र जी की इन कविताओं का एक पहलू यह भी है कि ये अलग-अलग स्तर पर अपनी ओर ध्यान खींचती है। अत: इनके मूल्यांकन की भिन्न प्रविछियाँ दरकार होंगी, गोकि पाठकेंद्रिकता सभी के लिए मुख्य प्रणाली होगी।

छप्पन वर्ष की अल्पायु (1992) में डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव भाषा विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि समस्त हिंदी जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाकर इस संसार को अलविदा कहा।

लिख दिया मौत के साये में एकाएक ठहर जाऊँगा
मैं वह आदम हूँ, मौत की तस्वीर भी बना जाऊँगा।।
(मैं वह आदम हूँ)

'अचानक की एक मुलाकात' की कविताएँ एक ऐसे भाषा वैज्ञानिक की रचनाएँ हैं, जिनसे काव्य-शैली को एक नया आयाम मिलेगा। डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव का मानना था कि "काव्य-व्यापार का क्षेत्र तो समाज एवं जगत, कवि, कविता और पाठक तक फैला होता है, पर कविता का वास्तविक क्षेत्र तो स्वयं कृति है, जो स्वयं में ठोस और यथार्थ है, जिसका पूरा अपना संसार, भाषा और शैली के दायरे के बीच सिमटा रहता है।

इस 'अचानक की एक मुलाकात' से पाठक आह्लादित होंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

❋❋❋

संपर्क : 1-8-28, यशवंत भवन, अलवाल, सिंकदराबाद (आं०प्र०)

ग़ज़ल अविनाश 'अमन'

अक़्ल कहती है कि कुछ तो ज़ब्त से भी काम ल
है मगर दिल का तक़ाज़ा बस उसी का नाम ल
हर मुसीबत झेलने को मैं ही काफ़ी हूँ अगर
बेसबब क्यों तू भी अपने सिर कोई इल्ज़ाम ल
साफ़गोई है मेरी आदत ये छूटेगी नहीं
तू जा चाहे कुछ भी इसका मतलब इब्हाम ल
मार डाले दर्दे फ़ुर्क़त ये मुझे मंजूर है
पर नहीं मंजूर कोई हाथ तेरा थाम ले
खेल मत इस दिल से तू हर वक़्त ये थक जाएगा
दो घरी को ही सही ये भी कभी आराम ले
इश्क़ ने इसार इतना तो सिखाया है मुझे
प्यास से मर जाऊँ मैं तू सरखुशी का नाम ल
क्या मुसीबत है वफ़ादारों को मिलती है सज़ा
जो रियाकारी करे बढ़कर वही इंआम ल

संस्कृत की रक्षा करनी है

✯ यामुन प्रसाद यादव

संस्कृत है जननी हमारी,
इसकी रक्षा करनी है।
दुर्दशा जो इनकी हो रही,
अब न आँखें मुँदनी है।।
यह भारतीय संस्कृति की मूल भाषा,
सदियों से जानी जाती है।
यह रही है देव वाणी,
ऐसे पहचानी जाती है।।
यह तो जाति, क्षेत्रवाद से,
अपने को उपर रखती है।
इसमें न कोई स्वार्थ भावना,
इससे बचती रहती है।।
संकल्प दृढ़ हो, लगन दृढ़ हो,
ऐसे हमें बचानी है।
संस्कृत है जननी हमारी,
इसकी रक्षा करनी है।।
हमारी सम से व्यवस्था के चलते,
हो रही है इसकी दुर्दशा ।
एक व्यवस्था हो पाठशाला में,
ये रही है हमारी आशा।।
अंतर है विद्यालय में भी,
यह क़ानून है कैसा।
एक नियम हो सबके हित में,
नियम बने अब ऐसा।।
'यामुन' अब मेरे मन में,
एक नियम ही लानी है।
संस्कृत है जननी हमारी,
इसकी रक्षा करनी है।।

संपर्क : ग्राम+पो०- कोढ़ली, भाया- करजाईन बाज़ार, जिला- सुपौल

सामयिक दोह

समय बहुत बदला हुआ, खत्म पुरानी रीति;
नये नये अंदाज में, दुनिया गढ़ती नीति।

क्रय-विक्रय की भीड़ है, स्वाथ का बाजार;
हानि-लाभ को देखकर चलता है संसार।

चतुराई सब ओर है, छल-प्रपंच का राज;
निज परिजन ही ठग रहे, सुधुआ जन को आज।

नहीं सूर के कृष्णा अब, ना तुलसी के राम;
ओसामा-दाऊद के, चेले करते काम।

प्रेम कोमती था कभी, जब कबीर का काल;
अब तो बिकता जा रहा, बनकर कच्चा माल।

अब तो चलती है यहाँ, बार-बार बंदूक;
अधि संख्यक हैं झेलते, हरदम यही सलूक।

अपराधी बेखौफ़ हैं, शासक हैं असहाय;
राम भरोसे लोग हैं, रक्षक पीते चाय।

रक्षक ही भक्षक बना, खोज रहा आहार;
चूहे को दिखला रही, बिल्ली मौसी प्यार।

घटता मेल-मिलाप है, बढ़ती पर आतंक;
बिचर रहे हैं सब जगह, हत्यारे नि:शंक।

अंधकार घनघोर है, लुप्त सकल आलोक;
आम आदमी विवश है, जाने को परलोक

मिटती जाती परंपरा, बढ़ती रही कुरीति;
होता रहता रोज दिन, बलात्कार का गीत।

मानसरोवर सूखता, कुंभीपाक विकास;
हंस नहीं अब दिख रहे, गीध-चील का वास।

अश्रु बहाती सभ्यता, जीभ बनी अश्लील;
बेलगाम सब बोलते, बचा नहीं है शील।

❋❋❋

'अतीत' को झाँकने का प्रयास

✯ समीक्षक : प्रो० दीनानाथ 'शरण'

सरस्वती के साधक की लेखनी है, या किसी चित्रकार की शब्द-तूलिका? विद्वत्ता का पर्वत है या सहृदयता की स्रोत्स्विनी? मनु सिंह की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'साक्षी अशोक' को पढ़ते समय कई-कई बार मुझे रूक-रूककर यह सोचना पड़ा। लेकिन एक बात- एक विशेषता- आद्योपांत दिखाई पड़ी और वह है सहजता। ''साक्षी अशोक'' की बहुविध रचनाओं में भाषा एवं भावों का सहज प्रवाह है। और यही रहस्य है कि मैंने एक बार जब इस पुस्तक को पढ़ना प्रारंभ किया तब इसे ही पढ़ने में एकाग्र हो गया और अंततोगत्वा इसे पूरा पढ़कर ही दम लिया।

96 पृष्ठों की इस पुस्तक में मनु सिंह की कुल सोलह रचनाएँ हैं जिनमें 'विषय वस्तु' की दृष्टि से भी विविधता है और साहित्यिक 'विचार' की दृष्टि से भी।

सर्वप्रथम 'आत्मकथ्य' को पढ़ने से लेखक की पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ उसकी साहित्यिक पीठिका एवं प्रेरणा-स्रोत की भी जानकारी मिलती है जो मनु सिंह के व्यक्तित्व एवं साहित्यकार के आकलन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस संग्रह की पहली रचना है 'ज़िंदगी' जिसे 'ललित निबंध' कहा जाना चाहिए। ज़िंदगी का मानवीकरण करते हुए लेखक ने ज़िंदगी के संबंध में जो अभिव्यक्ति की है उनमें एक साथ ही भावुकता भी है, बौद्धिकता भी। भावों और विचारों का सरसता एवं गंभीरता का मनोरम संगम है। ललित निबंध में 'विषय' महज कपड़े टाँगने की खूंटी की तरह होता है। खूंटी पर जैसे अनेक प्रकार के वस्त्र लटकाए जाते हैं, 'ललित निबंध' में 'विषय रूपी खूंटी पर लेखक अनेक प्रकार के अपने भाव-विचारों को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र होता है। 'साक्षी अशोक' में 'नवही', 'गाँती' और 'गोदना' भी इसी प्रकार के 'ललित निबंध' हैं। इन ललित निबंधों में एक विशेषता, जो सभी में परिव्याप्त है, वह है ग्रामीण परिवेश, गाँव की बीती जिंदगी के प्रति अगाध प्रेम। लेखक ग्रामीण परिवेश में पला-बढ़ा, अत: स्वाभाविक है कि इस प्रकार के उसके निबंधों में ग्रामीण संस्कृति रह-रहकर उजागर हुई है। 'नवही' शीर्षक रचना एक अलमस्त-अलहड़ ग्रामीण युवक का जीवंत शब्द-चित्र है।

ऐसा होना भी स्वाभाविक लगता है क्योंकि इस पुस्तक में शब्द चित्रों की प्रधानता है। 'वेदांती जी', 'पं० रंगनाथ पाठक', 'विष्णु', 'कर्मवीर शिवनारायण प्रसाद', 'अब्दुल मियाँ', 'नंदलाल' और 'योगाचार्य' शब्दचित्र ही तो है। 'वेदांती जी' विश्वनाथ सिंह नामक व्यक्ति का शब्दचित्र है जिनसे लेखक ने अपनी बाल्यावस्था में शिष्य की भाँति ज्ञानार्जन किया था। 'पं० रंगनाथ पाठक' एक शुद्ध सात्विक जीवन व्यतीत करने वाले संस्कृत के प्रकांड पंडित का शब्दचित्र है। 'विष्णु' में साहित्यकार मनु सिंह ने विष्णु दयाल सिंह यादव नामक अपने एक सहकर्मी का शब्दचित्र प्रस्तुत किया है। 'कर्मवीर शिवनारायण प्रसाद' केन-इंस्पेक्टर से सहायक ईख-आयुक्त के पद तक पहुँचे एक परोपकारी और सात्विक सोच वाले आदर्श पुरुष का शब्दचित्र पेश किया है। 'अब्दुल मियाँ' एकवना से आरा के बीच टमटम हाँकने वाले व्यक्ति का शब्दचित्र है। नंदलाल भी एक टमटम-चालक का शब्दचित्र है। इन सभी शब्दचित्रों में ग्राम्य जीवन के अपने अनुभवों को लेखक ने बहुत अच्छे ढ़ंग से उजागर किया है। ये शब्दचित्र तो अपनी जगह पर हैं, साथ ही ग्रामीण जीवन, परिवेश और संस्कृति पर लेखक की अच्छी पकड़ है। ये शब्दचित्र रामवृक्ष शर्मा 'बेनीपुरी' की 'माटी की मूरतें' के शब्दचित्रों से होड़ लेते हैं। ग्राम्य जीवन से जुड़े ऐसे शब्द चित्र अब कहाँ पढ़ने को मिलते हैं।

पुस्तक का नाम	: साक्षी अशोक
लेखक	: मनु सिंह
प्रकाशक	: अभिज्ञान प्रकाशन, पटना
मूल्य	: एक सौ रुपये

इस पुस्तक में एक विशिष्ट शब्दचित्र है 'योगाचार्य' यही एक ऐसा शब्द चित्र है जिसे ग्रामीण परिवेश से कुछ लेना-देना नहीं है। यह एक शहरी जीवन का शहरी शब्दचित्र है।

इस पुस्तक में एक यात्रा-संस्मरण है- 'कन्नौज' एक अन्य विशिष्ट रचना है- 'जारज संतान'। यह एक गंभीर निबंध है जिसमें लेखक ने अवैध यौन-संबंध से जन्मे बच्चों को लावारिस फेंक दिये जाने के प्रश्न पर बड़ी ही गंभीरता से विचार किया है। लेखक ने दो-टूक समाधान भी पेश किए हैं। आज के माहौल में इस प्रकार के निबंधों का विशेष महत्त्व है।

इस प्रकार, ऊपर के विश्लेषण और विवेचन से स्पष्ट है कि यह पुस्तक क्या है- 'ललित' एवं 'गंभीर' निबंधों और 'शब्दचित्रों' का साहित्यिक संग्रहालय है। इसमें एक साथ ही साहित्य की नई विधाओं पर मनु सिंह की लेखनी चली है और सफलतापूर्वक चली है- इसमें संदेह नहीं।

'अतीत की यादों को उजागर' करने वाली यह पुस्तक 'वर्तमान' में 'अतीत' को ज्वलंत करने का महान अभियान है।

❋❋❋

संपर्क : दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना- 800 004

सेंट्रल टेबिल पर रक्खे/जूठे गिलास हैं
अंदर से खोखले/सभी थे
रंग-बिरंगे चश्मों से थीं
सबने अपनी आँखें ढाँकीं
जलन-ईर्ष्या
नये वक़्त की/और बढ़ गई भूख-प्यास हैं
सुबह हुई/सब खीझ रहे हैं
तैयारी ऑफिस जाने की
वीक-एंड तक/सुनो, चलेगी
कोशिश खुद को भरमाने की
घर भी चुप है
खाली दिन है/मेज़-कुर्सियाँ भी उदास हैं।

हाँ, यही है आज की सभ्यता की उपलब्धि और वर्तमान युवा पीढ़ी की त्रासक नियति। ऐसे में फ़ुर्सत किसे है कि राष्ट्रीय प्रश्नों से जूझे! आसुरी इंद्रजित की मायावी शक्ति से उपजी मूर्च्छा समाप्त हो, तभी तो हमारे युवा लक्ष्मण वीर राष्ट्रहित के लिए सन्नद्ध हो पाएँगे।

विश्वनाथ प्रताप सिंह

जिन्होंने राजनीति में शुचिता और पारदर्शिता लाने की कोशिश की

☆ सिद्धेश्वर

भारतीय राजनीति में बहुत कम ऐसे राजनेता हैं जो अपनी पहचान जनता के बीच बनाने में कामयाब होते हैं, मगर मंडल आंदोलन के मसीहा माने जाने वाले विश्वनाथ प्रताप सिंह ने गठबंधन की राजनीति का प्रयोग कर संयुक्त मोर्चा सरकार की अगुआई करने के साथ ही भारतीय राजनीति में अपना एक अलग मुकाम हासिल किया और नेहरू युग के अवसान के बाद उभरे राजनेताओं में इंदिरा गाँधी और जय प्रकाश नारायण के बाद उन्होंने एक इतिहास बनाने का श्रेय प्राप्त किया। सच कहा जाए, तो इंदिरा गाँधी की राजनीति अगर प्रत्यक्ष लोकतंत्र की प्रवृत्तियों की वाहक थी, तो जय प्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति आंदोलन के जरिए हमारे लोकतंत्र की सीमाओं की आलोचना प्रस्तुत की, मगर विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जाने-अनजाने जो कुछ किया उससे लोकतंत्र और भारतीय समाज के संबंध अंतिम तौर पर बदल गए। इस लिहाज़ से लोकतंत्र पर उनकी छाप अधिक स्थायी साबित हुई।

यह कहना यथोचित होगा कि विश्वनाथ प्रताप सिंह के व्यक्तित्व का एक पक्ष अपने निजी आचरण के जरिए दलगत राजनीति और शासन प्रक्रिया में शुचिता और पारदर्शिता लाने की कोशिश करता रहता था। जब व्यवस्था के निहित स्वार्थ बाधाएँ डालने लगते थे, तो उन्हें त्यागपत्र देने में देर नहीं लगती थी। आपको याद होगा उत्तर प्रदेश के अपने मुख्य मंत्री के कार्यकाल में जब उन्होंने दस्यु उन्मूलन अभियान चलाया था, तो तत्कालीन विपक्ष ने उनके ख़िलाफ़ एक ज़बर्दस्त आंदोलन चलाया था। जब उन्हें लगा कि डकैत विरोधी मुहिम की वजह से पिछड़े वर्ग के युवकों को कई स्थानों पर फ़र्ज़ी मुठभेड़ों का शिकार होना पड़ रहा है, तो उन्होंने त्यागपत्र देने की ठानी। तभी डाकुओं ने उनके न्यायाधीश भाइ को गोलियों से भून डाला। नतीजा यह निकला कि उनके त्याग पत्र को उसी दुखद घटना से जोड़कर देखा जाने लगा। इससे उनके व्यक्तित्व की चमक कुछ दिनों के लिए मंद ज़रूर हुई, पर दोबारा सत्ता का संसर्ग मिलते ही उन्होंने अपना आभामंडल फिर से प्राप्त कर लिया।

इसी प्रकार वी० पी० सिंह के व्यक्तित्व से जुड़े कई ऐसे संस्मरण हैं, जो इनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को उजागर करते हैं। उदाहरण के तौर पर लिया जाए तो देखते हैं कि राजीव गाँधी के नेतृत्व में बनी केंद्र सरकार में जब वी० पी० सिंह वित्त मंत्री बने तो उन्होंने बड़ी पूँजी के अलंबरदारों के सामने विकल्प प्रस्तुत किया कि अगर वे क़ानून का पालन नहीं करते, तो उन्हें जेल जाना पड़ेगा। नतीजा यह हुआ कि जिन उद्योगपतियों ने उनकी बात पर ध्यान न देते हुए उसे साधारण ढंग से लिया उन्हें प्रवर्तन निदेशालय, थाना,

हवालात और जेल का सामना करना पड़ा। ज़ाहिर है ऐसा व्यक्ति अधिक दिनों तक वित्त मंत्री नहीं रह सकता था। मगर राजीव गाँधी ने जिस वी० पी० सिंह को वित्त मंत्रालय से हटाकर रक्षा मंत्री बनाया, उसी के फैसलों की वजह से राजीव जी की अपनी राजनीतिक सास ही सांसत में पड़ गई। रक्षा मंत्री की हैसियत से वी० पी० सिंह ने रक्षा सौदों में भ्रष्टाचार का सवाल उठाया। एच०डी०डब्ल्यू० पनडुब्बी और बोफोर्स तोप सौदे में कमीशनख़ोरी के प्रकरण सामने आते ही देश का राजनीतिक माहौल बदल गया। फिर क्या था विश्वनाथ प्रताप सिंह को काँग्रेस छोड़नी पड़ी और वे विपक्षी राजनीति के केंद्र बन गए। इलाहाबाद से ऐतिहासिक उपचुनाव जीतने के बाद उन्होंने जो राजनीति की उसके नतीजे के तौर पर उन्हें प्रधानमंत्री का पद तो मिला ही, एक पार्टी के तौर पर काँग्रेस के चालीस साल के वर्चस्व का अंत हो गया।

ठीक इसी प्रकार मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का वी० पी० सिंह का फैसला युगांतकारी इस माने में साबित हुआ कि उनकी आवाज़ एक आमूल और जनोन्मुख आवाज़ थी और उनकी राजनीति परिवर्तन की सूचक थी। इस निर्णय के बारे में वे अक्सर कहा करते थे कि उनकी टांग भले ही टूट गई हो, किंतु गोल करने का श्रेय उनसे कोई नहीं ले सकता। मंडल आयोग की सिफ़ारिश लागू होने के बाद इसके मुक़ाबले कमंडल रूपी रामजन्मभूमि आंदोलन का अस्त्र चलाया गया। नतीजतन देश की राजनीति सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता की विचारधाराओं में बँटती चली गई। पिछड़ों को आरक्षण देने के कारण सवर्णों के अनुदारवादी तत्त्व उनसे नाराज़ हो गए और बाद में उन्होंने न केवल सरकार खोई, बल्कि एक वोट आकर्षित करने वाले नेता के तौर पर अपना काफी नुक़्सान किया। मगर सामाजिक समरसता के लिए किए गए उनके प्रयास तथा उनके योगदान को नहीं लाया जा सकता है। पिछड़े और सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से वंचित लोगों में वे सदैव याद किए जाएँगे, क्योंकि उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अग्रणी भूमिका में स्थान लेने के लिए उन्होंन प्रेरित किया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मंडल कमीशन की सिफ़ारिशों को लागू करन से न केवल मध्यवर्गीय परिवारों को जीने की नई राह मिली, बल्कि अमीरी-ग़रीबी क बीच खाई कम हुई और भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे के लिए वी० पी० सिंह का यह फैसला मील का पत्थर साबित हुआ। साथ ही पिछड़े वर्ग को राजनीति में जगह मिली, जिसे कभी राजनीति का हिस्सेदार माना ही नहीं गया। इसी का है कि अनुसूचित जाति और जनजाति के बीच भी जागरुकता का नया दौर प्रारंभ हुआ और वी० पी० सिंह देश की राजनीति में एक नया मोड़ देने वाले साबित हुए।

मांडा के राजा बहादुर रामगोपाल सिंह और श्रीमती बृजराज कुँवर के परिवार में

25 जून, 1931 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में जन्मे विश्वनाथ प्रताप सिंह सन् 1969–71 ई० तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे और फिर 1971 में वे पाँचवीं लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। फिर 1980 ई० में उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद संभाला और इस पद पर वे 1982 तक रहे जिसके बाद 1983 से 1988 तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे और 1984 से 1987 तक राजीव गाँधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में वे वित्त मंत्री तथा 1987 में रक्षा मंत्री रहे। वी० पी० सिंह 5 दिसंबर, 1989 से 10 नवंबर, 1990 तक देश के प्रधानमंत्री रहे। पिछले दो दशक से भारतीय राजनीति की दशा और दशा बदलने वाले विश्वनाथ प्रताप सिंह लंबी बीमारी के बाद 77 वर्ष की उम्र में पिछले 4 दिसंबर, 2008 को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में ज़िंदगी की जंग हार गए। वे पिछले 17 साल से रक्त कैंसर से पीड़ित थे। गाँव की पाठशाला के बाद वाराणसी के क्विंस कॉलेज और यू०पी० कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वी०पी० सिंह ने पूरब के ऑक्सफोर्ड इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा ग्रहण की। वे इलाहाबाद छात्र संघ के उपाध्यक्ष भी रहे। मांडा के राजा से चर्चित विश्वनाथ प्रताप सिंह के परिवार में उनकी पत्नी और दो पुत्र अजेय और अभय हैं।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो सके, इसके लिए विश्वनाथ प्रताप सिंह किसी के भी सामने मज़बूती से खड़े हो सकते थे। यूँ तो भारतीय राजनीति में इधर पिछले दो दशक से काफ़ी गिरावट आई है और भ्रष्टाचार पनपा है, फिर भी ईमानदार लोगों की संख्या भी है, पर बेईमानी और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ मोर्चा खोलने वाले सीमित लोगों में वी०पी० सिंह सर्वोपरि थे। उन्हें सत्ता, संपत्ति से मोह नहीं था। विरासत में उन्हें पारिवारिक धन-दौलत तो मिली थी, किंतु उसे उन्होंने मुड़कर भी नहीं देखा। छात्र जीवन में ही वाराणसी में पढ़ाई करते वक्त उनके पूर्वजों ने पांडेयपुर मुहल्ले में एक विशाल भवन लंबे परिक्षेत्र में बनाया था। उस भवन परिसर की देखरेख करने वालों ने उस पर कब्ज़ा कर लिया। उस समय वी०पी० सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे। चाहते, तो उसे कुछ ही देर में ख़ाली करा सकते थे, किंतु उन्होंने कभी ताक़त का इस्तेमाल कर उस घर को ख़ाली कराने के बारे में नहीं सोचा। यही उनके व्यक्तित्व की एक बहुत बड़ी विशेषता थी।

जिस किसी भी क्षेत्र से वी०पी० सिंह ने चुनाव लड़ा, वहाँ जातियों की सीमाएँ टूट जाती थीं। वह सामंती अहंकार को तोड़, सुख-वैभव को छोड़ सामान्यजन से उन्हीं की भाषा और उनके तौर-तरीके से उन्हीं के बीच के हो जाते थे। 1989 के मई-जून की तपती धूप में भी पूरा चुनाव अभियान उन्होंने मोटर साइकिल पर सवार होकर चलाया। वह खुले मन के व्यक्ति थे। आख़िर तभी तो समाज के ग़रीब और कमज़ोर के प्रति उनका मन काफ़ी संकेद्रित होता था।

विश्वनाथ प्रताप सिंह की इसी संवेदना से जुड़े संस्मरण यहाँ प्रस्तुत करने के लोभ का संवरण मैं नहीं कर रहा हूँ। पिछले एक दशक से दिल्ली में रहने की वजह से मु उनके कार्यक्रमों में उपस्थित होने तथा उन्हें सुनने-समने का अनेक बार अवसर मिला जिसमें से एक कार्यक्रम की चर्चा करना मैं लाज़मी समता हूँ। घटना कुछ वर्ष पहले की है। नई दिल्ली के विष्णु दिगंबर मार्ग स्थित हिंदी भवन में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्म दिवस-समारोह के अवसर पर एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें देशभर के जाने-माने कवि तो उपस्थित थे ही, मंच पर देश के पूर्व प्रधानमंत्री तथा साहित्यकार व कवि विश्वनाथ प्रताप सिंह भी उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त शास्त्री जी के परिवार के सदस्यों में उनके सुपुत्र तथा अन्य कई लोग शामिल थे। मैं भी अपने सहयोगी तथा 'विचार दृष्टि' के सहायक संपादक उदय कुमार 'राज़' के साथ वहाँ उपस्थित था। कार्यक्रम लगभग पाँच घंटे तक चला। देखा शास्त्री जी के परिवार के सदस्य बीच में ही उठकर चले गए, किंतु वी०पी० सिंह अंत तक मंच पर बैठे रहे और उन्होंने जो कविता सुनाई वह सभी श्रोताओं के दिल को छू गई इसलिए कि वह शास्त्री जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से जुड़ी थी। सभी श्रोताओं की आँखों में आँसू भर आए और सभागार में सन्नाटा-सा छा गया। शास्त्री जी के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव सभी के दिल में भर आया। कवि वी०पी० सिंह के द्वारा प्रस्तुत कविता की पंक्तियों का स्मरण कर मैं आज भी भाव विह्वल हो जाता हूँ। ऐसा था विश्वनाथ प्रताप सिंह का कवि-मन।

❀❀❀

प्रेरक प्रसंग

छोटू ने किया बड़ा काम

बिहार राज्य के मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला अंतर्गत कटरा थाना स्थित डुमरी गाँव निवासी मो० कमाल का पुत्र तौफ़ीक़ शैख़ उर्फ़ छोटू ने मुंबई में विगत 26 दिसंबर, 2008 को छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पर जान पर खेलकर आतंकवादियों की ज़द में आए करीब तीन सौ की जान बचाई। वह बारह वर्ष की उम्र से ही मुंबई में रह रहा है। वह स्टेशन पर चाय की दुकान लगाता है। उसके कथनानुसार जब वह दुकान से बाहर पैसा वसूलने निकला, तो उसे दो ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। पहले तो उसने इसे पटाख़े की आवाज़ समझा। लेकिन जब उसने अपनी आँखों से आतंकियों को गोली चलाते हुए हॉल की ओर बढ़ते हुए देखा, तो वह टिकट काउंटर पर लाइन में लगे लोगों को भागने के लिए कहा। कई लोगों को काउंटर और सेफ़ के नीचे छिपाया। इसी बीच आतंकवादी हॉल में पहुँचकर गोलियाँ बरसाने लगे। उसने छोटू पर भी दो फ़ायर किया। ज़मीन पर गिरकर उसने अपनी जान बचा ली। आतंकियों के जाने के बाद चारों ओर ख़ून ही ख़ून था। उसने कराह रहे घायलों को ठेले से हॉस्पिटल पहुँचाया। महाराष्ट्र के राज्यपाल इस बहादुर युवक को पुरस्कृत करेंगे। छोटू ने इस कारनामे को अंजाम देकर सिद्ध कर दिया है कि इंसानियत कभी मरती नहीं।

आत्मानुशासन के लिए नैतिक शिक्षा की निवार्यता

❀ आचार्य रामविलास मेहता

विगत 11 नवंबर 2008 को भारत सरकार के प्रथम शिक्षा मंत्री तथा हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के अवसर पर 'राष्ट्रीय विचार मंच' की बिहार शाखा की ओर से 'आत्मनुशासन के लिए नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता' विषय पर राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत प्रधानाध्यापक राम विलास मेहता ने एक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि मौलाना आज़ाद के व्यक्तित्व में बालकाल से ही शिष्टाचार और संस्कार भरे थे और जीवन भर कठोर अनुशासन में रहकर देश की अखण्डता, संप्रता और सामाजिक सद्भाव को प्राथमिकता देकर भावी पीढ़ी के लिए मिसाल बन गऐ। उन का यह लेख प्रेरणादायी एवं तथ्यपरक है। 'विचार दृष्टि' के पाठकों के लिए प्रस्तुत है यहाँ उसी आलेख का मुख्य अंश।

❀ संपादक

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का जन्म 11 नवम्बर, 1888 को हुआ था। वे भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री थे। वे इस पद पर आजीवन बने रहे। उन्होंने साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की स्थापना की थी। वे महात्मा गाँधी के शिष्य के रूप में जाने जाते थे। उन्हें उर्दू, हिंदी, अँग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं का बहुत अच्छा ज्ञान था। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था।

वे हिंदू-मुस्लिम अलगाववाद के ख़िलाफ़ थे। उन्होंने मुस्लिम लीग की सदस्यता से त्याग-पत्र देकर यह सिद्ध कर दिया था कि वे भारत के एक राष्ट्रवादी नेता थे। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को सांप्रदायिक सद्भावना के मसीहा के रूप में अलंकृत किया गया था। वे मानते थे कि- ''मनुष्य को जाति-पाति से ऊपर उठकर मनुष्य से प्रेम करना चाहिए। ऐसा करके देश को मज़बूत बनाया जा सकता है, राष्ट्र को मज़बूत बनाया जा सकता है।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का अपने पिता ख़ैरुद्दीन से यह संस्कार प्राप्त था कि ''ग़रीबों के सामने विनम्रता से पेश आओ और अमीरों के सामने गर्व से खड़े रहो।'' श्री कलाम ने इस शिष्टाचार का हमेशा पालन किया।

शिष्टाचार की शिक्षा उन्हें अपने पिता से प्राप्त हुई, जिसका पालन वे जीवन के हर क्षेत्रों में करते रहे।

वे किशोरावस्था में ही अपनी विद्वता और गहन ज्ञान के लिए मशहूर हो चुके थे। वे अपने तर्क, खोज और स्वतंत्र मस्तिष्क के चलते, पिछले धर्म-गुरुओं के स्वीकृत विचारों का विरोध करते थे। जवाहर लाल नेहरू के साथ आजाद के घनिष्ठ संबंध थे। नेहरू जी ने आजाद के बारे में लिखा था कि

''आज़ाद में एक ऐसी अद्त क्षमता थी, जिसके द्वारा वे किसी भी समस्या की जड़ तक पहुँच जाते थे। उनके पास ज्ञान का भंडार था। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम की एकता पर ज़ोर देते हुए कहा था कि यदि आसमान से कोई देवदूत दिल्ली की क़ुतुबमीनार पर यह कहा कि भारत चौबीस घंटों के भीतर स्वराज्य प्राप्त कर सकता है, बशर्ते कि वह हिंदु-मुस्लिम एकता का परित्याग कर दें, तो ऐसी दशा में मैं स्वराज्य को छोड़ दूँगा। लेकिन हिंदू-मुस्लिम एकता नहीं त्यागूँगा।''

आज़ाद को अँग्रेज़ों से नहीं, बल्कि उनकी हुकूमत से दुश्मनी थी। श्री आज़ाद का जन्म-दिन (11 नवम्बर) शिक्षा दिवस के रूप में सारे राष्ट्र में मनाया जा रहा है। बिहार सरकार भी मना रही है। राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार के तत्त्वावधान में भी उनका जन्म दिन साल्लास मनाया जाना उत्साहवर्द्धक है। इससे बच्चों-युवकों और देशवासियों को प्रेरणा मिलती रहेगी। बचपनावस्था से ही उनमें शिष्टाचार का संस्कार भरा गया था और जीवन भर कठोर अनुशासन में रहकर देश की अखण्डता, संप्रता, सामाजिक सद्भाव एवं राष्ट्रप्रेम को प्राथमिकता देकर देश की भावी पीढ़ी के लिए वे मिसाल बन गए। देश के सभी बच्चों में इस तरह की नैतिक शिक्षा जो उन्हें बाल्यावस्था में अपने पिता से प्राप्त हुई, जिसका विस्तार अनुसरण एवं कार्यान्वयन कठोर अनुशासन में रहकर किया, वह देश के इतिहास में अद्वितीय है।

संस्कार को अँग्रेजो में Consecration कहते हैं। किसी विद्वान ने बताया है कि-

Consecration is one percent from inspiration and ninety nine percent from perspiration.

संस्कार एक प्रतिशत अगर पैत्रिक संपदा है तो 99 प्रतिशत इसे सच्ची लगन और मेहनत से हासिल किया जा सकता है।

अनुशासन भी मौलाना के जीवन में बहुत अधिक महत्त्व रखता है। कहा गया है कि Discipline is the regulation of conduct in the individual by the operation of will power. दृढ़-इच्छा शक्ति द्वारा कर्त्तव्यों का निर्वहन ही अनुशासन है।

उनके जन्म-दिवस के अवसर पर हम सभी देशवासी यह संकल्प लें कि बच्चों में नैतिक शिक्षा का संचार किया जाय, इसकी अनिवार्यता क़ायम की जाय और जीवन के हरेक समाजिक स्तर पर अनुशासन में रहकर संघर्ष करते हुए समरसता को प्राप्त करते हुए उन्मुख रहें।

आत्मानुशासन के लिए नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता के संदर्भ में कहा जाता है

कृ॰ शेष भाग पृष्ठ 45 पर देखें

स्टिंग ऑपरेशन के सामाजिक सरोकार

❀ रघुवीर सिंह पालावत

समाज देश या किसी विशिष्ट क्षेत्र में व्याप्त अनाचार जो व्यक्ति विशेष को पीड़ित करने के साथ-साथ सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आघात करता हो, को उजागर करने वाला छिपे हुए कैमरों से किया गया प्रयास 'स्टिंग ऑपरेशन' कहलाता है। इसे हम 'खोजी पत्रकारिता' के नाम से भी जानते हैं।

संचार माध्यम चाहे वो इलेक्ट्रॉनिक हों, चाहे प्रिंट, लोकतंत्र की 'तीसरी आँख' कहलाता है। तीसरी आँख' प्रतीक से ही संचार माध्यम के महत्त्व और महान् लक्ष्य का अनुमान लगाया जा सकता है अर्थात् लोकतांत्रिक देश में सशक्त और ईमानदार पत्र या चैनल लोकतंत्र की सफलता का प्रमुख उपादान तथा जनमानस का सच्चा संरक्षक माना जाता है। साथ ही समाज को दूषित होने से बचाए रखकर शुद्ध, स्वच्छ व दोषरहित बनाए रखने का दायित्व भी संचार माध्यमों अर्थात् पत्र-पत्रिकाओं और चैनलों का भी बनता है।

संचार माध्यमों में सबसे साहसी और जोखिमपूर्ण प्रयास 'स्टिंग ऑपरेशन' माना जाता है। वरिष्ठ पत्रकार 'विनीत नारायण' 1989 में 'कालचक्र' विडियो मैगजीन द्वारा स्टिंग ऑपरेशन को शुरुआत मानते हैं। उस समय उन्होंने अमीना शेखानी के साथ मिलकर स्त्रियों के साथ पुरुष वर्ग द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहार का उद्घाटन खोजी कैमरों के माध्यम से किया था हालाँकि राजशाही काल में भी विश्वसनीय गुप्तचर व्यवस्था होती थी, जो इसी स्वरूप में रखी जा सकती है।

'स्टिंग ऑपरेशन' का अब तक जो स्वरूप उभरकर सामने आया है उसके आधार पर निष्कर्ष रूप में इसके लक्ष्य और सामाजिक सरोकारों के संबंध में गंभीर चिंतन अतिआवश्यक हो गया है। 'तहलका-काण्ड' 'निठारी-काण्ड' फिल्मी-संसार के कई 'कास्टिंग-काउच' मामले उजागर करना व हाल ही का उमा-खुराना के लिए किया गया स्टिंग-ऑपरेशन मीडिया के इस साहसिक प्रयास की सार्थकता और निरर्थकता का वर्णन करता है।

दिल्ली की इस शिक्षिका को स्त्री-देह का व्यापार करने वाली के रूप में दर्शाने वाला 'स्टिंग-आपरेशन' और उसके बाद उसका निर्मूल सिद्ध होना इस विषय पर मंथन करने पर मजबूर ही नहीं करता, बल्कि चेतन-मानस को झकझोर कर रख देने वाली घटना है।

महान् उद्देश्यपरक प्रयास इस प्रकार निजी-स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयुक्त करना एक ऐसा कुत्सित और घृणित कृत्य माना जायेगा जो समाज को प्रदूषित करता है। ''इसे अनाचार रोकने वाले शस्त्र द्वारा ही किया गया जघन्य अनाचार कहा जाएगा। इससे केवल एक उमा-खुराना ही प्रताड़ित नहीं हुई है, बल्कि संपूर्ण शिक्षक जाति पर यह निर्मम प्रहार हुआ है और इससे शिक्षक-वर्ग के प्रति जन-मानस का विश्वास भी डगमगा सकता है।

इस संदर्भ में सुहैल इलियासी का ज़िक्र भी इस बात को और बल प्रदान करता है जिसने आतंककारियों की गुप्त जानकारियों को एकत्र कर उजागर करने वाले साहसिक खोजी के रूप में सम्मान अर्जित किया, परंतु कुछ समय पश्चात् ही वह अपनी पत्नी के प्रति अत्याचार करने वाले के रूप में परिभाषित हुआ। इस रहस्योद्घाटन ने उसके कृत्यों को असामाजिक व अविश्वसनीय बना दिया।

इस सच्चाई का ज्ञान किसी को नहीं है कि ये साहसिक प्रयास समाज-हित में उठाए गए क़दम होते हैं या बाहु-बलियों द्वारा नियोजित कार्यक्रम। इस सच्चाई से भी जन-मानस अनभिज्ञ है कि ये क़दम निजी स्वार्थ में उठाए जाते हैं या शक्तिशालियों द्वारा इनके प्रयासों को निजी-स्वार्थ में उठाए गए क़दम के रूप में सिद्ध कर दिया जाता है।

सारांशत: यह प्रकट होता है कि 'स्टिंग-आपरेशन' सामाजिक और मानवीय मूल्यों का संरक्षक बन सकता है और समाज में मानव-मूल्यों की स्थापना में अहम् भूमिका अदा कर सकता है। लेकिन बढ़ते चैनलों के प्रसार के कारण अपने-आपको स्थापित करन के लिए किसी चैनल या पत्र विशेष द्वारा सस्ती लोक-प्रियता हासिल करने का उपाय मात्र मानकर इसका उपयोग निश्चित रूप से हमारे देश-समाज और मानव हितों में विनाशक रूप धारण कर सकता है।

नैतिक-सामाजिक और मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने वाले इस साहसिक प्रयास को व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से बचाए रखना मानव-स्वतंत्रता और देश-हित में होगा। अन्यथा यह व्यापारिक होड़ को 'बाढ़ का पानी' बना देगी जो अमृत-तुल्य होकर भी मानव-जीवन के लिए विनाशक बन जाता है।

❋❋❋

संपर्क : 22, 23 करणी कॉलोनी,
पथ सं- 7, विजयबाड़ी,
सीकर रोड, जयपुर,
पिन- 302023

लौह पुरुष सरदार पटेल की १३३ वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

प्रस्तुति : ✯ डॉ॰ शाहिद जमील

राजनीतिक संकुचिततावाद ने हम सबों को धृतराष्ट्र बना दिया है। आज़ादी के तुरंत बाद राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के अदम्य् साहस और सूझ-बूझ ने टूकड़े-टूकड़े बँटे देशी रियासतों की सीमाओं को मिटाकर एक अखण्ड राष्ट्र बनाया वहीं राष्ट्रीय नेताओं की स्वार्थपरता, संकुचितता और ऐन-केन-प्रकारेण सत्ता पर काबिज़ होने के सबब आज देश खण्ड-खण्ड हुआ चाहता है। वर्तमान दौर में नर-पिचास आज जिस प्रकार इंसानियत और सभ्य समाज के सारे क़ायदे-क़ानूनों को बाला-ए-ताक़ रखकर अपने ही देशवासियों को बलि के बकरे की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। ज़्यादहतरं लोग मूकदर्शक बने बैठे हैं। मानो राष्ट्रहित में सोचना उनका दियित्व नहीं। इतना ही नहीं अधिकांश संस्थाएँ भी अपने सदउद्देश्यों और लक्ष्य से भटककर धनार्जन में संलिप्त हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था 'राष्ट्रीय विचार मंच' और उसका मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष व संपादकी सलाहकार श्री नंदलाल जी और मंच के राष्ट्रीय महासचिव व संपादक सिद्धेश्वर जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय एकता पर मंडराते ख़तरे से देशवासियों को सावधान रहने के लिए राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में राष्ट्रीय अधिवेशन कर वैचारिक क्रांति का अलख जगा रह हैं। मैं इस कृत की हर्दिक सराहना करता हूँ। आज की इस विषम परिस्थिति में सतत् संवाद (continued dialogue) चलाते रहने की ज़रूरत है। देश के प्राय: सभी क्षेत्रों के जाने-माने चिंतकों-विचारकों को अधिवेशन में आमंत्रित कर राष्ट्रीय एकता जैसे ज्वलंत मुद्दों पर विचार किया जाना सर्वथा श्रेयष्कर है। उक्त विचार कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल एवं 'साहित्य अमृत' के संपादक टी॰एन॰ चतुर्वेदी जी ने 'राष्ट्रीय विचार मंच' और 'विचार दृष्टि' के संयुक्त तत्त्वावधान में विगत 30 एवं 31 अक्टूबर, 2008 को लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की 133 वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता पर केंद्रीत नई दिल्ली के हिंदी भवन में आयोजित दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन-भाषण में व्यक्त किए।

राष्ट्रीय विचार मंच एवं विचार दृष्टि के तत्त्वावधान में
30 एवं 31 अक्टूबर 2008, नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन के
उद्घाटन पर दिनांक 30 अक्टूबर, 2008 को प्रात: 9 बजे से 10 बजे
हिंदी भवन विष्णु दिगम्बर मार्ग के सभागार में आप सादर आमंत्रित हैं।

उद्घाटन :	अध्यक्षता :	मुख्य अतिथि :
श्री टी. एन. चतुर्वेदी पूर्व राज्यपाल, कर्नाटक	श्री नंदलाल स्वागताध्यक्ष व मंच के रा. अध्यक्ष	पदमश्री डॉ. श्याम सिंह 'शशि' वरिष्ठ साहित्यकार व नृवैज्ञानिक
	विशिष्ट अतिथि :	
डॉ. बालशौरि रेड्डी अध्यक्ष, तमिलनाडु हिंदी अकादेमी	डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर अध्यक्ष, केरल हिंदी साहित्य अकादमी	डॉ. रामकरण शर्मा पूर्व कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय
-: उत्तरापेक्षी :-	-: निवेदक :-	
उदय कुमार 'राज' सचिव मो. 9868105864	राष्ट्रीय विचार मंच 'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, दिल्ली 92 फोन : 011-22530652	सिद्धेश्वर राष्ट्रीय महासचिव मो. 9873434086

भावभरा आमंत्रण

राष्ट्रीय एकता के प्रतीक
लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल
की 133 वीं जयंती पर
राष्ट्रीय विचार मंच एवं विचार दृष्टि
का
द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन

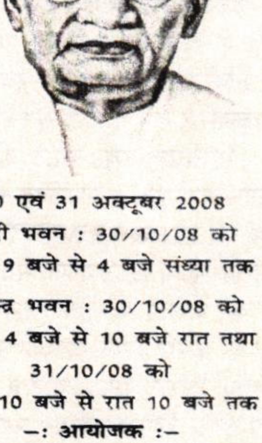

30 एवं 31 अक्टूबर 2008
हिंदी भवन : 30/10/08 को
प्रात: 9 बजे से 4 बजे संध्या तक
राजेन्द्र भवन : 30/10/08 को
संध्या 4 बजे से 10 बजे रात तथा
31/10/08 को
प्रात: 10 बजे से रात 10 बजे तक
—: आयोजक :—
राष्ट्रीय विचार मंच व विचार दृष्टि
'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
011-22530652, 22059410 मो॰ 9873434086

मंच के द्वारा वैचारिक क्रांति की दिशा में चलाए जा रहे अभियान की प्रशंसा करते हुए चतुर्वेदी जी ने विद्वत्जनों द्वारा अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में अभिव्यक्त विचारों को एक पुस्तक के रूप में संकलित करने का भी सुझाव दिया। उनका स्पष्ट मत था कि विचारों के आदान-प्रदान से समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। उन्होंने सरदार पटेल और तिलक की उक्तियों और सुक्तियों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि 'राष्ट्रीय विचार मंच' और 'विचार दृष्टि' दोनों नाम न केवल सटीक हैं, बल्कि अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करने में संस्था और पत्रिका लगी हुई हैं, यह संतोष और प्रसन्नता की बात है। यह निरंतर प्रगति करती रहे और राष्ट्रीय दायित्यों का निर्वाह करती रहें मैं इसकी कामना करता हूँ।

इस अवसर पर चतुर्वेदी जी ने 'विचार दृष्टि' के परामर्शी डॉ॰ बालशौरि रेड्डी की पुस्तक का लोकार्पण करते हुए लेखक के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करते हुए उनके अवदानों को अमूल्य बताया। अंत में समारोह के संचालक डॉ॰ शाहिद जमील के संचालन कौशल और उनके द्वारा गंगा-जमनी प्रांजल भाषा के प्रयोग के लिए उन्हें दिल खोलकर साबाशी भी दी।

सुप्रसिद्ध गीतकार व ओ॰एन॰जी॰सी॰, देहरादून के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) कविवर बुद्धिनाथ मिश्र के गीत-

जय होगी,
निश्चय जय होगी,
भारत की धरती पर
इसकी जनभाषा की जय होगी

से प्रारंभ अधिवेशन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष व दिल्ली विकास प्राधिकरण के वित्त सदस्य नंदलाल जी ने कहा कि भावात्मक एकता भारत की आत्मा है और उसकी संस्कृति उसके हृदय

की धड़कनें, मगर लगातार उसपर हमले होने की वजह से एक ओर जहाँ अप-संस्कृति क शोर-शराबे हावी हैं, वहीं हमारा अखण्ड राष्ट्र खण्ड-खण्ड होने की ओर अग्रसर है। इस दृष्टिकोण से जन-जन में राष्ट्र-चेतना जाग्रत करने की आवश्यकता है। मंच और इसका मुख-पत्र इसी दिशा में प्रयत्नशील है।

इसके पूर्व मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर जी ने मंच का प्रतिवेदन के प्रस्तुति के क्रम में अधिवेशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए जहाँ इस देश को धार्मिक कट्टरता से मुक्त करने की बात कही, वहीं समाज व राजनीति को सही दिशा-प्रदान करने का आह्वान भी मंच से जुड़े साहित्यकारों तथा अन्य प्रबुद्धजनों व चिंतकों-विचारकों से किया। इसके लिए उन्होंने खूनी क्रांति नहीं, वैचारिक क्रांति की ज़रूरत पर ज़ोर दिया, ताकि देश की एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखा जा सके। उत्तर और दक्षिण के साहित्य-सेतु के रूप में मशहूर साहित्यकार तथा मंच के उपाध्यक्ष डॉ० बालशौरि रेड्डी ने इस अवसर पर कहा कि विचार ही प्रकाश है। मनीषियों ने आदि ग्रंथों व वेदों में जो विचार दिए हैं, वही हमारे लिए पथ-प्रदर्शन और ज्योति का काम करेंगे। मंच के, केरल शाखा के अध्यक्ष एवं केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका के यशस्वी संपादक डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर ने महाभारत की कथा का उल्लेख करते हुए सोद्देश्य राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन की सार्थकता जताई।

उद्घाटन सत्र के अतिथि तथा संस्कृत साहित्य के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ० रामकरण शर्मा ने देश में तेज़ी से पनपते क्षेत्रवाद, भाषावाद, संप्रदायवाद पर क्षोभ व्यक्त करते हुए वैदिक ग्रंथों में वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन के रास्ते पर चलने की सलाह दी। सत्र के मान्य अतिथि पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने कहा कि देश में विचारक तो हैं, किंतु उनके विचारों को मानने वालों की कमी होती जा रही है जो चिंता का विषय है। आज के भीड़ तंत्र में मंच द्वारा विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास प्रशंसनीय है। भयंकर रूप से बढ़ते क्षेत्रवाद, भाषावाद और धार्मिक संकीर्णता के इस वातावरण में मन-वचन-कर्म से समाज की विकृत्तियों के मूल में आज जाने की आवश्यकता है। उन्होंने सरदार पटेल को प्रासंगिक बताते हुए उनके विचारों व आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने की ज़रूरत जताई।

प्रारंभ में अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष नंदलाल ने देश के कोने-कोने से अधिवेशन में पधारे प्रतिनिधियों, मान्य अतिथियों तथा राजधानी के सुधिजनों का मंच की ओर से स्वागत किया तथा स्वागताध्यक्ष सहित उद्घाटनकर्ता ने लौह पुरुष सरदार पटेल के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित कर अधिवेशन का विधिवत् उद्घाटन किया। समारोह का संचालन बिहार इकाई के महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के उप संपादक डॉ० शाहिद जमील ने तथा मंच के संयुक्त सचिव तथा भारत सरकार, वित्त मंत्रालय के सहायक सचिव संजय सौम्य ने मान्य अतिथियों, सभागार में उपस्थित विद्वत्जनों, प्रायोजकों, विज्ञापन दाताओं, मीडिया कर्मियों तथा मंच व पत्रिका से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय अधिवेशन के द्वितीय सत्र में 'विदेशी माटी में पुष्पित-पल्लवित हिंदी' विषय पर संपन्न संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार व नृ-वैज्ञानिक पद्श्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने कहा कि प्राय: सभी विद्वान वक्ताओं ने सूत्र रूप में निर्धारित विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त कर विदेशों में पुष्पित-पल्लवित हिंदी की चचा की है, किंतु दुखद स्थिति यह है कि हिंदी की रोटी खाने वाले ही अपने मन, वचन व कर्म से हिंदी की सेवा नहीं कर रहे हैं। बोलचाल तो ठीक है, मगर जब पत्रादि लिखना होता है, तो वह भी अँग्रेज़ी में लिखा जाता है। जबकि आज से एक हज़ार वर्ष पूर्व यूरोप और अमेरिका गए रोमा ने भारतीय भाषाओं में बात की। आज भी अमेरिका में बसे लगभग सतरह लाख भारतीयों द्वारा हिंदी में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है। मगर अपने ही देश में हिंदी उपेक्षित है और गुरु-शिष्य परंपरा समाप्त हो रही है, जिससे सिंचित होना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय चेतना की वैचाकिर संस्था-राष्ट्रीय विचार मंच की भूमिका अहम हो जाती है। डॉ० शशि ने इस बात पर अफ़सोस ज़ाहिर किया कि विदेशों में जो हिंदी गीत लिखे गए या रोम साहित्य लिखे गए उन्हें मान्यता नहीं प्रदान की गयी।

इस सत्र के मुख्य अतिथि एवं कज़ाकिस्तान के पूर्व राजदूत व आस्ट्रेलिया के पर्वू उपउच्चायुक्त विद्या सागर वर्मा जी ने विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के चार तरीक़ों की चर्चा करते हुए कहा कि भारत से जो मज़दूर विदेशों में गए उन्होंने न केवल अपनी भाषा का प्रयोग किया, बल्कि अपनी संस्कृति को भी वहाँ जीवित रखा। श्री वर्मा दूतावास के माध्यम से खुद अपनी हिंदी-सेवा का ज़िक्र करते हुए विदेशों में स्थापित भारतीय संस्कृति केंद्र तथा छात्र-छात्राओं को दी जाने वाली छात्रवृति आदि का विस्तार से वर्णन किया तथा विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा किए गए प्रयास की चर्चा करते हुए यह खेद व्यक्त किया कि हिंदी अपने ही देश में, बेगानी बनी हुई है, जिसके और कारण चाहे जो हों, राजनीति भी एक प्रमुख कारण है।

इस अवसर पर प्रारंभ में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए चेन्नई से पधारे प्रतिनिधि पी०आर० वासुदेवन 'शेष' जी ने कहा, जो हिंदी की बात करेगा, वही दिलों पर राज करेगा। देश-प्रेम है कण-कण में, हिंदी-प्रेम है जनगण में।' सिंधी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ मलयालम, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं को बोलने वाले भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में तो हैं ही, भारत की सर्वाधिक प्रयोग में आनेवाली भाषा हिंदी फिजी, सूरीनाम और मारीशस में ख़ूब बोली-समझी जाती है। कोरिया में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के रूप में अपनाई गई है। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया, न्यूजर्सी, दक्षिण अफ़्रीका, कनाडा, नेपाल, वर्मा, पाकिस्तान, इंगलैंड आदि देशों में हिंदी का प्रयोग होता है। मास्को में रूसी भाषा से हिंदी में अनुवाद कार्य का एक बहुत बड़ा केंद्र है। एक सच्चाई यह भी है कि विश्व के कई देश तो सरकारी स्तर पर हिंदी को मान्यता दे चुके हैं। सर्जनात्मक रूप में भारतेत्तर हिंदी लेखकों के योगदान की स्वीकृति अब नए रूपों में उपलब्ध हो रही है। लंदन से 'हिंदोस्तान', अमेरिका से 'सौरभ विश्वा' और 'विश्व विवेक', चीन से 'चीन सचिव' आदि प्रकाशित पत्रकाओं का योगदान हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफ़ी रहा है।

द्वितीय सत्र के विशिष्ट अतिथि तथा संस्कृत, अँग्रेज़ी एवं भारतीय दर्शन के उद्भट विद्वान डॉ० रामकरण शर्मा ने विषय पर अपन

विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सभी भाषाओं के साथ संस्कृत का समन्वयात्मक संबंध हैं। हमारी अपनी जो बुद्धि है उसमें विभेद बहुत है और हमारी दुर्बलता है। हिंदी का क़ानून (Dejure) तो है वास्तविक (Defacto) नहीं। उन्होंने इस बात पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की कि अमेरिका का शायद ही कोई विश्वविद्यालय अब बचा हो जहाँ हिंदी की पढ़ाई नहीं होती है। जहाँ तक अपने देश की बात है हिमालय से कन्याकुमारी तक हिंदी संपर्क भाषा के रूप में तो हमारे सामने है, और हिंदी स्वयं में विश्व समाज को समाहित किए हुए है, लेकिन भारत में ही उसे अपेक्षित सम्मान नहीं मिल पा रहा है।

केरल विश्वविद्यालय के हिंदी प्राध्यापक डॉ० एन० सुरेश ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी भारत की आत्मा की भाषा है और जहाँ तक विदेशों का सवाल है वहाँ चाहे किसी भी भारतीय भाषा के बोलने वाले हों, मगर पूरे विश्व में हिंदी ही संपर्क भाषा है, क्योंकि विदेश में भारत के लोग हिंदी में बात करना पसंद करते हैं। स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में भी वहाँ लाखों की संख्या में लोग न केवल हिंदी का विकास कर रहे थे, बल्कि अपनी संस्कृति को बरक़रार रखे हुए थे।

हरियाणा के हिसार स्थित महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ० रामनिवास 'मानव' जी ने कहा कि विदेशों में फल-फूल रही हिंदी का मुख्य कारण है कि भारत से वहाँ गए लोग अपने साथ तुलसी, हनुमान, विरवा पौधा और गंगाजल लेते गए जिसके चलते हमारी भारतीय संस्कृति और हिंदी वहाँ जीवित है। उन्होंने पुन: कहा कि जहाँ पूरे विश्व में आज लगभग चार करोड़ लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और समझते हैं वहीं डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।

राँची, झारखण्ड का प्रतिनिधित्व कर रहे डॉ० पी०एन० विद्यार्थी (अब सर्वगरीय) ने कहा कि भाषा की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके बोलने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। भारतीय विश्व के अनेक देशों में आजीविका की खोज में सुनहले भविष्य का सपना लिए हुए मज़दूरों के रूप में गए थे और अपनी भाषा को भी साथ लेते गए। अपने परिश्रम, लगन तथा ईमानदारी से वे हर देश में स्वयं भी प्रतिष्ठित हुए और अपनी भाषा को प्रतिष्ठा दिलाई।

देहरादून से पधारे सुप्रसिद्ध गीतकार तथा ओ०एन०जी०सी० के मुख्य प्रंधक (राजभाषी) डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि पिछले पचास वर्षों से भारतवंशी विदेशों में हिंदी को समृद्ध कर रहे हैं और उसके साहित्य को बढ़ाया है। हिंदी की जो अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा है उसे हम भारतवासी पहचान नहीं पा रहे हैं और न भारत सरकार से उन्हें अपेक्षित सहयोग मिल पा रहा है। हमने अपना आत्मानुशासन खो दिया है। मूल भारतवंशियों के अतिरिक्त विदेशों में उन लोगों की भी एक बहुत बड़ी संख्या है जो भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन और शाधकार्यों में लगे हैं। ऐसा करके वे भारत को भलि प्रकार जानना चाहते हैं।

तिरूवनंतपुरम के राजकीय महाविद्यालय की हिंदी प्राध्यापिका तथा राष्ट्रीय विचार मंच, केरल इकाई की महासचिव डॉ० पी० लता ने डॉ० शाहिद जमील के सहयोग से कार्यक्रम का सफल एवं जीवंत संचालन किया। पटना उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता एवं मंच की बिहार इकाई के अवधेश प्रसाद सिंह जी ने आभार व्यक्त किया।

'भाषावाद, क्षेत्रीयता और धार्मिक संकीर्णता के उभार से राष्ट्रीय एकता पर मडराते ख़तरे' विषय पर केंद्रीत तृतीय शैक्षिक सत्र के मुख्य वक्ता तथा कोलकाता के पूर्व महापौर एवं पूर्व सांसद श्याम सुंदर गुप्ता जी ने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि वेदवाणी के अनुसार हम सब एक साथ चलें, हम एक ही स्वर में बोलें, हम सबके मन में एक ही प्रकार के भाव उदित हों, हम चाहे जिस भाग के रहने वाले हों या चाहे जिस देवता की पूजा करते हों। भाषा, धर्म या क्षेत्रवाद की जो घटनाएँ घट रही हैं उसके पीछे धार्मिक असहिष्णुता, ग़रीबी की दयनीय हालत, राजनीति एवं राजनीतिज्ञ का गिरता स्तर, भ्रष्टाचार का बढ़ता बोलबाला, सर्वशिक्षा का नितांत अभाव राष्ट्र-प्रेम की कभी तथा निर्वाचन पद्धति की गड़बड़ी भी मुख्य रूप से काम कर रही है। इसलिए समय की माँग है कि अनेकता में एकता, व्यक्ति-विकास के लिए राष्ट्रीय अभियान, शिक्षा-दीक्षा में सहिष्णुता, सापेक्षता और उदारता का अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। आज राष्ट्रीय एकता के ख़तरों एवं उनके कारणों को गहराई से समझने की आवश्यकता है। हमें इन खतरों से सजग रहते हुए अलगाववादी मानसिकता को पनपने से रोकना होगा। अंत में कवि जितेन्द्र धीर के शब्दों में अपने विचारों को प्रस्तुत किया-

हर तरफ दीवार जो ऊँची बनी है
एक चादर-सी अँधेरी की तनी है
फ़ासले मिट जाएँगे मुझको यक़ीं है
इस धरा से ख़ात्म होगा रंज़ोग़म
फिर नया इतिहास लिखेगी क़लम

इस सत्र के मुख्य अतिथि तथा सुख्यात साहित्यकार प्रो० गंगा प्रसाद विमल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज़ादी के छह दशक के बाद भी आज हम अपनों की गुलामी झेल रहे हैं। इधर हाल के वर्षों में ऐसी घटनाएँ घटी हैं, कभी धर्म के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर तो कभी क्षेत्रीयता के नाम पर। महाराष्ट्र तथा असम में उत्तर भारतीयों के ख़िलाफ़ जो ज़हर उगले गए उससे भारतीय राजनीति शर्मशार हुई है। ऐसी विषम परिस्थिति में बौद्धिक चेतना से संपन्न लोगों की भूमिका अहम हो जाती है। वे ही वैचारिक क्रांति के ज़रिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रख सकते हैं। इसलिए आज के हालात को देखते हुए रचनाकार को अपनी वैचारिक स्वाधीनता की रक्षा के लिए हर ख़तरा उठाने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

कोलकाता का प्रतिनिधित्व कर रहे रचनाकार प्रो० शरणबंधु ने भारत के वैचारिकीकरण की बात कहते हुए कहा कि मुख्य समस्या सारी बात समझते हुए उसे नहीं समझना है। हक़ीक़त है कि किसी आदर्श के प्रति हममें, आस्था नहीं जग पा रही है जिसका दुष्परिणाम हमारे सामने है।

चेन्नई से पधारी राष्ट्रीय विचार मंच तथा बहुभाषी लेखिका मंच, तमिलनाडु की अध्यक्ष डॉ० मधु धवन ने बड़े तल्ख़ स्वर में कहा कि जब भारत एक है तो राज्यों में उठती समस्याओं के समाधान के लिए क्यों नहीं क़दम उठाए जाते। इसके लिए एक ओर जहाँ रणनीति बनाए जाने पर उन्होंने ज़ोर दिया, वहीं ऐसे नर-नारियों को तैयार करने की आवश्यकता जताई जो पहरूए का काम कर सके।

चेन्नई से पत्रकार रमेश गुप्त 'नीरद' जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सिर्फ़ वोट की ख़ातिर राजनीतिक दलों और उसके नेताओं ने भाषा, जाति, धर्म और क्षेत्र के नाम पर, आमजनों को बाँटने का काम किया है। इसका सामना करने के लिए वैचारिक क्रांति करनी होगी और यह काम प्रबुद्धजन अपनी लेखनी के द्वारा कर सकते हैं। मंच ने यह आयोजन इसी दृष्टिकोण से किया है। सामाजिक मुद्दे जब हमारे सामने आते हैं तो हम बुद्धिजीवियों को अपनी आवाज़ उठानी होगी। मीडिया भी एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा भी वैचारिक क्रांति की जा सकती है और जनता को जागृत किया जा सकता है।

'स्त्री विमर्श की भारतीय अवधारणा' विषय सत्र की मुख्य अतिथि तथा सुख्यात नेता श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका नारी ही सभ्यता, संस्कृति और समाजिक विकास का मूल स्रोत है। आज नारियाँ उच्च शिक्षा से विभूषित हो रही हैं और साथ ही वे त्याग, तप, विनम्रता, प्रेम और सेवा आदि गुणों से चूक भी रही हैं। नारी भी पुरुष की तरह समाज के निर्माण में बराबर की भूमिका निभाती है। मौजूदा दौर में स्त्री विमर्श की जो भारतीय अवधारणा है वह समस्त भारतीय समाज एवं संस्कृति के अँधकूप में विसर्जन की चेतावनी जैसी प्रतीत होने लगी है। आधुनिकता के खेल से हमारी संस्कृति, संस्कार और भारतीय पहचान आदि दांव पर लगे हुए हैं, जिससे आज की नारियों को सतर्क होना होगा। उन्होंने कई छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से यह सिद्ध किया कि औरत और मर्द का संबंध अटूट है। वे एक दूसरे के पूरक और सहायक हैं। उनके बिना नारी का अस्तित्व अधूरा और अपूर्ण है। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वे बच्चों और पति के लिए अपने हाथों से रसोई बनाना कभी बंद न करें। किसी कारणवश ऐसा न कर सकें तो खाना परोस कर खिलाएँ कभी न छोडें।

आधुनिकता की आँधी में बहती नारी की वजह से टूटते परिवार और नष्ट होती परिवार-संस्था पर चिंता प्रकट करते हुए चेन्नई का प्रतिनिधित्व कर रहीं डॉ० मधु धवन जी ने अध्यक्षीय उद्गार में कहा कि अविवाहित मातृत्व, यौन-संबंधों का खुलापन, सहजीवन जैसी कितनी ही अवधारणाएँ आज परिवार एवं संस्था के समक्ष चुनौतियाँ हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमते तत्र देवता:' स्त्री गौरव का यह परंपरागत भारतीय उद्घोष सामाजिक नियमन का उदघोष भर है, स्त्री की सामाजिक वस्तुस्थिति का चित्रण नहीं। निर्धारित विषय पर कहानी के माध्यम से चेन्नई की प्राध्यापिका श्रीमती श्रावणी पांडा ने एक रोचक आलेख प्रस्तुत किया और अणुव्रत तथा मंच से जुड़ी डॉ० कुसुम लुनिया ने कार्यक्रम संचालन के क्रम में भारतीय संस्कृति में स्त्री के स्थान का मार्मिक चित्ररण करते हुए कहा कि भारत में कभी भी मातृसत्तात्मक समाज के प्रमाण नहीं मिलते। ऐसे में स्त्री की स्थिति तो दोयम होनी ही है। फिर भी इधर हाल के वर्षों में नारी-मुक्ति की जो लहर भारत में चली है उसने भारतीय समाज में स्त्री का चेहरा सिरे से बदल डाला है। भारत तो क्या, संपूर्ण विश्व में ही स्त्री स्वातंत्र्य को अभी कई अन्य पड़ाव देखने हैं। स्त्री-स्वातंत्र्य एक क़िस्म का सामाजिक परिवर्तन है जिसकी गति न तो चरम है और न अंतिम। डॉ० लुनिया ने अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग कर इस शैक्षिक सत्र को जीवंत और सार्थक बनाया।

संध्या समय अधिवेशन के चतुर्थ सत्र में आयोजित अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन में जिन कवियों ने अपने-अपने काव्य-पाठ से सुधि श्रोताओं को सराबोर किया उनमें कविवर डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' डॉ० देवन्द्र आर्य, जितेन्द्र 'धीर', डॉ० मधु धवन, उदय कुमार 'राज़', सोंधी जी (पंजाबी), मणिकंठन (तमिल), रमेश गुप्त 'नीरद', सिद्धेश्वर, उमेश्वर सिंह, प्रो० राम निवास 'मानव', डॉ० पी० लता, आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इस अवसर पर पटना के कवि उमेश्वर सिंह की कृति 'मेघा मन' का लोकार्पण बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने किया।

31 अक्टूबर 2008 को राजेन्द्र भवन के सभागार में आयोजित 'राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में गाँधी और पटेल' विषय पर केंद्रीत पंचम शैक्षिक सत्र में गाँधी शांति प्रतिष्ठान के श्री रमेश शर्मा ने कहा कि अहिंसा में बहुत ताक़त है जिसके द्वारा राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण रखा जा सकता है। उन्होंने महाराष्ट्र में हुई घटना पर क्षोभ भी व्यक्त किया। इस सत्र में पंजाब से पधारे डॉ० नैनी ने डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर के महाकाव्य 'चिरजीव' के लोकार्पण से पूर्व पुस्तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस बीच मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर जी ने उपस्थित प्रबुद्ध प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि आज की विषम परिस्थिति में वे हमें रास्ता दिखाएँ कि हमें क्या करना चाहिए। ऐसे समय में साहित्यकारों को क्या करना चाहिए, मंच के लोगों को क्या करना चाहिए।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के 133 वें जयंती पर संपन्न इस शैक्षिक सत्र में चेन्नई से पधारे डॉ० बालशौरि रेड्डी ने सरदार पटेल के राष्ट्रीय एकीकरण में किए गए अप्रतिम योगदान की चर्चा करते हुए धर्म, संप्रदाय और भाषा के नाम पर राष्ट्रीय एकता को खण्ड-खण्ड करने की साजिश पर अपनी चिंता प्रकट की।

ग़ाज़ियाबाद का प्रतिनिधित्व कर रहे संस्कृत के विद्वान डॉ० सोमेश्वर दत्त शास्त्री जी ने कहा कि अपने पारिवारिक व सामाजिक मूल्य की रक्षा के साथ-साथ हमें राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की रक्षा तो हर क़ीमत पर करनी ही होगी। विकास और प्रगति का सारा दर्शन इसी में निहित है कि परंपरागत भारतीय समाज भी सर्वथा निर्दोष नहीं। समाज अपने भीतर से ही इन दोषों के निराकरण का उपाय भी ढूँढ़ता है और परिवर्तन के कारक भी पैदा करता है।

इस सत्र को सुख्यात साहित्यकार डॉ० सुंदर लाल कथुरिया ने संबोधित करते हुए कहा कि देश की आज जो स्थिति है उस पर यदि हम विचार करें तो गाँधी और पटेल के समय भी कड़ी परिस्थितियाँ थीं। गाँधी जी ने इन परिस्थितियाँ का सामना करने के लिए युगों-युगों से चले आ रहे अहिंसा का दर्शन दिया। शासक वर्ग यदि अपने दायित्व से पल्ला झाड़ लें, तो आत्मबल से जूझने वाला ही आगे आकर राष्ट्रीय एकता पर मंडराते ख़तरे का सामना कर सकता है। डॉ० नायर की उक्त पुस्तक का लोकार्पण एवं लेखक को अर्पण करते हुए उन्होंने लेखक और पुस्तक पर भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर चेन्नई के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पी० के० बाला सुब्रह्मण्यम जी ने कहा कि गाँधी जी ने पूरी निष्ठा से अहिंसा का प्रचार

किया और पटेल ने राष्ट्रीय एकीकरण के लिए अपने अदम्य साहस और दूरदर्शिता का परिचय दिया। सरदार पटेल को अहिंसा का पुजारी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि खण्ड-खण्ड में बँटे राष्ट्र को एक करने के लिए उन्होंने जो रास्ते अपनाए वह भी उस वक़्त के लिए ज़रूरी था।

राष्ट्रीय विचार मंच, केरल इकाई के अध्यक्ष डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गाँधी तथा पटेल के कुछ ऐसे आदर्श रहे हैं जिसे अपनाकर हम देश का निर्माण कर सकते हैं। हमें जो आज़ादी मिली है वह सत्य और अहिंसा पर आधारित है। आज इस देश को एक बनाने की आवश्यकता है। यह कार्य सिद्धेश्वर जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय विचार मंच कर रहा है। 'राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में बापू और पटेल' विषय पर जयपुर से पधारे प्राचार्य प्रो० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि आज हमें दूसरी लड़ाई लड़नी है, जन-चेतना जागृत करनी है। लौह पुरुष सरदार पटेल का कहना था कि क्षमता शोभती उस जंग को जिसके पास गरल हो। आज बापू और पटेल के सपनों को साकार करना है। राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार के महासचिव, डॉ० शाहिद जमील ने सत्र का संचालन और साहित्य सचिव रघुवंश कुमार सिंह जी ने आभार व्यक्त किया।

पंचम शैक्षिक सत्र में 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' विषय का प्रवर्तन करने के क्रम में 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर जी ने कहा कि पत्रकारिता अपने समय का इतिहास होती है, मगर कभी-कभी युग विशेष की आवश्यकतानुसार यह इतिहास अपने आप में कालजयी दस्तावेज होता है। निःसंदेह आज़ादी के बाद हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ है, मगर यह भी सच है कि पिछले एक-डेढ़ दशक से भारतीय पत्रकारिता बाज़ार की गिरफ़्त में है और उस पर पूँजी के हावी होने की वजह से वह उसे अपने रंग में तेज़ी से रंग रही है, जिसके परिणामस्वरूप पत्रकारिता और पाठक के बीच भी खाई बढ़ती जा रही है, कारण कि पाठकों के समक्ष मसालेदार एवं चटपटी चीजें परोसे जाने से पठनीय सामग्रियाँ घटती जा रही हैं। आज की पत्रकारिता में सब कुछ उल्टा-पुल्टा चल रहा है। आख़िर कहीं तो पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा होनी चाहिए। आज की पत्रकारिता महज़ एक व्यवसाय बनकर रह गई है।

इस सत्र के मुख्य वक्ता डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि पत्रकारिता के बदलते मंज़र को समझना तथा पत्रकारिता द्वारा, उसके लिए खिंची गई लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन के दुष्परिणामों को देखते हुए बदहाल पत्रकारिता को कैसे उसका अभिप्रेत मिल सके और उसकी लोक मंगलोन्मुखी भूमिका समाज--परिवर्तन के लिए यथोचित दिशा प्रदान कर सके, इस पर विचार किया जाना समय की माँग है। पत्रकारिता को अपनी प्राथमिकताएँ वरीयताएँ अथवा लक्ष्मण रेखा तो तय करनी ही होगी यदि उसे अपने आदर्शों के अनुरूप चलना है। पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा के संदर्भ में आज के परिदृश्य और विसंगतियों पर चर्चा को ज़रूरी बताते हुए उन्होंने दुष्यंत कुमार की इन पंक्तियों को प्रस्तुत किया और कहा कि ये पंक्तियाँ आज की विसंगतियों को उजागर करती हैं–

इस सड़क पर इस कद्र कीचड़ बिछी ह
हर किसी का पाँव घुटने तक सना है।

अंत में उन्होंने कहा कि आज की सोद्देश्योन्मुखी पत्रकारिता को स्वयं गंगा बनकर अवतरित होकर इस पीर से हमें मुक्ति दिलाने की ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

'राष्ट्रीय विचार मंच', कर्नाटक शाखा की अध्यक्ष तथा कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति की प्रधान सचिव बी०एस०शांताबाई जी ने कहा कि भूमण्डलीकरण के दौर में और उपभोक्तावादी संसार में तथा व्यावसायिक स्पर्धा के माहौल में पत्रकारिता मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा के भीतर अपने को कैसे रखे, आज इस पर विचार किए जाने की आवश्यकता है। मंच ने अपने राष्ट्रीय अधिवेशन में इस विषय पर देश भर के विद्वत्जनों को आमंत्रित कर विचारों के आदान-प्रदान का जो मुहिम चलाया है वह श्रेयष्कर ही नहीं, अनुकरणीय भी है।

इस विषय पर चेन्नई के रमेश गुप्त 'नीरद' तथा डॉ० विवेक राय और हिसार के डॉ० रामनिवास 'मानव' ने भी पत्रकारिता द्वारा वास्तविक सरकार से भटकने पर चिंता ज़ाहिर करते हुए कहा कि आज की बहुआयामी पत्रकारिता कैसे सामाजिक सरोकारों को अंजाम दे, आज इस पर गंभीरतापूर्वक विचार किए जाने की ज़रूरत है।

तिरुवनंतपुरम का प्रतिनिधित्व कर रही मंच की केरल शाखा की महासचिव डॉ०पी० लता ने केरल में हिंदी पत्रकारिता और उसकी उपलब्धियों एवं संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की और कई समस्याओं को विचारार्थ प्रस्तुत किया।

इसी सत्र में विचार दृष्टि' के संपादक के अबतक के प्रकाशित संपादकीयों के संकलन 'समकालीन संपादकीय' और डॉ० मधु धवन द्वारा संकलित '21 तमिल कहानियाँ' नाम्नी पुस्तक का लोकार्पण बी०एस० शांताबाई जी एवं मान्य अतिथियों द्वारा सम्मिलित रूप से किया गया।

इस सत्र का संचालन डॉ० शाहिद जमील और धन्यवाद ज्ञापन उदय कुमार 'राज़' ने किया।

'राष्ट्रीय एकता के निहितार्थ भारतीय युवा वर्ग' विषयक षष्टम् शैक्षिक सत्र में पटना से पधारे प्रो० साधुशरण ने कहा कि जा पराजय नहीं स्वीकार करता है वही युवा है। क्या इन युवाओं के लिए कुछ किया जा रहा है? उन्होंने युवाओं के लिए संचालित योजनाओं की विस्तार पूर्वक चर्चा की। इस अवसर पर शिमला का प्रतिनिधित्व कर रहे डॉ० धर्म सिंह पाल ने कहा कि आज कौन-सा ऐसा काम हो रहा है जिससे आज का युवावर्ग प्रेरणा ले सके। पटना का प्रतिनिधित्व कर रहे मंच की बिहार इकाई के उपाध्यक्ष डॉ० एस०एफ० रब ने अपनी बात प्रसिद्ध शायर शानुर्रहाम के इस शेर से शुरू की ;

न थक के बैठ कि अभी उड़ान बाकी है
जमी खत्म हुई अब आसमान बाको ह

और कहा कि हमें अपने विचारों, दृष्टिकोणों मं संतुलन पैदा करना होगा। पटना के अफ़ज़ल इंजीनियर ने कहा कि भारतीय युवा बड़े ही प्रतिभावान होते हैं। वे अपनी प्रतिभा के बल पर देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी अपना पर्चम लहरा रहे हैं। परंतु अधिकांश युवाओं में नैतिक मूल्यों के प्रति उदासीनता बढ़ी है और वे अपनी शक्ति का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

हिसार, हरियाणा से पधारे प्रतिनिधि प्रो० कुमार रवीन्द्र ने कहा कि राष्ट्रीयता एक भाव है, विचार है, जिससे कोई समुदाय परिभाषित होता है। भारत में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति उसकी सांस्कृतिक संचेतना से जुड़कर ही हुई

है। यह सांस्कृतिक अवचेतना धर्म संप्रदाय, जाति, क्षेत्रबोधक सभी संज्ञाओं से ऊपर होती है, किंतु सबका संयुक्त बोधन भी करती है। ऐसी स्थिति में युवा संचेतना को यदि हम राष्ट्रीय एकता का संवाहक बनाना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपने मानसिक, भावात्मक और सांस्कृतिक अवरोधों एवं विरोधाभासों को दूर करना होगा और इसके लिए अपनी गंगा-जमुनी साझी सांस्कृतिक की विरासत को पुनः **जागृत करना होगा।**

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ० परमानंद पांचाल ने युवाओं का आह्वान किया कि वे आज पुनः देश के निर्माण के लिए आगे आएँ। अँग्रेज़ के ज़माने में जो हमें शिक्षा दी गई थी वही आज रंग ला रही है। आज देश चारो तरफ़ से घिर गया है। धार्मिक उन्माद बढ़ रहा है। लोग धर्म और जाति में बँटते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि आज यह देश टूट के कगार पर है। राष्ट्रीय एकता को सूत्र में बाँधने वाली शक्ति की आवश्यकता है, राष्ट्रीय एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा की ज़रूरत है। उन्होंने मंच के सभी पदधारकों को राष्ट्रीय एकता पर केंद्रीत इस अधिवेशन के आयोजन के लिए हार्दिक बधाई दी। कार्यक्रम का सफल संचालन उदय कुमार 'राज़' तथा आभार प्रकट किया पटना से पधारे पूर्व प्रधानाध्यापक राम विलास मेहता ने।

समापन सत्र

समापन सत्र बड़ा ही आकर्षक और रोमंचकारी रहा। दो-दिवसीय कार्यक्रमों की सफलता और अपनी-अपनी संतोषजनक हिस्सादारी से खुश और संतुष्ट प्रतिनिधियों और आयोजन से संबद्ध लोगों के चेहरे पर सफलता की चमक साफ़ दिख रही थी। परंतु जीवंतता दर्शाते उनके चेहरों की पृष्ठभूमि में जुदाई की उदास लकीरें भी नज़र आ रही थीं।

समापन सत्र में यह घोषणा की गई कि मंच की सम्मान समिति के निर्णयानुसार देश की तीन महान विभूतियों को जिन्होंने वैचारिक क्राँति की दिशा में पहल कर आमजन मानस को आंदोलित किया और राष्ट्र-चेतना जागृत करने का प्रयास किया उन्हें मंच द्वारा 'विचार रत्न', 'विचार भूषण' एवं 'विचार श्री' से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। सम्मान-समारोह में बैंगलुरु से पधारी कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति की प्रधान सचिव बी०एस० शांताबाई जी को दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रचार हेतु मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल के कर-कमलों द्वारा शॉल, प्रतीक चिह्न तथा गुलदस्ता सहित प्रमाण-पत्र प्रदान कर 'विचार भूषण' से सम्मानित किया गया। पूर्व लोक सभाध्यक्ष तथा समाजवादी विचारधारा के उन्नायक श्री रवि रे को 'विचार रत्न' से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर द्वारा राजस्थान विश्व विद्यालय के प्राध्यापक तथा गाँधीवादी विचारधारा के पोषक डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी को 'विचारश्री' से सम्मानित किया जाएगा।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए बी०एस० शांताबाई जी ने राष्ट्रीय विचार मंच और उसके मुख-पत्र-'विचार दृष्टि द्वारा नई दिल्ली में आयोजित इस दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन की सफलता पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता ज़ाहिर की तथा मंच को हर संभव सहयोग करने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने यह महसूस किया कि राष्ट्रीय एकता को मज़बूती प्रदान करने के लिए इस देश की राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रयोग को बढ़ावा देना आज प्रत्येक प्रबुद्धजन का नैतिक एवं राष्ट्रीय दायित्व है। उन्होंने इस काम को समर्पण के भाव से किया है और भविष्य में भी मंच के सहयोग से अपना यह दायित्व निभाती रहेंगी।

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदलाल जी, महासचिव सिद्धेश्वर जी एवं मान्य अतिथियों द्वारा मिल-जुलकर देश के कोने-कोने से राष्ट्रीय अधिवेशन में पधारे सभी प्रतिनिधियों एवं आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्तओं को प्रतीक चिह्न व पुष्प गुच्छ में भेंटकर सम्मानित किया गया। यह दृश्य बड़ा ही हर्षोलासपूर्ण था।

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा के वरिष्ठ अधिकारी नंदलाल जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मंच के उद्देश्यों के अनुरूप आयोजित इस दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय एकता के विभिन्न पहलुओं पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे प्रबुद्धजनों, चिंतकों, विचारकां मंच की राष्ट्र एवं राज्य इकाईयों के पदाधिकारियों तथा भारतीय भाषाओं के उद्भट विद्वानों ने वैचारिक क्रांति की दिशा में विचारों का आदान-प्रदान करके न केवल मंच का मार्ग दर्शन किया और सही दिशा दिखलाई है, बल्कि राष्ट्र की एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए मंच द्वारा चलाए गए अभियान में अपेक्षित सहयोग करने की इच्छाशक्ति जाहिर की है। उनका यह आश्वासन और संकल्प मंच को संबल प्रदान करेगा। निश्चित रूप से उनके उद्गारों से मंच के शुभेच्छु और उससे जुड़े सदस्यों को प्रोत्साहन मिला है उत्साहवर्द्धन हुआ है और उन्हें अपन दायित्व के निर्वहन के लिए प्रेरणा मिली है।

लौह पुरुष सरदार पटले के राष्ट्रीय एकता में किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए नंदलाल जी ने मंच की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। महाभारत के एक प्रसंग को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कलियुग में समाज की रक्षा के लिए प्रबुद्धजनों को आगे आने की आवश्यकता जताई। उन्होंने अपना संकल्प दर्शाते हुए कहा कि निकट भविष्य में राष्ट्रीय विचार मंच और इसके मुख्य पत्र 'विचार दृष्टि' का अपना-अपना बेबसाइट होगा। इसके अतिरिक्त मंच का एक 'न्यूज़ लेटर' भी प्रकाशित करने की योजना है। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग की क्षमता का भरपूर उपयोग स्वस्थ समाज के निर्माण में किया जाना समय की माँग है। आज आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र के प्रति प्रेम और समाज के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाए। उन्होंने स्पष्टतः कहा कि हर बड़े समारोह में बड़ी सफलताओं की प्राप्ति के बावजूद चंद ख़ामियाँ भी रह जाती हैं। हम इस वर्ष के अनुभवों से वर्ष 2009 के अधिवेशन को और अधिक सफल और सार्थक बनाने की कोशिश करेंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आगामी वर्ष के अधिवेशन में निशित रूप से यह सभागार छोटा पड़ जाएगा। अंत में उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सहयोगियों का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया।

मंच के महासचिव सिद्धेश्वर जी ने इस अवसर पर भ्रष्टाचार मिटाने का एक संकल्प उपस्थित लोगों से दिलवाया। इसके तुरंत बाद 'विचार दृष्टि' के दश वर्ष पूरा होने के पर

प्रकाशित 'पत्रकारिता विशेषांक' अंक-37 का मिल-जुलकर लोकार्पण किया गया।

बी०एस०शांताबाई, नंदलाल, सिद्धेश्वर, डॉ० धर्मेन्द्रनाथ, डॉ० नैनी, डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर के कर-कमलों द्वारा सभी प्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं एवं आयोजन से संबद्धों को प्रतीक चिह्न और गुलदस्ता भेंटकर उन्हें सम्मानित किया गया।

समापन समारोह का संचालन डॉ० शाहिद जमील ने तथा मंच के सक्रिय सदस्य प्रो० पी०के० झा ने सभी मान्य अतिथियों, प्रतिनिधियों, विज्ञापन दाताओं प्रायोजकों के प्रति उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। राष्ट्र-गान के बाद अधिवेशन की समाप्ति की घोषणा की गई।

राष्ट्रीय महासचिव का आभार

राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभाई पटेल की 133वीं जयंती उपलक्ष्य में तथा राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था राष्ट्रीय विचार मंच के दो दशक से अधिक एवं उसके मुखपत्र 'विचार दृष्टि' के सफलतापूर्वक दस वर्ष पूरे होने पर इन दोनों की ओर से विगत 30 एवं 31 अक्टूबर 2008 को नई दिल्ली को विष्णु दिगंबर मार्ग स्थित हिंदी भवन तथा 10, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन के सभागार में राष्ट्रीय एकता के विविध पहलुओं पर केंद्रीत दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ जिसक उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त कुल छह शैक्षिक सत्रों में 'विदेशी माटी में पुष्पित पल्लवित हिंदी', 'भाषावाद, क्षेत्रीयता और धार्मिक संकीर्णता के उभार से राष्ट्रीय एकता पर मंडराते ख़तरे', 'स्त्री-विमर्श की भारतीय अवधारणा', 'राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में बापू और पटेल', 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' तथा 'राष्ट्रीय एकता के निहितार्थ भारतीय युवा वर्ग' जैसे छह विषयों पर देश के सुप्रसिद्ध चिंतकों विचारकों, लेखकों, पत्रकारों तथा प्रबुद्धजनों ने सार्थक व जीवंत चर्चा कर मंच को सही मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देश प्रदान किया। निश्चित रूप से विचारों के आदान-प्रदान से मंच तथा इसकी पत्रिका के द्वारा राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए चलाए गए राष्ट्रीय अभियान को बल मिला है। शैक्षिक सत्रों के अलावा इस अवसर पर एक अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें देशभर के विभिन्न भारतीय भाषाओं के जाने-माने कवियों ने अपने काव्य--पाठ का सुधा-रस-पान कराकर सुधि श्रोताओं को सराबोर किया। जिन प्रमुख चिंतकों--विचारकों, रचनाकारों, कवियों तथा पत्रकारों ने विभिन्न सत्रों में अपने-अपने विचार व्यक्त कर गोष्ठियों को ऊँचाई प्रदान की उनमें तिरुवनंतपुरम के डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर, डॉ० बालशौरि रेड्डी, डॉ० पी० के० बालासुब्रह्मण्यम, डॉ० मधु धवन, प्रो० श्रावणी पांडा, प्रो० मणिकंठन, पी० आर० वासुदेवन 'शेष', श्री रमेश गुप्त 'नीरद', बी० एस० शांताबाई, गौतमबुद्ध नगर, नोयडा से श्री टी० एन० चतुर्वेदी, ग़ाज़ियाबाद से डॉ० सोमेश्वर दत्त शास्त्री, डॉ० कुसुम लुनिया, नई दिल्ली के डॉ० रामकरण शर्मा, डॉ० परमानंद पांचाल, डॉ० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन', पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि, श्री नंदलाल, श्री विद्यासागर वर्मा, प्रो० गंगा प्रसाद विमल, श्रीमती मृदुला सिन्हा, डॉ० सुंदरलाल कथुरिया, डॉ० नैनी, श्री रमेश शर्मा, हिसार के डॉ० रामनिवास 'मानव', प्रो० कुमार रवीन्द्र, राँची के डॉ० पी० एन० विद्यार्थी, पटना के डॉ० साधुशरण, डॉ० एस० एफ० रब, डॉ० शाहिद जमील, श्री रघुवंश कुमार सिन्हा, श्री अवधेश प्र० सिंह, श्री अफ़ज़ल इंजीनियर, श्री उमेश्वर सिंह, देहरादून के कविवर डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, जयपुर के डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', कोलकाता के श्री श्याम सुंदर गुप्ता, श्री जितेन्द्र धीर, प्रो० शरणबंधु, शिमला के डॉ० धर्म सिंह पाल का नाम उल्लेखनीय है।

आयोजित अधिवेशन ने जहाँ मंच के पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों को इसके उधेश्यों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया है, वहीं 'विचार दृष्टि' के संपादक-मंडल एवं संचालक-मंडल को इसे ग्यारवें वर्ष में प्रवेश कर इसकी पठनीयता और स्तरीयता में वृद्धि करने के लिए ऊर्जा मिली है।

यहाँ यह कहना सर्वथा समीचीन होगा कि पूरे अधिवेशन को सफल बनाने का श्रेय यदि किसी एक पदाधिकारी को दिया जाए, तो मंच के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं संप्रति दिल्ली विकास प्राधिकरण के वित्त सदस्य श्री नंदलाल जी हैं, जिनके नेतृत्व में, मंच तथा 'विचार दृष्टि' से जुड़े सभी सदस्यों ने अधिवेशन को सफल बनाने में अपनी एकजुटता का परिचय दिया। मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक होने के नाते मैं अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल जी के प्रति तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इनका मार्गदर्शन एवं अपेक्षित सहयोग मंच तथा पत्रिका को मिलता रहेगा। मंच तथा पत्रिका से जुड़े अपने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अधिवेशन की सफलता के लिए कोई कोर-कसर नहीं उठा रखा। बधाई के पात्र तो सबसे अधिक वे हैं जिन्होंने अधिवेशन के कार्यक्रमों को प्रायोजित किया तथा विज्ञापन से सहयोग प्रदान कर इसे साकार किया। अंत में मैं अपने दो ख़ास सहयोगियों डॉ० शाहिद जमील तथा श्री उदय कुमार 'राज़' के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ जिनके क़दम-क़दम पर सहयोग के बिना यह अधिवेशन कदापि अपनी मंज़िल पर नहीं पहुँच पाता और 'पत्रकारिता विशेषांक' का लोकार्पण संभव नहीं होता। इस विशेषांक के मुद्ररण में श्री सत्यानारायण प्रसाद ने यदि व्यक्तिगत अभिरुचि नहीं ली होती तो दीपावली के अवसर पर इसका प्रकाशन कदापि संभव नहीं था। वैसे स्वागताध्यक्ष श्री नंदलाल जी के नेतृत्व में बनी स्वागत समिति ने आमंत्रित प्रतिनिधियों, मान्य अतिथियों, वक्ताओं तथा सुधि श्रोताओं व मीडिया से जुड़े कर्मियों क आवभगत तथा खान-पान का सावधानीपूर्वक ख़्याल रखने का प्रयास किया, फिर भी भूलवश यदि कहीं किसी मोड़ पर उन्हें असुविधा हुई हो, तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। इतने बड़े आयोजन में कुछ भूल-चूक नहीं हुई हो, इसका दावा तो मैं नहीं करता और कर भी नहीं सकता, मगर इतना ज़रूर है कि भरसक हमने पूरी सावधानी बरतने की कोशिश की ताकि कहीं भी किसी अतिथि को कोई असुविध न हो।

इस ऐतिहासिक अधिवेशन के बाद मैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहना चाहूँगा कि राष्ट्रीय विचार मंच के पिछले बाइस वर्षों की और 'विचार दृष्टि' की दस वर्षों की यात्रा के बाद इससे जुड़े सदस्यों, लेखकों तथा पाठकों के मानसिक धरातल

में परिवर्तन आए हैं। उनके काम करने की शैली बदली है और संस्था तथा पत्रिका के प्रति प्रतिबद्धताएँ बढ़ी हैं। आज हम उस मुक़ाम तक पहुँच गए हैं जहाँ मंच से लगाव और संस्था के प्रति आस्था पहले की अपेक्षा कुछ अधिक दिखने लगी है, क्योंकि इस बीच काम करने की तकनीक ने काफ़ी बड़ी करवट ली है। हमारे अध्यक्ष श्री नंदलाल जी द्वारा अपने कंम्प्यूटर से स्वयं प्रिंट आउट निकालकर कार्यकर्ताओं को उनके दायित्व सौंपना इस बात के साक्षी हैं। आमतौर पर ऐसा कहाँ देखा-सुना जाता है। हर व्यक्ति अपने दायित्व के निर्वहन और कर्त्तव्य के पालन में तल्लीन और समर्पित भाव से लगा हो तथा सारी चीज़ें व्यवस्थित और लोग अनुशासित हों, समय का प्रबंधन कमाल का हो, यह सब अपने-आप में कुछ ऐसा हुआ जो मुझे यह सोचने को बाध्य कर रहा है कि यदि किसी संस्था या पत्रकारिता के शीर्ष पर बैठे अधिकारी त्याग, निष्ठा, समर्पण और ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करें, तो कोई कारण नहीं कि संस्था के अन्य अधिकारी व कार्यकता उनके क़दम से कदम मिलाकर न चलें। कम से कम इस अधिवेशन से तो बस हमें यही सीख मिली है।

इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि विचार-विमर्श से सोच का विकास होता है, चिंतन का विकास होता है और परिवर्तन के लिए जनमत तैयार होता है। अतएव विचार-विमर्श की प्रक्रिया को विकसित करने के लिए ज्ञान की परंपरा से संवाद के साथ-साथ समकालीन प्रबुद्धजनों, विचारकों और विचारवान लेखकों से संवाद स्थापित करने का प्रयास सदैव जारी रहे। वैचारिक क्रांति की दिशा में अग्रसर होने का एक यही सुलभ मार्ग है और यही राष्ट्रीय विचार मंच और विचार दृष्टि का उधेश्य भी है। इसी से आम आदमी को रोशनी मिलेगी अपनी दिशा तय करने और दशा बदलने की। यही महत्त्वपूर्ण भावनात्मक कड़ी होगी भारत-पुत्रों को अपनी मातृभूमि और अपने समाज से जुड़ने की। इसके लिए इस तरह को अधिवेशन का आयोजन एक सार्थक प्रस्थान-बिंदु बन सकता है।

जहाँ 'विचार दृष्टि' पत्रिका के सरोकार का सवाल है, इसने समाज को दिशा देने और जागरूक करने के साथ-साथ राष्ट्र चेतना जगाने का काम किया है। इसकी बुनियाद ही व्यक्ति समाज के प्रति पूरी सामाजिक परिवर्तन की उम्मीद से रखी गई थी, यही आज भी कल भी और उसके बाद आने वाले कल के लिए बीज मंत्र है जिससे इसने कभी समझौता नहीं किया। मौजूदा दौर में समाज के प्राय: प्रत्येक क्षेत्र में विचार व सिद्धांत की बात बेमानी लगने लगी है और हर रोज इंसानियत की हत्या हो रही है। आज की युवा पीढ़ी भी दिमाग पर बोझ डालना नहीं चाहती और युवावर्ग चिंतन-मंथन नहीं करना चाहता। उन्हें तो बस चटपटी मसालेदार चीजें चाहिए। राजनीति के सभी मूल्य ख़त्म होते जा रहे हैं। मूल्य विहीन राजनीति, भ्रष्टाचार, महिलाओं व दलितों पर हो रहे अत्याचार, सुस्त पड़ रहे राष्ट्र के नायकों, रंगकर्मियों, बुद्धिजीवियों और पद, वैसे व पुरस्कार पाने की लालसा लिए सत्ता के तंग गलियारों में घूमते लेखकों को जागरूक करने की मुहिम तो छेड़नी ही होगी तथा समाज में हो रहे अन्याय के ख़िलाफ़ एक न एक दिन तो हल्ला बोलना ही होगा। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर 'विचार दृष्टि' ने ग्यारवें वर्ष में प्रवेश करने के बाद भी अपने विचार पाठकों तक पहुँचाते रहने का संकल्प लिया है। आख़िर न्याय के लिए किसी न किसी को तो पहल करनी ही पड़ती है और आम लोगों को जागरूक करने की अलख जगानी ही पड़ती है। ऐसे में इस पत्रिका ने आगे बढ़कर एक दिया जलाने की जो कोशिश की है उस निरंतर जलाए रखने का प्रयत्न जारी रखना है, ताकि अँधेरे में वह उजाला का काम कर सके। इस काम में हम सजग रहें, इसके लिए लेखकों एवं पाठकों का सहयोग भी अपेक्षित है।

जो बीत गया है उसे बीत जाने दो,
हँसते-मुस्कराते वर्तमान में ही कुछ पाने दो।

सिद्धेश्वर

पृष्ठ 36 का शेष भाग

कि जो बाल्यावस्था या विद्यार्थी काल में ब्रह्मचारी रहता है, वह अपने शरीर, मन और आत्मा का मालिक बन जाता है। इसी का नाम आत्मानुशासन है। आत्मानुशासन के लिए शिक्षण संस्थाओं में नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता पर सरकार का ध्यान देना ज़रूरी है। बचपन में प्राप्त संस्कार शेष जीवन में यह आधार-स्तंभ का कार्य करता है। शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने हेतु बच्चों का निम्नांकित बातों पर ध्यान देना जरूरी है : 1. प्रतीक्षा 2. आत्मसंयम 3. आज्ञा 4. दूरदर्शिता 5. धैर्य ।

आत्मानुशासन के लिए नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता से अनगिनत फायदे हैं। अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहना जीवन का अनुशासन है। अनुशासन सर्वव्यापक है। वह हर वस्तु में विद्यमान रहता है, वह सूक्ष्म इतना है कि आँखों से दिखाई नहीं देता है। भीतर की आँखों से देखने पर वह हर वस्तु में दिखाई देगा।

अनुशासन की परिभाषाएँ : 1. नियम का पालन अनुशासन है। 2. कर्त्तव्य ही अनुशासन है। 3. धर्म ही अनुशासन है। 4. चरित्र ही अनुशासन है। केवल अनुशासन के पुजारी को ही दुर्लभ चीजों की प्राप्ति संभव है।

पूर्ण अनुशासन के लिए निम्नलिखित बातों का निरंतर अभ्यास करना चाहिए, ताकि वे हमारी आदत बन जाएँ। कहा भी गया है कि If habit is not resisted, It becomes necessity, अगर आदत को नहीं रोका गया, तो यह आवश्यकता हो जाती है।

अनुशासन (मन का):- 1. अच्छे विचार, 2. सत्य, 3. उचित निर्णय, 4. कर्त्तव्य-बुद्धि, 5. नैतिकता, 6. संयम, 7. नम्रता, 8. आज्ञा-पालन, 9. समय-पालन, 10. नियम-पालन, 11. सभ्यता, 12. उत्तरदायित्व, 13. सहकारिता, 14. आत्मत्याग, 15. प्रजातांत्रिक व्यवहार, 16. सामाजिकता, 17. अच्छी आदतें, 18. अच्छा आचरण, 19. अच्छा वातावरण, 20. कर्मशीलता, 21. अच्छी रुचि, 22. उचित नेतृत्व, 23. रचनात्मकता, 24. आत्म-निरीक्षण।

ऊपर वर्णित चौबीस गुणों को अगर हम जीवन के व्यवहार में लाऐंगे, तो निश्चित रूप से हमारा जीवन अनुशासित हो जायेगा। इस तरह की शिक्षा जो आत्मानुशासन प्रदान करती है, नैतिक शिक्षा के रूप में बच्चों में प्रदान की जाय, तो भावी पीढ़ी में बच्चे देश के सच्चे सपूत और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की तरह अनुशासित, राष्ट्रवादी, एकता के संवाहक एवं चारित्रिक दृढ़ता के प्रतीक बन सकते हैं।

श्री आजाद उच्च कोटि के ज्ञानी, चरित्रवान एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक साहसी, निडर और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी योग्यता को स्वाधीनता के हित में लगा दिया। ऐसे महामानव सदैव देश के राजनैतिक इतिहास में श्रद्धापूर्वक चमकते सितारे के रूप में याद किए जाते रहेंगे।

संपर्क : सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक, पटना

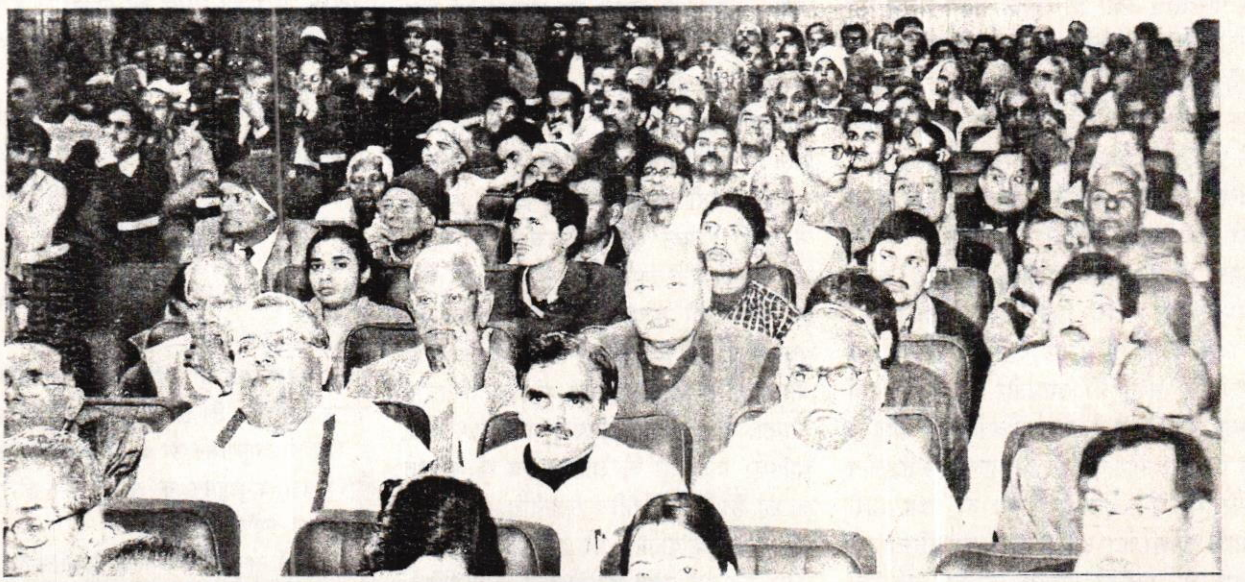

लेखकों व पत्रकारों के लिए

आवश्यक सूचना

मंच द्वारा राष्ट्रीय निर्देशिका का निःशुल्क प्रकाशन

मान्यवर,

हमें यह जानकारी देते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि 'राष्ट्रीय विचार मंच' द्वारा भारतीय संविधान में स्वीकृत सभी भाषाओं के भारतीय / भारतीय मूल के लेखकों / साहित्यकारों एवं पत्रकारों का जीवन-वृत (**Bio-Data**) देवनागरी लिपि में निःशुल्क प्रकाशित तथा 31 अक्टूबर, 2008 को नई दिल्ली में सरदार पटेल की 133 वीं जयंती के अवसर पर 'विचार दृष्टि' के पत्रकारिता पर केंद्रीत 10-वर्षांक (अक्टूबर-दिसंबर, 2008, 37 वें अंक) के साथ ही इस निर्देशिका का लोकार्पण किया जाएगा। टंकित / सुस्पष्ट हस्तलिखित अपना जीवन-वृत (**Bio-Data**) एक पासपोर्ट आकार के हालिया फोटो के साथ निम्नांकित प्रपत्र में यथाशीघ्र अधोहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराने का कृपया कष्ट करें।

:: प्रपत्र ::

1. पूरा नाम **2.** साहित्यिक/ उप नाम **3.** पिता का नाम **4.** जन्म तिथि **5.** जन्म स्थान का ज़िला एवं राज्य **6.** शैक्षिक योग्यता **7.** पेशा / संबंद्धता **8.** लेखन / पत्रकारिता की भाषा **9.** प्रमुख विधाएँ / कार्यक्षेत्र **10.** प्रकाशित पुस्तकें **11.** पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं की संख्या **12.** प्राप्त सम्मान / पुरस्कार **13.** अभिरुचि **14.** अन्य उल्लेखनीय बातें **15.** संपर्क सूत्र (दूरभाष संख्या सहित)

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त सभी सूचनाएँ सत्य हैं।

स्थान .... तिथि .... हस्ताक्षर

प्रेषण का पता : डॉ॰ शाहिद जमील, उप संपादक, आवास सं॰- सी॰- 6, पथ सं॰- 5, आर॰ ब्लॉक, पटना - 800001

दूरभाष संपर्क : 09430559161(मो॰) / 0612-2226905 (कार्या॰)

सदियों से संस्कृत पर टिकी देश की एकता आज उपेक्षित

– प्रो० अरुण कुमार

सिद्धेश्वर की अध्यक्षता में बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड की राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

प्रस्तुति : ✯ डॉ० शाहिद जमील

जिस संस्कृत भाषा पर सदियों से देश की एकता टिकी रही वही आज उपेक्षित है। लोग इस भाषा का समना नहीं चाहते। मदरसों को सामान्य शिक्षा प्रणाली से जोड़ा गया, मगर संस्कृत विद्यालयों को इससे अलग रखा गया, जबकि संस्कृत भाषा में अद्त ग्रंथ हैं। ये उद्गार हैं बिहार विधान परिषद् के शिक्षाविद् कार्यकारी सभापति प्रो० अरुण कुमार के, जिन्होंने विगत 28 दिसंबर, 2008 को सम्राट अशोक की नगरी पाटलिपुत्र के तारामंडल सभागार में प्रात: 9.30 से रात 9.30 बजे तक पूरे बारह घंटे तक संस्कृत भाषा, उसके साहित्य और संस्कृत शिक्षा में गुणात्मक सुधार पर बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के तक़रीबन ढाई दशक के इतिहास में पहली बार इसके नवनियुक्त अध्यक्ष, सिद्धेश्वर प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न उक्त संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि तथा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्कृत के उद्भट विद्वान डॉ० रामकरण शर्मा ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्कृत देश की संस्कृति व उसकी अस्मिता की प्रतीक है। राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में संस्कृत ने महती भूमिका निभाई है। उन्होंने इस बात का कड़ा विरोध किया कि सभी भाषाओं की जननी अर्वाचीन संस्कृत भाषा कभी भी मृत नहीं रही है, हाँ, इतना ज़रूर है कि पिछले 50 वर्षों से शैक्षणिक संस्थानों में इसके व्यावहारिक प्रयोग में कमी आई है। भूमण्डलीकरण के आज के युग में नासा (NASA) जैसी महत्त्वपूर्ण संस्था भी कम्प्यूटर के लिए पूर्ण भाषाओं के अपने शोध में इस नतीजे पर पहुँचा है कि संस्कृत एक संपूर्ण भाषा है, जो कम्प्यूटर के इस्तेमाल को आसान बना सकती है ।

उद्घाटन सत्र के अपने अध्यक्षीय भाषण में बोर्ड के अध्यक्ष, सिद्धेश्वर प्रसाद ने कहा कि समाज में बढ़ती स्वेच्छाचारिता तथा दुष्प्रवृत्ति को रोकने के लिए संस्कृत के उदात्त, मानक तथा सत्साहित्य के माध्यम से रुग्ण व बीमार समाज में न केवल सद्विचारों का फैलाव होगा, बल्कि संस्कृत शिक्षा से ही विद्यार्थियों को प्राणिक रूप से दृढ़ निश्चयी, मानसिक रूप से सद्विचारी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेषी तथा आध्यात्मिक रूप से समाजसेवी बनाने का दायित्व निभाया जा सकता है और संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रमों में संशोधन कर उनमें औपचारिक विषयों के साथ-साथ शारीरिक व नैतिक शिक्षा, योग, संगीत तथा कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी का समावेश समीचीन होगा। यही नहीं संस्कृत के ज़रिए देश प्रेम व देश भक्ति की शिक्षा प्रदान कर जहाँ राष्ट्र व चरित्र के प्रति बच्चों को समर्पित किया जा सकता है, वहीं गुरु-शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाकर लुप्त होती अपनी भारतीय संस्कृति व सभ्यता को जीवंत किया जा सकता है।

लखनऊ से पधारे संगोष्ठी के मुख्य अतिथि तथा इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स के० विक्रम राव ने इस बात पर ज़ोर दिया कि संस्कृत को उचित सम्मान देकर ही स्वस्थ समाज और सुदृढ़ राष्ट्र निर्मित किया जा सकता है। संस्कृति को संवारने और समृद्ध करने का संस्कृत एक नायाब माध्यम है जिसकी वजह से विषमता के बावजूद देवभाषा संस्कृत दक्षिणवर्त और आर्यावर्त की भी विरासत को संजोए हुए है तथा जन्म से निधन तक आमजन की सभी क्रियाओं का आज भी अभिन्न हिस्सा बनी तथा उपासना स्थलों में सदैव गूँजती संस्कृत के केवल लोकोन्मुखी एवं जनोपयोगी पहलुओं को यदि उजागर किया जाए, तो वह नई सदी के भारत का रूप बदल सकती है।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए दैनिक 'हिंदुस्तान' पटना के संपादक सुनील दुबे ने कहा कि राष्ट्रीय एकता को बरक़रार रखने के लिए संस्कृत शिक्षा ज़रूरी है। इस अवसर पर बोर्ड के अध्यक्ष, सिद्धेश्वर की लोकार्पित अद्यतन कृति 'समकालीन संपादकीय' पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि श्री सिद्धेश्वर के सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान को रेखांकित करती इस पुस्तक में सम्मिलित संपादकीय पाठक को गहरे तक जहाँ आंदोलित करते हैं, वहीं मानवीय पीड़ाबोध और व्यक्ति के भीतर करुणा को भी सृजित करते हैं। निश्चित रूप से हिंदी पत्रकारिता में विचारों की खेती कर रहे सिद्धेश्वर जी के ये संपादकीय अपने समय के गंभीर सवालों से निरंतर मुठभेड़ करते दिखाई दे रहे हैं। इन संपादकीयों के ज़रिए विचार-मंथन किया जा सकता है, कारण कि इनमें राष्ट्रीय चेतना की भरपूर वैचारिक सामग्रियाँ मौजूद हैं।

इस अवसर पर कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ० नंदकिशोर शर्मा ने संस्कृत शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि की आवश्यकता पर बल दिया। इसी प्रकार दिल्ली से पधारे प्रतिनिधि डॉ० सोमेश्वर दत्त शास्त्री ने संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष पद पर सिद्धेश्वर प्रसाद के पदस्थापन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इनके नेतृत्व में संस्कृत शिक्षा बोर्ड के ज़रिए संस्कृत भाषा का न केवल प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि संस्कृत साहित्य भी समृद्ध होगा और संस्कृत शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार लाने का हर संभव प्रयास किया जा सकेगा।

प्रारंभ में संस्कृत बोर्ड के सचिव श्रीनिवास तिवारी ने मान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए जहाँ बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड का एक परिचय प्रस्तुत किया, वहीं बोर्ड के अध्यक्ष, श्री सिद्धेश्वर ने संगोष्ठी में देश के कोने-कोने से पधारे संस्कृत व हिंदी के विद्वत्जनों को गुलदस्ता, प्रतीक चिह्न तथा खादी का गमछा और चादर भेंट कर सम्मानित किया।

संगोष्ठी के दो शैक्षिक सत्रों में 'वैश्विक भाषा एवं साहित्य में संस्कृत का योगदान' तथा 'संस्कृत शिक्षा की गुणवत्ता में कैसे हो सुधार' विषयों पर प्राय: सभी सुप्रसिद्ध साहित्यकारों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते हुए संस्कृत भाषा के प्रति बरती जा रही उदासीनता तथा इसकी उपेक्षा पर अपनी चिंता जताई तथा

सभी ने कहा कि संस्कृत भाषा में विघटनकारी विष को धो डालने की जहाँ क्षमता है, वहीं इसके माध्यम से विभिन्न भाषा-भाषियों को एक शृंखला में बाँध देने का भी सामर्थ्य है।

आंध्र प्रदेश के हैदराबाद से पधारी डॉ० कविता वाचक्नवी ने संगोष्ठी के तृतीय शैक्षिक सत्र के लिए निर्धारित विषय 'संस्कृत शिक्षा की गुणवत्ता में कैसे हो सुधार' पर अपन अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वर्तमान दौर के सूचना प्रौद्योगिकी युग में भी संस्कृत भाषा में न केवल साहित्य रचा जा सकता है अपितु कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाने वाली यह भाषा जीवन के हर पक्ष को अभिव्यक्ति प्रदान करने की क्षमता रखती हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के जिन संस्कृत व हिंदी के पुरोधाओं ने संगोष्ठी का अपने विचारों से सार्थक एवं जीवंत बनाया उनमें हैदराबाद से पधारी राष्ट्रीय विचार मंच की आंध्र प्रदेश की अध्यक्षा, डॉ० कविता वाचक्नवी एवं द्वारका प्रसाद मायछ, लखनऊ से डॉ० श्रीमती के० विक्रम राव, दिल्ली के डॉ० रमाकांत शुक्ल, जयपुर के डॉ० इंद्रदेव मेहता, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संस्कृत प्राध्यापक डॉ० शंकर कुमार मिश्र, कोलकाता का प्रतिनिधित्व कर रहे साहित्यकार जितेन्द्र धीर, डॉ० मिथिलेश कुमारी मिश्र, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के डॉ० उमेश शर्मा, डॉ० उमेश प्र० सिंह, प्रो० श्रीपति त्रिपाठी, डॉ० देवनारायण, बख़्तियारपुर कॉलेज की प्राचार्या डॉ० प्रियंवदा मिश्र एवं डॉ० सतीश चंद्र मिश्र, बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष, डॉ० सतीशचंद्रा, पटना विश्व वि० के संस्कृत विभागाध्यक्ष, डॉ० रामविलास चौधरी तथा हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ० बलराम तिवारी, बिहार संस्कृत संजीवन समाज के डॉ० शिववंश पाण्डेय, बिहार सरकार के पूर्व अपर सचिव, अखिलेश पाठक, रामविलास मेहता, खुदा बख़्स औरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के निदेशक, डॉ० इम्तियाज़ अहमद, मगध विश्व वि० के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ० वैद्यनाथ शर्मा तथा चंद्रशेखरन, अवधेश प्र० सिंह आदि प्रमुख्य एवं उल्लेखनीय हैं।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोर्ड के द्वारा प्रकाशित सुरुचिपूर्ण स्मारिका 'संस्कृत संजीवनी' का लोकार्पण कार्यकारी सभापति प्रो० अरुण कुमार ने किया, जिसमें संस्कृत के विभिन्न पहलुओं को संजोया गया है। संगोष्ठी के विविध कार्यक्रमों को समेटती हुई स्मारिका 'संस्कृत संजीवनी' का संशोधित संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्व वि० के पूर्व प्रतिकुलपति, डॉ० आद्याचरण, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तथा बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक, प्रो० रामबुझावन सिंह, कवि राम उपदेश सिंह 'विदेह', अमलेन्दु कुमार सिन्हा, श्रीमती शर्मा, डॉ० गौरीनाथ मिश्र 'भास्कर', अशोक कुमार चौधरी, पुरुषोत्तम, तेज बहादुर सिंह, डॉ० रामकरण पाल, नरेन्द्र मिश्र, डॉ० परमानंद मिश्र, दयानंद पाण्डेय, नागेन्द्र शुक्ल, प्रो० गोपाल पाण्डेय, फ़रीदाबाद से पधारे वरिष्ठ उर्दू शायर नाशाद औरंगाबादी, राष्ट्रीय विचार मंच बिहार के उपाध्यक्ष, मो० सुलेमान एवं कर्नल एस० एस० राय, वरिष्ठ शायर शानुर्रहमान, श्रीमती बच्ची प्रसाद, श्रीमती रिंकू, सुश्री सदफ़ और अलमास जमील, लखन सिंह आदि ने अपनी उपस्थिति से संगोष्ठी को गरिमामय बनाया।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र में कविवर सत्यनारायण की अध्यक्षता में आयोजित अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन में अपने काव्य-पाठ का सुधा-रस-पान जिन कवियों ने सुधी श्रोताओं को कराया उनमें कविवर सत्यनारायण, चंद्र प्रकाश माया, भगवती प्रसाद द्विवेदी, जगन्नाथ मेहता, योगानंद हीरा, डॉ० सतीशचंद्र, डॉ० रमाकांत शुक्ल, डॉ० वैद्यनाथ शर्मा, उदय शंकर, हरींद्र विद्यार्थी, हृदय नारायण, यामुन प्रसाद यादव, अलख नारायण, कृष्णदेव प्रसाद अरविंद, डॉ० अशोक कुमार मेहता, नाशाद औरंगाबादी, शानुर्रहमान, मो० सुलेमान, देवनारायण, उमेश्वर सिंह, कविता वाचक्नवी, द्वारका प्र० मायछ, मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' तथा सुशील कुमार आदि प्रमुख हैं। सर्वभाषा कवि सम्मेलन में नाशाद औरंगाबादी के सद्यः प्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह 'हम सफ़र ग़ज़लें' का लोकार्पण बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, सिद्धेश्वर ने किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन तथा द्वितीय शैक्षिक सत्र का संचालन जहाँ 'विचार दृष्टि' के उप संपादक, डॉ० शाहिद जमील ने किया, वहीं तृतीय शैक्षिक सत्र तथा अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन का संचालन क्रमशः डॉ० मिथिलेश कुमारी मिश्र तथा जितेन्द्र धीर ने किया। इसी प्रकार उद्घाटन, द्वितीय तथा तृतीय सत्रों के मान्य अतिथियों व सुधी श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किए क्रमशः बोर्ड के परीक्षा नियंत्रक, कौशल किशोर, लेखा पदाधिकारी, कृष्णनंदन प्रसाद सिन्हा तथा स्थापना शाखा के प्रभारी, गौरी शंकर ने।

संगोष्ठी के समापन के पूर्व बोर्ड के अध्यक्ष, सिद्धेश्वर प्रसाद ने संगोष्ठी में भाग लेकर इसे जीवंत और सार्थक बनाने में सहयोग करने वाले देश के कोने-कोने से पधारे विद्वत्जनों, चिंतकों, विचारकों, पत्रकारों, मीडिया से संबद्ध कर्मियों, प्रायोजकों, विज्ञापनदाताओं, छायाकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह स्वीकार किया कि बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार से जुड़े पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के अपेक्षित सहयोग के बिना यह संगोष्ठी कदापि सफल नहीं हो पाती। उन्होंने अपने सभी सहकर्मियों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित की।

बोर्ड के द्वारा पहली बार आयोजित इस एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्कृत भाषा, साहित्य और शिक्षा पर किए गए विचार-विमर्श ने समस्त संस्कृत जगत को आंदोलित तो किया ही, बोर्ड की तेज़ी से धूमिल होती छवि पर भी एक विराम लगा, क्योंकि इस संगोष्ठी से लोगों में यह संदेश गया कि बोर्ड के नए अध्यक्ष ने संस्कृत के उन्नयन के लिए एक नई और लंबी लकीर खींचने का सफल प्रयास किया है। इसका स्वागत प्रत्येक क्षेत्र के लोगों द्वारा मुक्त कंठ से किया जा रहा है।

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अट्ठाइस वर्षों के कार्यकाल में पहली बार आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से यह नतीजा निकला कि अब तक भारतीय भाषाओं ही नहीं, बल्कि समस्त वैश्विक भाषाओं की जननी कही जान वाली संस्कृत पूरी तरह से उपेक्षित रही है। जिस भाषा में आदि कवि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की हो, व्यास ने 'महाभारत' और 'श्रीमद्भागवत गीता' जैसे ग्रंथ रचे हों, दुर्भाग्य से आज उसे ज्ञान-विज्ञान ही नहीं, साहित्य की भाषा मानने में भी परहेज़-सा किया जाने लगा है। यही नहीं, संस्कृत से जुड़ी तमाम संस्थाओं व संगठनों के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं ने भी संस्कृत साहित्य और संस्कृत शिक्षा

राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार के तत्त्वावधान में दिनांक ०९ नवंबर, २००८ को सोन भवन के सभागार, पटना में आयोजित लोकार्पण-सह विचार गोष्ठी संपन्न।

(बायें से मंच पर) 'विचार दृष्टि' के 'पत्रकारिता विशेषांक' और 'राष्ट्र चेता' तथा अब्दुस्समद के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आधारित पुस्तक 'अक्स दर अक्स' का लोकार्पण करते हुए संपादक, 'विचार दृष्टि', श्री सिद्धेश्वर, समारोह के अध्यक्ष, लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार प्रो॰ वहाब अशरफ़ी और सांसद (राज्यसभा), श्री शिवानंद तिवारी। विचार व्यक्त करते हुए (बायें से क्रमशः) श्री सिद्धेश्वर, श्री शिवानंद तिवारी, समारोह के मुख्य अतिथि प्रो॰ शमशाद हुसैन और समारोह का संचालन करते हुए उप संपादक डॉ॰ शाहिद जमील। श्री शिवानंद तिवारी की बग़ल में बैठे हुए प्रो॰ अब्दुस्समद।

(बायें से मंच पर) डॉ॰ क़ासिम खुर्शीद, समारोह के मुख्य वक्ता प्रो॰ एजाज़ अली अरशद, डॉ॰ शाहिद जमील, मंच के साहित्य सचिव, रघुवंश कुमार सिंहा, मंच के वरीय उपाध्यक्ष, डॉ॰ एस॰एफ़॰ रब, श्रीमती बच्ची प्रसाद और वरिष्ठ कथाकार डॉ॰ उषा किरण ख़ान। बायें से तीसरे श्री अता आबदी एवं अन्य सुधी श्रोतागण)

आयुर्वेद संस्कृत प्राथमिक सह मध्य विद्यालय, आरा के नए भवन के शिलान्यास समारोह का उद्‌घाटन करते हुए बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद साथ में मुख्य अतिथि एवं आरक्षी अधीक्षक, भोजपुर श्री सुनील कुमार और विशिष्ट अतिथि एवं उप संपादक 'विचार दृष्टि', डॉ॰ शाहिद जमील एवं श्री रामविलास महतो मंच पर बायें से दूसरे डॉ॰ शाहिद जमील, श्री सुनील कुमार, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री रामविलास महतो और भूमि दाता श्री भगवान दास महतो। पीछे बैठे श्री लखन सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री वेद प्रकाश वर्मा और उनके पीछे खड़े प्रधानाध्यापक श्री अखिलेश्वर प्रसाद।

के उन्नयन और उसके गुणात्मक सुधार की दिशा में अधिक कुछ नहीं किया। हिंदी मीडिया द्वारा कहीं भी इस पर चर्चा करना आवश्यक नहीं समझा गया। संस्कृत भाषा को अपने देश में जहाँ अब सिर्फ़ पूजा-पाठ की भाषा समझा जाता है, वहीं अमेरिका तथा यूरोप के कई देशों में उसके अध्ययन के लिए विशेष छात्रवृति दी जाने लगी है और 'गीता' को पाठ्यक्रम में अनिवार्य कर दिया गया है। दरअसल इस देश के राजनीतिक चरित्र द्वारा संस्कृत जैसी श्रेष्ठ भाषा को धर्म और संप्रदाय से जोड़कर उसे मृत भाषा के खाते में डालने की पूरी तैयारी कर ली गई है। दुर्भाग्य से कतिपय संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य की रोटी खाने वाले शिक्षक, अधिकारी और कर्मचारी भी उदासीन दिखाई पड़ रहे हैं। अंततः यह तो संस्कृतवालों तथा संस्कृत भाषाप्रेमियों को ही तय करना है कि वे इस भाषा को सिर्फ़ ज्योतिषियों और पूजा-पाठ की भाषा रखना चाहते हैं या फिर जन-जन तक पहुँचाना। यदि इसे जन-जन तक ले जाकर राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने का इरादा है, तो बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड अथवा संस्कृत से जुड़ी सभी संस्थाओं को संस्कृत के विद्वानों और शिक्षकों द्वारा तहे दिल से अपेक्षित सहयोग प्रदान करना उनका नैतिक दायित्व होगा अन्यथा आने वाली भावी पीढ़ी उन्हें भी माफ़ नहीं करेगी। इसे महज़ संयोग ही कहा जाए कि बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष पद पर बिहार सरकार ने एक ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ व ईमानदार साहित्यकार-पत्रकार को पदस्थापित किया है, जो संस्कृत और हिंदी दोनों को पुनर्प्रतिष्ठत करने के लिए कृत संकल्पित हैं। माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार को सच्चे संस्कृतप्रेमी कर्मी भूल नहीं पाएँगे। अन्य-भाषा-प्रेम ने ही मुझ जैसे अकिंचन को भारत और बिहार की राजधानी में अखिल भारतीय स्तर के समारोह के संचालन का गर्व बख़्शा। भाषा उसी की प्रेसी है, जो उसे सम्मान-संरक्षण दे। मैं भी माननीय मुख्यमंत्री, नीतीश कुमार जी को सिद्धेश्वर जी जैसे ईमानदार, योग्य और दृहसंकल्पी व्यक्तित्व को एक अहम दायित्व सौंपने के लिए तहे दिल से मुबारकबाद पेश करता हूँ।

***

— उप संपादक

शोक-सभा का आयोजन

पूर्व प्रधानमंत्री बी॰पी॰ सिंह और पूर्व कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश, पटना उच्च न्यायालय, न्यायमूर्ति सरवर अली के आकस्मिक निधन पर 30 नवम्बर, 2008 को संध्या 3.30 बजे मंच के राज्याध्यक्ष, श्री सिद्धेश्वर की अध्यक्षता में पुरेन्दरपुर, पटना स्थित राज्य कार्यालय में एक शोक-सभा का आयोजन किया गया।

भारतीय राजनीति में अपनी पहचान जनता के बीच बनाने में कामयाबी हासिल करने तथा राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय योगदान करने वाले संवेदनशील और साहित्यिक प्रकृति के अकेले राजनेता वी॰पी॰ सिंह को आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में याद किया जाएगा। उन्होंने देश और दलों में भी लोकतंत्र को मज़बूत करने की आवाज़ उठाई। उनकी कमी को पूरा करना आसान नहीं हागा। इसी प्रकार बिहार राज्य के प्रथम लोकायुक्त तथा लंदन से 1950 ई॰ में बार एट लॉ करने वाले न्यामूर्ति सरवर अली मानवाधिकार के लिए समर्पित तो थे ही पटना उच्च न्यायालय के पूर्व कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश के पदीय दायित्वों का भी बड़ी जवाबदही और ईमानदारी से निर्वहन किया। उक्त बातें बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष एवं मंच के राज्याध्यक्ष, श्री सिद्धेश्वर ने कहीं। उनके अतिक्ति स्वंश्री रामविलास महतो, युगल किशोर प्रसाद, उमेश्वर प्रसाद सिंह, कामेश्वर प्रसाद सिन्हा, मनोज कुमार, रविन्द्र प्रसाद यादव और मंच के महासचिव, डॉ॰ शाहिद जमील आदि ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त कर श्रद्धांजलि पेश की।

उप संपादक

डॉ0पी0एन0 विद्यार्थी का निधन

प्रसिद्ध साहित्यकार, राष्ट्रीय विचार मंच की झारखण्ड शाखा के संयोजक तथा बिहार प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी डॉ॰ प्रभुनारायण विद्यार्थी का आकस्मिक निधन उस वक़्त हो गया जब वे श्रीलंका में आयोजित अंतर राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन में बौद्ध साहित्य एवं दर्शन पर अपने आलेख का पाठ कर रहे थे। श्रीलंका सरकार के आमंत्रण पर कोलंबो में आयोजित सम्मेलन में आलेख पाठ करते समय ही हृदय गति के रूक गई थी।

डॉ॰ विद्यार्थी विगत तीन वर्षों से मंच की झारखण्ड इकाई के संयोजक के रूप में कार्य कर रहे थे। 30-31 अक्टूबर, 2008 को मंच द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका अदा की थी। उनक निधन से मंच तथा उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' को काफ़ी क्षति पहुँची है। वे इसके सहयोगी रचनाकार भी थे। झारखण्ड सरकार से वे अवर सचिव के पद से सेवा निवृत्त होकर पूर्णकालीन हिंदी साहित्य की सेवा कर रहे थे।। 15 फरवरी 2009 को वरिष्ठ कथाकार डॉ॰ उषा किरण ख़ान के दो कथा-सग्रह और एक उपन्यास के लोकार्पण समारोह के अवसर पर 'राष्ट्रीय विचार मंच' की बिहार शाखा द्वारा एक शोक सभा का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

— उप संपादक

उर्दू कवि रिफ़अत सरोश का निधन

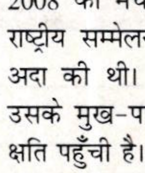

उर्दू के विशिष्ट कवि, साहित्यकार और नाटककार सैयाद शौकत अली रिफ़अत सरोश का जन्म उत्तर प्रदेश के नगीना में 08 अप्रैल, 1924 ई॰ को हुआ था। वे पचास से अधिक किताबों के लेखक थे। 35 वर्षों तक आकाशवाणी दिल्ली केंद्र में अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान की। उर्दू मज़्लिस को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई। वे कैंसर रोग से पीड़ित थे। 84 वर्ष की आयु में 29 नवंबर, 2008 को उनका निधन हो गया। परिवार में एक बेटा और दो बेटियाँ हैं। पत्रिका परिवार की ओर से उन्हें भावभिनी श्रद्धांजलि।

***

उप संपादक

चंद्रयान ने बढ़ाया देशाभिमान

✵ सिद्धेश्वर

चंद्रयान-1 ने भारतीय राष्ट्र ध्वज तिरंगे के रंगों में रंगा मून इंपैक्ट प्रोब चंद्रतल पर सफलतापूर्वक उतारकर देश के स्वाभिमान को बढ़ाया है और इस प्रकार चंद्रमा की सतह को छुने वाले हम दुनिया के चौथे देश बन गए हैं। इसके पूर्व अमेरिका पूर्व सोवियत संघ तथा यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी को यह गौरव हासिल हो चुका है। 14 नवंबर 2008 को रात 8 बजकर 31 मिनट पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (दूसरों) के मानवरहित चंद्रयान ने देश की शान तिरंगे को चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक पहुँचाकर देश के अंतरिक्ष विज्ञान के स्वर्णिम इतिहास में नए अध्याय की शुरुआत कर दी जिसके लिए 'दूसरा' के अध्यक्ष माघवन नायर सहित इसके सभी सहयोगी वैज्ञानिकों को हार्दिक बधाई। श्री नायर का कहना है कि "हमने अपने वायदे के मुताबिक़ भारत को चाँद दे दिया है। अब हम दो साल तक चंद्रमा की खोज करते रहेंगे। इसके बाद हमारा अगला क़दम एक भारतीय को अपने अंतरिक्षयान में अंतरिक्ष भेजना है। इसके बाद हम मंगल तक मंगलयान भेजेंगे। इसमें कोई यात्री नहीं होगा। हमें चंद्रयान से जो सूचनाएँ मिलेंगी वे इन दोनों उड़ानों में काम आएँगी।"

उल्लेख्य है कि मून इंपैक्ट प्रोब ने उतरते समय रेडियो कैमरे से चंद्र धरातल के चित्र उतारे। केवल पाँच किलोमीटर की दूरी से उतारे गए चित्र आश्चर्यजनक हैं। प्रोब में ऊँचाई मापने के लिए सी बैंड रडार अल्टीमीटर, चाँद की सतह की तस्वीर के लिए वीडियो इमेजिंग सिस्टम और वायुमंडलीय तत्त्वों के लिए स्पेक्ट्रोमीटर होने की वजह से हमें वहाँ की सच्ची छवि मिल रही है। अब तक इस चंद्रयान ने चंद्रमा की दो ताज़ा तस्वीरें भेजी हैं। चंद्रयान-1 पर लगे टैरेन मैपिंग कैमरा द्वारा बेहद क़रीब से खींची गई इन तस्वीरों में चाँद की सतह पर कई छोटे-बड़े गड्ढे दिखाई दे रहे हैं जिसमें पानी होने का अंदाज लगाया जा रहा है। यह तस्वीरें भेजने के साथ सतह की संरचना के बारे में यानी खनीज, पानी, हीलियम-3 आदि की बाज़ाब्ता जानकारी दे सकेगा। अनुमान यह लगाया जा रहा है कि चंद्रमा पर उपलब्ध हीलियम-3 के प्रचुर भंडार हमारी हज़ारों वर्षों की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं जो संपूर्ण मानव समाज के लिए भारत की

महत्त्वपूर्ण देन होगी। वैसे भी भारत का अंतरिक्ष अभियान मानवहित के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है जो एशियाई देशों के लिए तकनीकी शक्ति और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा ज़्यादा मायने रखता है। जबकि चीन अपनी अंतरिक्ष महत्त्वकांक्षाएँ एक महाशक्ति के रूप में प्रदर्शित करना चाहता है। हालांकि यह भी सच है कि भारत चीन के साथ कोई

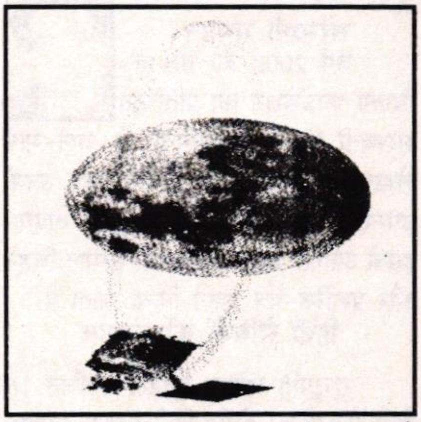

प्रतियोगिता नहीं करना चाहता। चीन प्रारंभ से भारत से आगे रहने का इच्छुक रहा है, इसीलिए उसने सबसे पहला उपग्रह 1970 में छोड़ा जबकि भारत का आर्यभट्ट 1975 में प्रक्षेपित किया गया था।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन क द्वारा चंद्रमा पर भेजे गए इस चंद्रमान-1 का आकार मारुति-800 के बराबर है और इस पर मात्र 380 करोड़ रुपए ख़र्च किए गए हैं जो एक जंबो जेट की आधी क़ीमत के बराबर है। तीन साल तक तक़रीबन एक हज़ार वैज्ञानिकों ने इसके निर्माण में भाग लिया। दूसरा मून मिशन अर्थात चंद्रयान-2 को 2012 तक तथा 2015 तक 12 हज़ार करोड़ रुपए की लागत वाली मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान भेजने की परियोजना है।

चाँद पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है, जो पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पूर्णिमा के दिन आकाश में चमकते चाँद की रोशनी में ताजमहल की सुंदरता देखते ही बनती है और चाँद की तो पूछिए ही मत; तभी तो चाँद का टुकड़ा, चाँद-सा चेहरा जैसी उपमाएँ दी जाती रही हैं।

सूरज की रोशनी से चमकने वाले चाँद का आकार गोल और उसका व्यास 3476 किलोमीटर है चाँद हमारी पृथ्वी से औसतन 384000 किलोमीटर दूर है। यह पृथ्वी के चारो ओर अंडाकार घेरे में घूमता है। चंद्रमा जितने समय में पृथ्वी का एक चक्कर पूरा करता है, लगभग उतने ही समय में अपनी घूरी पर भी एक चक्कर पूरा कर लेता है। इस वजह से चंद्रमा का हमें सिर्फ़ एक ही भाग जो हमेशा पृथ्वी की ओर रहता है, दिखाई देता है और दूसरा भाग हमें दिखाई नहीं देता। p kh gh, d ,bk Hkk8sj (Extra territorial) पिंड है, जिसमें मानव ने क़दम रखा है। इसमें पहली बार मानव के क़दम 20 जुलाई 1969 को पड़े थे और आख़िरी बार दिसंबर 1972 में।

चंद्रमा पर एक दिन हमारे 14 दिनों के बराबर होता है और एक रात चौदह रातों के बराबर होती है। चंद्रमा के गैस रहित संसार में वायुमंडल न होने से दिन में जोर की गर्मी और रात को कड़ाके की सर्दी पड़ती है।

चाँद की कक्षा में चंद्रयान-1 अब चाँद के अत्यधिक समीप से उसकी परिक्रमा कर रहा है। यह दो घंटे में चाँद का एक चक्कर पूरा करता है। चंद्रयान-1 में कुल ग्यारह, वैज्ञानिक उपकरण लगाए गए हैं, जिनसे चंद्रयान-1 अपने उद्देश्यों की पूर्त्ति करेगा। ग्यारह उपकरणों के नासा के दो, यूरोपीय स्पेस एजेंसी के तीन, बुल्गसारिया विज्ञान अकादमी का एक और पाँच उपकरण पूर्णतः दूसरों द्वारा अभिकल्पित एवं विकसित किए गए हैं इस प्रकार भारत का चंद्रयान-1 अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक अभूतपूर्व उदाहरण है।

❋❋❋

संपर्क : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

बिहार के मुख्य मंत्री नीतिश कुमार 'पॉलीटीशियन ऑफ द ईयर' से सम्मानित

देश के सर्वश्रेष्ठ और प्रतिष्ठित अँग्रेज़ी न्यूज चैनल सी॰एन॰एन॰ आई॰बी॰एन॰ द्वारा इंडियन ऑफ द ईयर 2008 के होटल ताज, नई दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में कार्यवाहक प्रधानमंत्री प्रणव मुखर्जी के हाथों बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, प्रणव मुखजी, उमर अब्दुल्ला, शिवराज सिंह चौहान, रमन सिंह तथा श्रीमती शीला दीक्षित जैसे पाँच राजनीतिक महारथियों में सर्वश्रेष्ठ पाए जाने के फलस्वरूप 'पॉलीटीशियन ऑफ द ईयर-2008' पुरस्कार से नवाज़े गए, क्योंकि श्री कुमार धीरे-धीरे बिहार को प्रगति के रास्ते पर ले जा रहे हैं। उन्होंने यह पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा कि यह पुरस्कार उनके लिए

नहीं, बल्कि पूरे बिहार के लिए है।

इसके साथ ही मात्र तीन साल के अपने अल्प कार्यकाल में नीतीश कुमार पुन: बिहार की सबसे बड़ी समस्या 'गवर्नेंस' का ठीक करने के लिए भारत सरकार ने ई-गवर्नेन्स पुरस्कार से भी सम्मानित किया।

दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने इस अवसर पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह श्री कुमार से टिप्स ले सकती हैं, दे नहीं सकती। उल्लेख्य है कि 'पॉलीटीशियन ऑफ द ईयर-2008' पुरस्कार चयन समिति में पूर्व एटार्नी जेनरल शोली शेराबजी, दीपक पारेख, नंदन लिखेनी तथा एच॰टी॰ मीडिया लि॰ की चेयरपर्सन -कम-एडिटोरियल डाइरेक्टर श्रीमती शोभना भरतिया शामिल थीं।

श्री कुमार को इन दो सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों से सम्मानित किए जाने के लिए 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

— संपादक

पं0 भीमसेन जोशी को भारत रत्न

हिंदुस्तानी संगीत के अकेले क्लासिकल गायक पंडित भीमसेन गुरुराज जोशी को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। अस्वस्थता के कारण उन्हें यह सम्मान भारत सरकार के एक अपर सचिव ने पुणे जाकर दिया।

पं॰ जोशी की गायकी में ग़ज़ब का ओज और मधुरता का सम्मिश्रण है। वे तेज़ और लरज़दार ताने लेते हैं और वह भी पूरी मधुरता के साथ जिनमें क्लासिकीय शुद्धता बनी रहती है। आपने संत परंपरा के दिग्गज कवियों के गीतों और भजनों को कला की आत्मा में डूबकर पूरी कोमलता के साथ गाया है। उनके इसी हुनर के कारण उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा गया है। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' से देश की एकता का सम्मोहक गान करने वाले सुर के इस सम्राट को 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई और स्वस्थ-दीर्घ जीवन की कामना।

डॉ॰ लक्ष्मीनंदन बोरा को सरस्वती सम्मान

वर्ष 2008 का के॰ के॰ बिरला फाउंडेशन का प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान असमिया के जाने-माने लेखक डॉ॰ लक्ष्मीनंदन बोरा को उनके उपन्यास 'कायाकल्प' के लिए दिया जाएगा। इसके अंतर्गत पाँच लाख रुपये, सम्मान चिह्न और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

हिंदी सेवियों को सम्मान

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने जिन 16 हिंदी सेवियों को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पुरस्कारों से सम्मानित किया उनमें आलोक मेहता को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, उषा प्रियंवदा को मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार, प्रो॰ स्ताशक को जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार, डॉ॰ अमरनाथ 'अमर', तथा कमाल ख़ाँ को संयुक्त रूप से गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार विनीता सिंघल और डॉ॰ मनोज पटैरिया दुर्गादत्त ओझा एवं डॉ॰ सुबोध महंती को संयुक्त रूप से आत्माराम पुरस्कार, प्रो॰ निर्मला जैन तथा डॉ॰ नंद किशोर नवल को सुब्रह्मण्यम पुरस्कार, डॉ॰ पूरनचंद जोशी तथा हरिराम मीणा को राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार तथा प्रो॰ ए॰ अरविंदाषन, प्रो॰ जोहरा अफ़ज़ल तथा डॉ॰ एम॰ शेषन को गंगाशरण सिंह पुरस्कार से नवाज़ा।

— उप संपादक

डॉ0 देवेन्द्र आर्य को कविवर हरिनारायण व्यास पुरस्कार

पुणे 12 अक्टूबर 08, डांगरे सभागृह, हिंदी भवन में आयोजित समग्र दृष्टि तथा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में यशस्वी कवि डॉ॰ देवेन्द्र आर्य (ग़ाज़ियाबाद) को उनके काव्य संकलन 'आग लेकर मुट्ठियों में' पर 'कविवर हरिनारायण व्यास अखिल भारतीय हिंदी काव्य पुरस्कार- 2008' प्रदान किया गया। शाल, नारियल, प्रशस्ति-पत्र तथा ग्यारह हज़ार रुपये की राशि भेंट करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष, हिंदी-मराठी साहित्य के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं विचारक डॉ॰ चंद्रकान्त बांदिवडेकर ने कहा कि 'आग लेकर मुट्ठियों में' ऐसा गीत-संग्रह है जिसमें पहली पंक्ति से लेकर आख़िरी पंक्ति तक जिजीविषा और संघर्ष की अनंत ऊर्जा को विभिन्न कोणों से, विभिन्न प्रतीकों और रूपकों से अभिव्यक्त किया गया है। डॉ॰ आर्य सकारात्मक सोच के कवि हैं, वे हार को जीत से भूषित करते हैं, आपदा के सामने हिमालय-सा अड़ने का दृढ़ संकल्प उनमें है। 'मैं और मेरी कविता' पर अपना वक्तव्य देते हुए डॉ॰ आर्य ने अपनी कुछ रचनाओं का वाचन करते हुए कहा कि जिजीविषा, आस्था, संघर्ष, विश्वास और राष्ट्रीयता मेरी कविता के मूल स्वर हैं। निराला साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान, प्रो॰ रामजी तिवारी ने डॉ॰ आर्य की कविता में विद्यमान ओजस्विता, सकारात्मकता और राष्ट्रीय भावनाओं को विशेष रूप से रेखांकित किया। पुरस्कार संयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ॰ केशव प्रथम पुरुष के कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ॰ आर्य को पुरस्कार के लिए बधाई देते हुए कहा कि हम सबकी कामना है कि डॉ॰ देवेन्द्र आर्य इसी प्रकार सद्ग्रंथों से माँ भारती का भंडार भरते रहें। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संचालक, श्री ज॰गं॰ फगर ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।

- मनीषा गुप्ता

जी॰टी॰ करनाल रोड, दिल्ली से

बिहार में अब निरापद शामें सुहानी और रातें सयानी

✯ सिद्धेश्वर

बिहार में अब गाँव की पगडंडी से लेकर शहर के माल तक निरापद शामें सुहानी और रातें सयानी होने लगी हैं, मगर इसके पीछे सिर्फ़ फागुन और वसंत का असर नहीं है, बल्कि भयमुक्त वातावरण बनाने और दहशत कम करने के लिए आज से तक़रीबन तीन साल पूर्व बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व में बनी राजग सरकार के महकमों को निश्चय ही पसीना बहाना पड़ा है।

कहना नहीं होगा कि लगभग नौ करोड की आबादीवाले बिहार राज्य में कम पूँजी निवेश, बढ़ती बेरोज़गारी, मात्र 47.53 प्रतिशत साक्षरता, भूमि विवाद, अपेक्षाकृत कम प्रति व्यक्ति आय, बुनियादी सुविधाओं का अभाव आदि ऐसे कई सामाजिक-आर्थिक कारण हैं जिनसे यहाँ अपराध की घटनाएँ बढ़ती रही हैं। अपराधमुक्त राज्य एक आदर्श स्थिति की कल्पना है, इसलिए सरकारें इस दिशा में बढ़ने का प्रयास करती हैं। उनका कामकाज सबसे पहले इसी पैमाने पर नापा जाता है। अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस की अच्छी व्यवस्था के साथ-साथ त्वरित न्याय देने वाली प्रणाली ज़रूरी होती है, मगर दु:खद स्थिति यह है कि आज से तीन वर्ष पूर्व तक पूर्ववर्ती सरकारों के द्वारा न तो पुलिस की अच्छी व्यवस्था हो पाई और न ही त्वरित न्याय देने वाली कोई प्रणाली का इंतजाम हो सका जिसके दुष्परिणाम स्वरूप इस राज्य में विधि-व्यवस्था दिन-ब-दिन चरमराती गई और अपराधियों का बोलबाला बढ़ता गया। सच तो यह है कि अपराधियों का एक बड़ा तबका राजनीति और राजनेताओं का संरक्षण पाता रहा। यहाँ के लोगों का चैन छीन गया और लोग दहशत में जीने के लिए मजबूर रहे। उच्च एवं मध्य आय वर्ग के लोग तो महानगरों की ओर भागने लगे और आम आदमी तत्कालीन सरकार से मुक्ति के लिए छटपटाने लगे। प्रबुद्धजनों ने भी वैचारिक क्रांति के ज़रिए आम जन-मानस को आंदोलित करने का अथक प्रयास किया और धीरे-धीरे जनमत तैयार होने लगा।

वैचारिक क्रांति का यह कमाल देखिए, कि इस प्रदेश की जनता ने तत्कालीन सरकार को अपदस्थ करने का मन बना लिया और परिणामस्वरूप नीतीश कुमार के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार आज से तीन साल पूर्व वर्ष 2005 में यहाँ की सत्ता पर आसीन हो गई। सत्ता पर विराजमान होते ही इस सरकार ने दोनों मोर्चे यानी पुलिस की अच्छी व्यवस्था और व्यवस्थागत ख़ामियों को दूर करने के लिए ठोस काम किए। पुलिस का काम बेहतर हाथों में सौंपना, सैप का गठन, राजनीतिक हस्तक्षेप की प्रवृत्ति पर अँकुश, जवानों का मनोबल ऊँचा रखने वाले उपाय, नई भर्ती की पहल आदि कई काम पिछले तीन साल में हुए हैं। दूसरी तरफ़ त्वरित न्याय (Speedy Trial) पर ज़ोर दिया गया जिसका परिणाम अच्छा निकला।

पुलिस मुख्यालय से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार जनवरी 2009 में 1387 लोगों को विभिन्न अपराधों में सज़ा सुनाई गई। इनमें 195 लोगों को आजीवन कारावास की सजा हुई। अकेले पटना जिले में 115 लोगों को सजा सुनाई गई। इसी प्रकार नालंदा में 107, भोजपुर में 87, सीवान में 81 और मुजफ्फरपुर में 80 लोगों को विभिन्न अपराधों में सजग हुई।

वर्ष 2006 से अबतक त्वरित न्याय के तहत 30,086 लोग सज़ा दी गईं। इनमें 83 लोगों को मृत्युदंड और 6059 लोगों को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई। इस मुद्दे की गंभीरता इसी बात से समझी जा सकती है कि स्वयं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के स्तर से न्याय के आँकड़ों की समीक्षा (Monitoring) होती रही है। कोर्ट में पुलिस अधिकारियों की गवाही के लिए मुख्यालय ने अलग से व्यवस्था की है। कंप्यूटर में सभी अधिकारियों का पूरा ब्योरा उपलब्ध है। जिनकी ज़रूरत गवाही के लिए होती है उनका पता लगाने में परेशानी नहीं होती। दोषी को जल्द से जल्द सज़ा दिलाने के ऐसे प्रयास इतने व्यापक स्तर पर पहले कभी नहीं होते दिखे थे, इसीलिए अपराध करना उन दिनों आसान हुआ करता था। अब ऐसा नहीं है। यदि यही जज़्बा मौजूदा सरकार का बना रहा, तो फ़िज़ा ठहर सकती है, मगर इसी तरह का प्रयास भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भी ज़रूरी है, क्योंकि भ्रष्टाचार रोकने वाला ही भ्रष्टाचार के दलदल में आज फँस रहा है।

पिछले 10 फ़रवरी 2009 को बिहार के बेगुसराय जिले के बरबीघी गाँव में पहली बार अपने मंत्रिपरिषद् की बैठक कर इतिहास बनाने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिस प्रकार लोकशाही की अनुकरणीय नज़ीर पेश की है उससे ऐसा लगता है कि वह जल्द ही बिना वक़्त गंवाए नौकरशाहों पर अंकुश लगाकर भ्रष्टाचार मिटाने की ओर अग्रसर होंगे, ताकि जनतंत्र में लोगों की आस्था और गहरी हो सके। कारण कि इस तंत्र के प्रति लोगों का भरोसा इस हद तक भंग हो चुका है कि बिना पैरवी या रिश्वत के राशन कार्ड बनवाने से लेकर ट्रांसफार्मर बदलवाने तक के साधारण काम होन किसी को सुगम नहीं लगते। भ्रष्टाचार में इज़ाफ़ा ऐसे ही नहीं हुआ है। हालांकि यह भी सच है कि मौजूदा सरकार के सत्ता संभालने के बाद घूसखोरी की व्यापक घर-पकड़ और उनके लिए त्वरित दंड का रास्ता साफ़ करने में काफ़ी प्रयास हुए हैं, किंतु यह केवल इस रोग का इलाज हो सकता है, कारणों का निवारण तो लंबी थिरेपी के ज़रिए ही संभव है। यह थिरेपी शासन-व्यवस्था में गुणवत्ता बढ़ाने की हो सकती है।

बिहार के वर्तमान मुख्य मंत्री के नाते नीतीश कुमार ने इन प्रवृत्तियों पर अँकुश लगाकर सत्ता को वस्तुत: लोकोन्मुखी बनाने के लिए अपनी सरकार के चौथे साल में एक साथ कई प्रयोग शुरू किए हैं। विगत 19 जनवरी 2009 से शुरू हुई चार चरणोंवाली उनकी गाँवों की विकास यात्रा, गाँव में रात्रि विश्राम, गाँव में ऐतिहासिक मंत्रिपरिषद की बैठक, ग्रामीणों के बीच सहज उपलब्ध होना और जनता के दरबार में शीर्ष नौकरशाही की पेशी जैसी पहल भरोसेमंद चेहरा गढ़ सकती है। इस संदर्भ में इसकी व्याख्या करते हुए नीतीश कुमार स्वयं कहते हैं, 'राजसत्ता पर लोकसत्ता का नियंत्रण ही विकास यात्रा का मक़सद है। यही जेपी आंदोलन का लक्ष्य था। हम उसी आंदोलन की उपज हैं, इसलिए चाहते हैं कि सरकार के महत्त्वपूर्ण निर्णय गाँव के खेत, खलिहान और चौपाल में बैठकर लिए जाएँ, दूसरी तरफ़ विपक्षी पार्टियाँ इस विकास यात्रा को पिकनिक की संज्ञा देती हैं। इसका जबाव तो आसन्न लोकसभा अथवा विधान सभा चुनावों में जनता ही बेहतर तरीके से दे सकेगी।

❋❋❋

Arvind Kumar **Rajiv Kumar**

RAJIV PAPER MART

Deals in :

All Kinds of White Printing Paper,

Art Paper

&

L.W.C. etc.

S-447, School Block-II, Shakarpur, Delhi-110092

9968284416, 98102508349891570532, 9871460840

Ph. : (O) 55794961, (R) z22482036

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैटाने की सुविधा।
2. ... ाव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोव (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

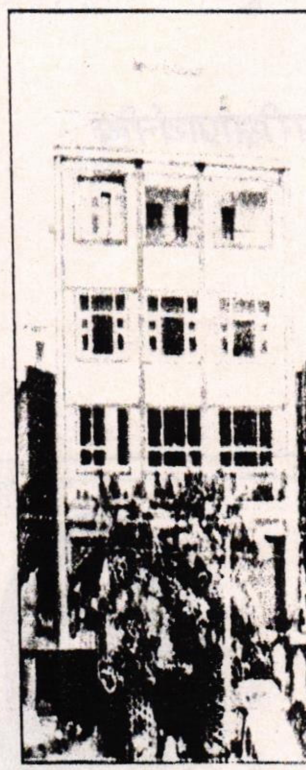

Dr. Vishvendra Kumar Sinha

M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, बोकारो (झारखंड)

दूरभाष : ६५७६५, फैक्स : ६५१२३

परीक्षाप्रार्थनीय

–सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रुपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज, पटना–८००००४

दूरभाष : २६६२८३७

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

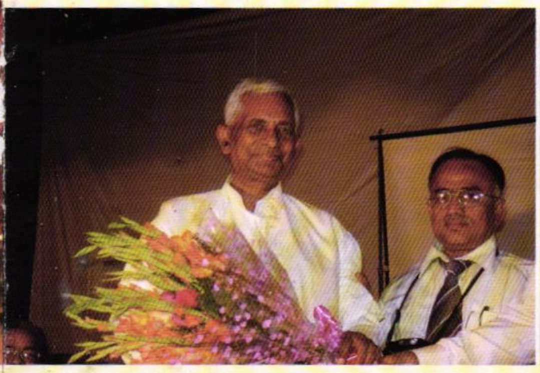

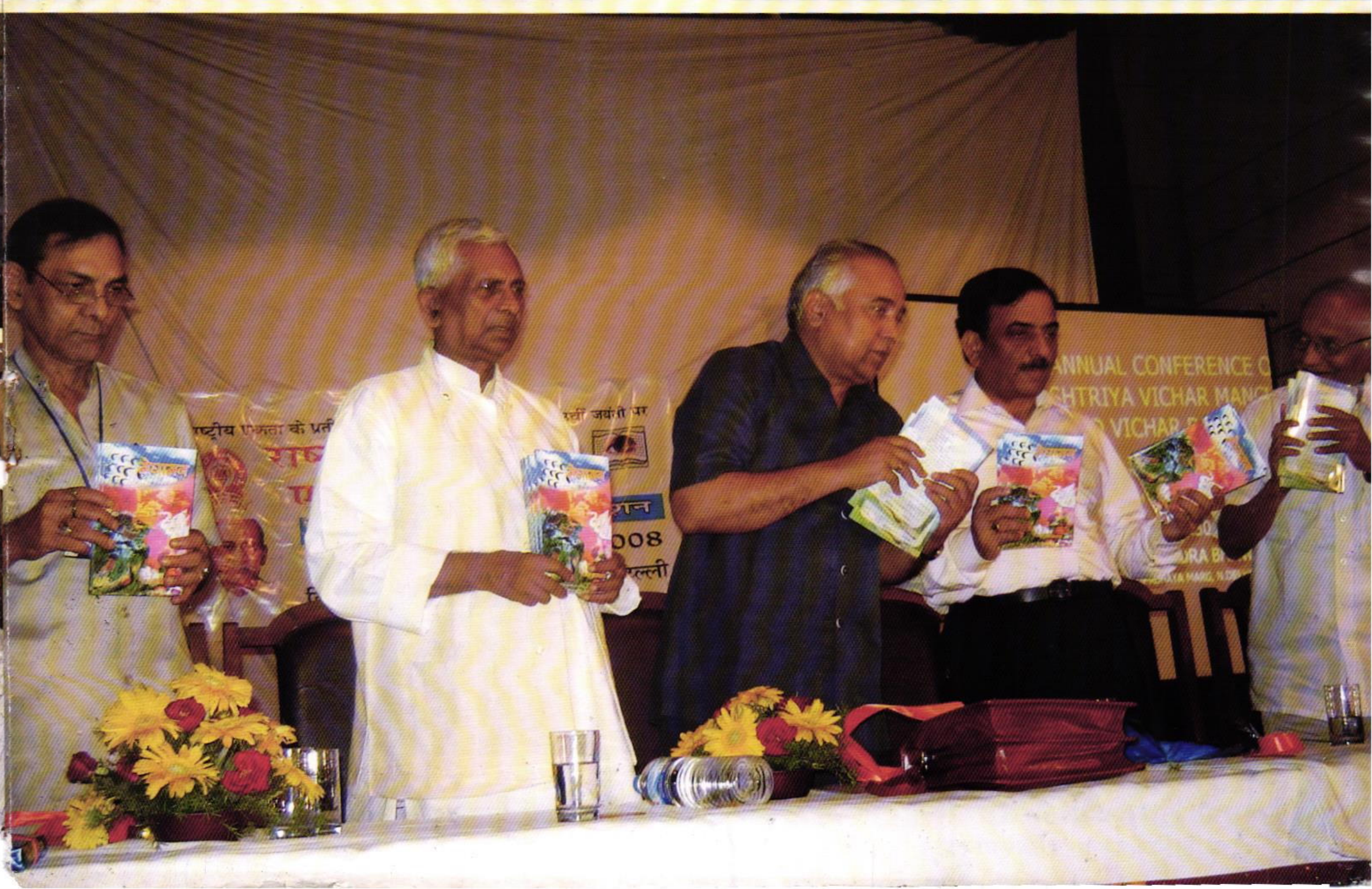
ANNUAL CONFERENCE O
SHTRIYA VICHAR MANC
2008

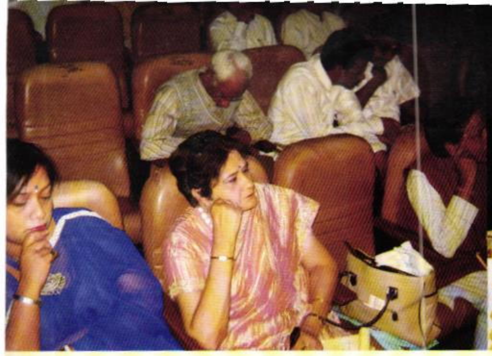

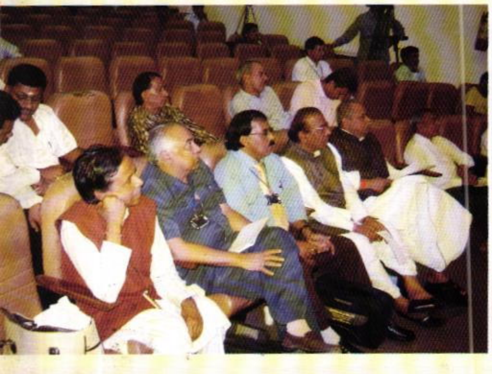

प्रकाशक, मुद्रक स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92. से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनटरकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली से मुद्रित। संपादक सिद्धेश्वर